मेरा जीवन और क़ुरआन

डॉ॰ सैयद शाहिद अली

विषय सूची

विषय **पृष्ठ**

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

दयावान और कृपाशील ख़ुदा के नाम से

आमुख

क़ुरआन

क़ुरआन एक ऐसी किताब है जो ख़ुदा की ओर से मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए भेजी गई है। पवित्र क़ुरआन मनुष्य को सत्य-असत्य का अन्तर बताता है। यह मनुष्य को बुराइयों से पाक होने का तरीक़ा बताता है। यह मनुष्य को दुनिया और आख़िरत में अमन से रहने का मार्ग बताता है, इत्यादि।

> ''रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन (पहले-पहल) उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अन्तर के स्पष्ट प्रमाणों के साथ।'' (क़ुरआन, 2:185)

> ''ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश और जो कुछ सीनों में (रोग) है, उसके लिए रोगमुक्ति और मोमिनों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है।'' (क़ुरआन, 10:57)

क़ुरआन किसी एक विशेष वर्ग के लिए नहीं है, बल्कि पूरी मानव-जाति के लिए है :

''यह (क़ुरआन) तो सारे संसार के लिए बस एक अनुस्मरण है।''

(क़ुरआन, 12:104)

क़ुरआन सभी इनसानों के लिए है, किन्तु इससे केवल उन लोगों को मार्गदर्शन मिल सकता है, जो इसमें विश्वास रखते हैं और यह मानते हैं कि यह उनके रब की ओर से है। ये लोग ख़ुदा से डरनेवाले भी होते हैं :

> ''यह (क़ुरआन) लोगों के लिए सूझ के प्रकाशों का पुंज है और मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।''
> (क़ुरआन, 45:20)

क़ुरआन सम्पूर्ण रूप से सुरक्षित है, क्योंकि इसकी सुरक्षा का दायित्व स्वयं ख़ुदा ने लिया है। क़ुरआन जैसा नाज़िल (अवतरित) हुआ था वैसा ही आज भी विद्यमान है :

"निस्सन्देह यह अनुस्मरण (क़ुरआन) हम (अल्लाह) ने अवतरित किया है और निस्संदेह हम स्वयं इसके रक्षक हैं।"

(क़ुरआन, 15:9)

क़ुरआन को हर व्यक्ति समझ सकता है। क़ुरआन का समझना कठिन नहीं, बल्कि बहुत सरल है :

"और हम (ख़ुदा) ने क़ुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला?"

(क़ुरआन, 54:17, 22, 32, 40)

क़ुरआन का विषय मनुष्य है। वह मनुष्य को उसकी सफलता और असफलता के बारे में बताता है। वह मनुष्य के मूल प्रश्नों का उत्तर देता है। जैसे— मनुष्य कहाँ से आया? उसे कहाँ जाना है? उसके जीवन का उद्देश्य क्या है? अगर कोई उद्देश्य है तो उसे प्राप्त करने का मार्ग क्या है? उसका जीना और मरना क्यों है? मृत्यु के बाद क्या होगा? क्या उसका कोई स्रष्टा है? अगर है तो कैसा है और वह मनुष्य से क्या चाहता है? इत्यादि।

"लो हम (ख़ुदा) ने तुम्हारी ओर एक किताब (क़ुरआन) अवतरित कर दी है, जिसमें तुम्हारे लिए (तुम्हारी वास्तविकता की) याददिहानी है। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?"

(क़ुरआन, 21:10)

क़ुरआन का उद्देश्य मनुष्य को बुराई व नाकामी के अंधेरे से निकालकर अच्छाई व कामयाबी के उजाले की ओर ले जाना है :

"यह (क़ुरआन) एक किताब है जिसे हम (ख़ुदा) ने तुम्हारी (मुहम्मद सल्ल० की) ओर अवतरित किया है, ताकि तुम मनुष्यों को अंधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले आओ, उनके रब की अनुमति से प्रभुत्वशाली प्रशंस्य सत्ता, उस ख़ुदा के मार्ग की

और जिसका वह सब है जो आकाशों में है और जो कुछ धरती में है...।'' (क़ुरआन, 14:1-2)

क़ुरआन मनुष्य को दुनिया व आख़िरत में कामयाबी का रास्ता बताता है। और कामयाबी का वह रास्ता यह है कि मनुष्य ख़ुदा और रसूल का सम्पूर्ण आज्ञापालन करे :

''और जो कोई (व्यक्ति) ख़ुदा और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे, और ख़ुदा से डरे, और उसकी सीमाओं का ख़याल रखे, तो ऐसे ही लोग सफल हैं।'' (क़ुरआन, 24:52)

क़ुरआन की शिक्षाओं के अनुसार अच्छे कार्य करके, मनुष्य को इस जीवन और मरने के बाद वाले जीवन में सुख-शांति प्राप्त होती है :

''जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे, उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।'' (क़ुरआन, 16:97)

क़ुरआन का मिलना मनुष्य के लिए निस्सन्देह एक बड़े सौभाग्य की बात है। क्योंकि क़ुरआन मनुष्य को मरने के बाद वाले, हमेशा के जीवन में, असफलता से बचने का मार्ग बताता है :

''(ऐ पैग़म्बर, मनुष्यों से) कह दो! यह (क़ुरआन) ख़ुदा के अनुग्रह और उसकी दया से है, अतः इसपर उन्हें प्रसन्न होना चाहिए। यह उन सब चीज़ों से उत्तम है, जिनको वे इकट्ठा करने में लगे हुए हैं।'' (क़ुरआन, 10:58)

क़ुरआन सरल अरबी भाषा में अवतरित हुआ है। क़ुरआन सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए किताबे-हिदायत (The Book of Guidance) है।

क़ुरआन को दो उद्देश्यों से पढ़ा जाता है। एक ख़ुदा की हिदायत (मार्गदर्शन) को समझने के लिए और दूसरे उसके अनुसार कार्य करने तथा इस्लामी क़ानून बनाने के लिए।

क़ुरआन को पढ़ने का मुख्य उद्देश्य ख़ुदा के संदेश को समझकर उसपर अमल करना है। इसलिए जो व्यक्ति अरबी भाषा नहीं जानता, वह क़ुरआन के अनुवाद को पढ़कर उसे समझ सकता है। क़ुरआन से क़ानून बनाना एक विशेष कार्य है, जिसके लिए अरबी भाषा, क़ुरआन व हदीस का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है। और यह काम एक बड़ा आलिम (विद्वान) ही कर सकता है।

क़ुरआन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बात यह है कि इंसान अधिक से अधिक क़ुरआन के सम्पर्क में रहे, ताकि पूरा जीवन उसके अनुसार गुज़ारा जा सके।

प्रस्तुत पुस्तक को लिखने का मुख्य उद्देश्य ख़ुदा के संदेश ''क़ुरआन'' के महत्व को बताना है। क़ुरआन मनुष्य के जीवन के प्रत्येक पहलू में रहनुमाई करता है। क़ुरआन का मार्गदर्शन ही वास्तविक मार्गदर्शन है। क़ुरआन को सिर्फ़ पढ़ लेना और उसे समझकर उसपर अमल करने की कोशिश न करना, वास्तव में क़ुरआन की नाक़द्री है।

इस किताब में क़ुरआन से सम्बन्धित मनुष्य के सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं पेश किए गए हैं, केवल नमूने के कुछ ही प्रश्नों को लिखा गया है, ताकि एक झलक मिल सके और इसी प्रकार जीवन के बारे में दूसरे प्रश्नों के उत्तर भी मालूम किए जा सकें।

डॉ० सैयद शाहिद अली
रीडर
डिपार्टमेंट ऑफ़ इस्लामिक स्टडीज़
जामिआ मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली-25

मेरा जीवन और क़ुरआन

❑ मुझपर विभिन्न मुसीबतें क्यों आती हैं?

"जो मुसीबत तुम्हें पहुँची वह तो तुम्हारे अपने हाथों की कमाई से पहुँची और बहुत कुछ तो वह (ख़ुदा) माफ़ कर देता है।" (क़ुरआन, 42:30)

"जो मुसीबत भी धरती में आती है और तुम्हारे अपने ऊपर, वह अनिवार्यतः एक किताब में अंकित है, इससे पहले कि हम उसे अस्तित्व में लाएँ—निश्चय ही यह ख़ुदा के लिए आसान है—(यह बात तुम्हें इसलिए बता दी गई) ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे और न उसपर फूल जाओ जो उसने तुम्हें प्रदान की हो। ख़ुदा किसी इतरानेवाले, बड़ाई जतानेवाले को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 57:22-23)

"कह दो : हमें कुछ भी पेश नहीं आ सकता सिवाय उसके जो ख़ुदा ने लिख दिया है। वही हमारा स्वामी है। और ईमानवालों को ख़ुदा ही पर भरोसा करना चाहिए।" (क़ुरआन, 9:51)

❑ मुझपर जब कोई मुसीबत आए तो मुझे क्या सोचना और कहना चाहिए?

"जो लोग उस समय, जबकि उनपर कोई मुसीबत आती है, कहते हैं : 'निस्संदेह हम ख़ुदा ही के हैं और हम उसी की ओर लौटनेवाले हैं'। यही लोग हैं जिनपर उनके रब की विशेष कृपाएँ हैं और दयालुता भी; और यही लोग हैं जो सीधे मार्ग पर हैं।" (क़ुरआन, 2:156)

❑ मुझपर जब कोई मुसीबत आती है, क्या वह मेरी बर्दाश्त से अधिक होती है?

"ख़ुदा किसी जीव पर बस उसकी सामर्थ्य और समाई के अनुसार ही दायित्व का भार डालता है।" (क़ुरआन, 2:286)

❑ मुझपर जब कोई मुसीबत आए तो मैं क्या करूँ?

"नमाज़ का आयोजन कर और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोक और जो मुसीबत भी तुझपर पड़े उसपर धैर्य से काम ले। निस्संदेह ये उन कामों में से हैं जो अनिवार्य और दृढ़ संकल्प के काम हैं।" (क़ुरआन, 31:17)

❑ मुझे मुसीबत में क्या दुआ माँगनी चाहिए?

"हमारे रब! यदि हम भूलें या चूक जाएँ तो हमें न पकड़ना। हमारे रब! और हमपर ऐसा बोझ न डाल जैसा तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था। हमारे रब! और हमसे वह बोझ न उठवा, जिसकी हमें शक्ति नहीं। और हमें क्षमा कर और हमें (अपनी कृपाओं से) ढाँक ले, और हमपर दया कर। तू ही हमारा संरक्षक है, अतएव इनकार करनेवालों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।" (क़ुरआन, 2:286)

❑ मैं मुसीबत में ख़ुदा से किस चीज़ के साथ मदद मागूँ?

"धैर्य और नमाज़ से मदद लो, और निस्संदेह यह (नमाज़) बहुत कठिन है, किन्तु उन लोगों के लिए नहीं जो डरनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 2:45)

"ऐ ईमान लानेवालो! धैर्य और नमाज़ से मदद प्राप्त करो। निस्संदेह ख़ुदा उन लोगों के साथ है जो धैर्य और दृढ़ता से काम लेते हैं।"

(क़ुरआन, 2:153)

❑ मुझे आराम और तकलीफ़ कब पहुँचती है?

"वास्तव में तुम्हारे प्रयास विभिन्न प्रकार के हैं। तो जिस किसी ने (ईश मार्ग में) धन दिया और (ख़ुदा की अवज्ञा से) परहेज़ किया, और अच्छी चीज़ की पुष्टि की, हम उसे सहज मार्ग के लिए सुविधा देंगे। रहा वह व्यक्ति जिसने कंजूसी की और (ख़ुदा से) बेपरवाही बरती और अच्छी चीज़ (सत्य) को झुठला दिया हम उसे कठिन मार्ग के लिए सुविधा देंगे।"

(क़ुरआन, 92:4-10)

❑ त्रे कौन-से काम हैं जिनको करने से ख़ुदा मुझे नापसन्द करता है?

"...ख़ुदा ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता, जो इतराता और डींगें

मारता है।" (क़ुरआन, 4:36)

"और लोगों से अपना रुख़ न फेर और न धरती में इतरा कर चल। निश्चय ही अल्लाह किसी अहंकारी, डींग मारनेवाले को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 31:18)

"...ख़ुदा बिगाड़ फैलानेवालों को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 5:64)

"निस्संदेह ख़ुदा ज़्यादती व अत्याचार करनेवालों को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 2:190)

"निश्चय ही वह (सत्य का) इनकार करनेवालों को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 30:45)

"निस्संदेह ख़ुदा किसी विश्वासघाती, अकृतज्ञ को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 22:38)

"तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे और न उसपर फूल जाओ जो उसने तुम्हें प्रदान की हो। ख़ुदा किसी इतरानेवाले, बड़ाई जतानेवाले को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 57:23)

"बुराई का बदला वैसी ही बुराई है किन्तु जो क्षमा कर दे और सुधार करे तो उसका बदला ख़ुदा के ज़िम्मे है। निश्चय ही वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 42:40)

"और तुम उन लोगों की ओर से न झगड़ो जो स्वयं अपनों के साथ विश्वासघात करते हैं। ख़ुदा को ऐसा व्यक्ति प्रिय नहीं है जो विश्वासघाती, हक़ मारनेवाला हो।" (क़ुरआन, 4:107)

"अपने रब को गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके पुकारो। निश्चय ही वह हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 7:55)

"ऐ ईमानवालो! जो अच्छी पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, उन्हें हराम न कर लो और हद से आगे न बढ़ो। निश्चय ही ख़ुदा को वे लोग प्रिय नहीं हैं जो हद से आगे बढ़ते हैं।" (क़ुरआन, 5:87)

"और यदि तुम्हें किसी क़ौम से विश्वासघात की आशंका हो, तो तुम भी उसी प्रकार ऐसे लोगों के साथ हुई संधि को खुल्लम-खुल्ला उनके आगे फेंक दो। निश्चय ही ख़ुदा को विश्वासघात करनेवाले पसन्द नहीं।"

(क़ुरआन, 8:58)

"जब उससे (क़ारून से) उसकी क़ौम के लोगों ने कहा : इतरा मत, ख़ुदा इतरानेवालों को पसन्द नहीं करता।... और धरती में बिगाड़ मत चाह। निश्चय ही ख़ुदा बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता।"

(क़ुरआन, 28:76-77)

"रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें वह उनका पूरा-पूरा बदला देगा। ख़ुदा अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।"

(क़ुरआन, 3:57)

"ख़ुदा ब्याज को घटाता और मिटाता है और सदक़ों को बढ़ाता है। और ख़ुदा किसी अकृतज्ञ, हक़ मारनेवाले को पसन्द नहीं करता।"

(क़ुरआन, 2:276)

"अत्याचारी ख़ुदा को प्रिय नहीं।" (क़ुरआन, 3:140)

"ख़ुदा ने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें से खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो। निश्चय ही वह तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।"(क़ुरआन, 6:142)

"निश्चय ही ख़ुदा भली-भाँति जानता है, जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं। उसे ऐसे लोग प्रिय नहीं, जो अपने आपको बड़ा समझते हों।" (क़ुरआन, 16:23)

❑ वे कौन-से काम हैं जिनको करने से ख़ुदा मुझे पसन्द करता है?

"और ख़ुदा के मार्ग में ख़र्च करो और अपने ही हाथों से अपने-आपको तबाही में न डालो, और अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाओ। निस्सन्देह ख़ुदा अच्छे से अच्छा काम करनेवालों को पसन्द करता है।"

(क़ुरआन, 2:195)

"निश्चय ही ख़ुदा को वे लोग प्रिय हैं जो उत्तमकर्मी हैं।"

(क़ुरआन, 5:13)

" निस्सन्देह ख़ुदा बहुत तौबा करनेवालों को पसन्द करता है और वह उन्हें पसन्द करता है जो स्वच्छता को पसन्द करते हैं।"

(क़ुरआन, 2:222)

"मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम्हारे संकल्प किसी सम्मति पर सुदृढ़ हो जाएँ तो ख़ुदा पर भरोसा करो। निस्संदेह ख़ुदा को वे लोग प्रिय हैं जो उसपर भरोसा करते हैं।" (क़ुरआन, 3:159)

"यदि मोमिनों में से दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि उनमें से एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे, तो जो गिरोह ज़्यादती कर रहा हो उससे लड़ो, यहाँ कि वह ख़ुदा के आदेश की ओर पलट आए। फिर यदि वह पलट आए तो उनके बीच न्याय के साथ सुलह करा दो, और इनसाफ़ करो। निश्चय ही ख़ुदा इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है।" (क़ुरआन, 49:9)

"यदि फ़ैसला करो तो उनके बीच इनसाफ़ के साथ फ़ैसला करो। निश्चय ही ख़ुदा इनसाफ़ करनेवालों से प्रेम करता है।" (क़ुरआन, 5:42)

"सिवाय उन मुशरिकों के जिनसे तुमने संधि-समझौते किए,फिर उन्होंने तुम्हारे साथ अपने वचन को पूर्ण करने में कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता ही की, तो उनके साथ उनकी संधि को उन लोगों के निर्धारित समय तक पूरा करो। निश्चय ही ख़ुदा को डर रखनेवाले प्रिय हैं।" (क़ुरआन, 9:4)

"कितने ही नबी ऐसे गुज़रे हैं जिनके साथ होकर बहुत-से ईशभक्तों ने युद्ध किया, तो ख़ुदा के मार्ग में जो मुसीबत उन्हें पहुँची उससे वे न तो हताश हुए और न उन्होंने कोई कमज़ोरी दिखाई और न ऐसा हुआ कि वे दबे हों। और ख़ुदा दृढ़तापूर्वक जमे रहनेवालों से प्रेम करता है।" (क़ुरआन, 3:146)

"वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—और ख़ुदा को

भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं।''(क़ुरआन, 3:134)

''...वह मस्जिद जिसकी आधारशिला पहले दिन ही से ईशपरायणता पर रखी गई है, वह इसकी ज़्यादा हक़दार है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग पाए जाते हैं, जो अच्छी तरह स्वच्छ रहना पसन्द करते हैं, और ख़ुदा भी पाक-साफ़ रहनेवालों को पसन्द करता है।'' (क़ुरआन, 9:108)

''क्यों नहीं, जो कोई अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा और डर रखेगा, तो ख़ुदा भी डर रखनेवालों से प्रेम करता है।'' (क़ुरआन, 3:76)

''अत: ख़ुदा ने उन्हें दुनिया का भी बदला दिया और आख़िरत का अच्छा बदला भी। और सत्कर्मी लोगों से ख़ुदा प्रेम करता है।''

(क़ुरआन, 3:148)

❑ क्या ख़ुदा मेरा इम्तिहान लेता है?

''और हम (ख़ुदा) अवश्य ही कुछ भय से, और कुछ भूख से और कुछ जान-माल और पैदावार की कमी से तुम्हारा इम्तिहान लेंगे। और धैर्य से काम लेनेवालों को शुभ-सूचना दे दो।'' (क़ुरआन, 2:155)

''जिसने निश्चित किया मृत्यु और जीवन ताकि तुम्हारी परीक्षा करें कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।'' (क़ुरआन, 67:2)

❑ मुझे अपने जीवन में कितना कष्ट पहुँचता है?

''किसी पर बस उसकी अपनी समाई भर ही ज़िम्मेदारी है।''

(क़ुरआन, 2:233)

❑ मैं मनोरथ को कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?

''और जो कोई ख़ुदा और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे और ख़ुदा से डरे और उसकी सीमाओं का ख़याल रखे, तो ऐसे ही लोग सफल हैं।'' (क़ुरआन, 24:52)

''सफल हो गया वह जिसने अपने आप को निखार लिया, और अपने रब के नाम का स्मरण किया, अत: नमाज़ अदा की।''

(क़ुरआन, 87:14-15)

"सफल हो गया वह जिसने उसे (अर्थात् अपनी आत्मा और व्यक्तित्व को) विकसित किया। और असफल हुआ वह जिसने उसे दबा दिया।"
(क़ुरआन, 91:9-10)

❑ मुझे लोगों से कैसा व्यवहार रखना चाहिए?

"किन्तु जिसने धैर्य से काम लिया और क्षमा कर दिया तो निश्चय ही वह उन कामों में से है जो (सफलता के लिए) आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।"
(क़ुरआन, 42:43)

"क्षमा की नीति अपनाओ और भलाई का हुक्म देते रहो।"
(क़ुरआन, 7:199)

"हमने तो आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है, सोद्देश्य पैदा किया है, और वह क़ियामत की घड़ी तो अनिवार्यत: आनेवाली है। अत: तुम भली प्रकार दरगुज़र (क्षमा) से काम लो।" (क़ुरआन, 15:85)

"(तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो ख़ुदा की ओर से बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म हो रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो सब तुम्हारे पास से छँट जाते। अत: उन्हें क्षमा कर दो और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो।"
(क़ुरआन, 3:159)

"बहुत-से किताबवाले अपने भीतर की ईर्ष्या से चाहते हैं कि किसी प्रकार वे तुम्हारे ईमान लाने के बाद फेरकर तुम्हें इंकार कर देनेवाला बना दें, यद्यपि सत्य उनपर प्रकट हो चुका है, तो तुम दरगुज़र (क्षमा) से काम लो और जाने दो यहाँ तक कि ख़ुदा अपना फ़ैसला लागू कर दे। निस्संदेह ख़ुदा को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।" (क़ुरआन, 2:109)

"न उनके आचरण परस्पर समान होते हैं और न बुरे आचरण। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था, (ऐसा हो जाएगा) जैसे वह घनिष्ट मित्र है। किन्तु यह चीज़ केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जो धैर्य से काम लेते हैं, और यह चीज़ केवल उसको प्राप्त

होती है जो बड़ा भाग्यशाली होता है।'' (क़ुरआन, 41:34-35)

❑ क्या मैं वह कह सकता हूँ, जो मैं न करूँ?

''ऐ ईमान लानेवालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं? ख़ुदा के यहाँ यह अत्यन्त अप्रिय बात है कि तुम वह बात कहो, जो करो नहीं।'' (क़ुरआन, 61:2-3)

''क्या तुम लोगों को तो नेकी और भलाई का उपदेश देते हो और अपने आपको भूल जाते हो, हालाँकि तुम किताब भी पढ़ते हो? फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?'' (क़ुरआन, 2:44)

❑ मेरी बातचीत कैसी होनी चाहिए?

''मेरे बन्दों से कह दो कि : बात वही कहें जो उत्तम हो। शैतान तो उनके बीच उकसाकर फ़साद डालता रहता है। निस्सन्देह शैतान मनुष्य का प्रत्यक्ष शत्रु है।'' (क़ुरआन, 17:53)

''और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो। तो तुम फिर गए, बस तुममें बचे थोड़े ही, और तुम उपेक्षा की नीति ही अपनाए रहे।'' (क़ुरआन, 2:83)

''और अपने माल, जिसे ख़ुदा ने तुम्हारे लिए जीवनयापन का साधन बनाया है, बेसमझ लोगों को न दो। उन्हें उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उनसे भली बात कहो।'' (क़ुरआन, 4:5)

''तबाही है हर कचोके लगानेवाले, ऐब निकालनेवाले के लिए।'' (क़ुरआन, 104:1)

''और अपनी चाल में सहजता एवं सन्तुलन बनाए रख और अपनी आवाज़ धीमी रख। निस्सन्देह आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की होती है।'' (क़ुरआन, 31:19)

''ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा का डर रखो और बात कहो ठीक सधी हुई। वह तुम्हारे कर्मों को सँवार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा।'' (क़ुरआन, 33:70-71)

"दयावान प्रभु के (प्रिय) बन्दे वही हैं जो धरती पर विनम्रतापूर्वक चलते हैं और जब जाहिल उनके मुँह आएँ तो कह देते हैं : तुमको सलाम!"
(क़ुरआन, 25:63)

❑ मेरी चाल कैसी होनी चाहिए?

"दयावन प्रभु के (प्रिय बन्दे वही हैं जो धरती पर विनम्रतापूर्वक चलते हैं।"
(क़ुरआन, 25:63)

"और धरती में अकड़ कर न चलो, न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो और न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो। इनमें से प्रत्येक की बुराई तुम्हारे रब की दृष्टि में अप्रिय ही है।" (क़ुरआन, 17:37-38)

"और लोगों से अपना रुख़ न फेर और न धरती में इतरा कर चल। निश्चय ही ख़ुदा किसी अहंकारी, डींग मारनेवाले को पसन्द नहीं करता। और अपनी चाल में सहजता एवं सन्तुलन बनाए रख और अपनी आवाज़ धीमी रख।"
(क़ुरआन, 31:18-19)

❑ मेरा खान-पान कैसा होना चहिए?

"ऐ आदम की सन्तान! इबादत के प्रत्येक अवसर पर अपनी शोभा धारण करो, खाओ और पियो, परन्तु हद से आगे न बढ़ो। निश्चय ही, वह (ख़ुदा) हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 7:31)

❑ मैं सीधे रास्ते पर कैसे जमा रह सकता हूँ?

"जो कोई ख़ुदा को मज़बूती से पकड़ ले, वह सीधे मार्ग पर आ गया। ऐ ईमनावालो! ख़ुदा का डर रखो, जैसा कि उसका डर रखने का हक़ है। और तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो। और सब मिलकर ख़ुदा की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और विभेद में नं पड़ो।"
(क़ुरआन, 3:101-103)

❑ मुझे मरते समय कैसा होना चाहिए?

"ऐ ईमनावालो! ख़ुदा का डर रखो, जैसाकि उसका डर रखने का हक़ है। और तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी)

हो।" (क़ुरआन, 3:102)

❑ मुझे किस रास्ते पर चलना चाहिए?

"और यह (इस्लाम) तुम्हारे रब का रास्ता है, बिल्कुल सीधा।"
(क़ुरआन, 6:126)

❑ वह कौन-सा काम है जिसे करने से ख़ुदा मुझे याद रखता है?

"अतः तुम मुझे (ख़ुदा को) याद रखो, मैं भी तुम्हें याद रखूँगा। और मेरा आभार स्वीकार करते रहना, मेरे प्रति अकृतज्ञता न दिखलाना।"
(क़ुरआन, 2:152)

❑ मुझे किसका आदेश मानना चाहिए?

"ख़ुदा का डर रखो और आपस के सम्बन्धों को ठीक रखो। और ख़ुदा और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो, यदि तुम ईमानवाले हो।"
(क़ुरआन, 8:1)

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा की आज्ञा का पालन करो और रसूल का कहना मानो और उनका भी कहना मानो जो तुम में अधिकारी लोग हैं। फिर यदि तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा हो जाए तो उसे तुम ख़ुदा और रसूल की ओर लौटाओ, यदि तुम ख़ुदा और अंतिम दिन पर ईमान रखते हो। यही उत्तम है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।" (क़ुरआन, 4:59)

❑ मुझे कौन-से साहसवाले काम करने चाहिएँ?

"नमाज़ का आयोजन कर और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोक और जो मुसीबत भी तुझपर पड़े उसपर धैर्य से काम ले। निस्सन्देह ये उन कामों में से है जो अनिवार्य और दृढ़संकल्प के काम हैं।" (क़ुरआन, 31:17)

"धैर्य और नमाज़ से मदद लो, और निस्सन्देह यह (नमाज़) बहुत कठिन है, किन्तु उन लोगों के लिए नहीं जिनके दिल पिघले हुए हों।"
(क़ुरआन, 2:45)

"तुम्हारे माल और तुम्हारे प्राण में तुम्हारी परीक्षा होकर रहेगी और

तुम्हें उन लोगों से, जिन्हें तुमसे पहले किताब प्रदान की गई थी और उन लोगों से जिन्होंने शिर्क किया, बहुत-सी कष्टप्रद बातें सुननी पड़ेंगी। परन्तु यदि तुम जमे रहे और डर रखा, तो यह उन कर्मों में से है जो आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।''
(क़ुरआन, 3:186)

❑ मुझे अपने पूर्वजों का अनुसरण कब नहीं करना चाहिए?

''और जब उनसे कहा जाता है : ख़ुदा ने जो कुछ उतारा है उसका अनुसरण करो, तो कहते हैं : नहीं, बल्कि हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया। क्या उस दशा में भी जबकि उनके बाप-दादा कुछ भी बुद्धि से काम न लेते रहे हों और न सीधे मार्ग पर रहे हों?''
(क़ुरआन, 2:170)

''और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ की ओर आओ जो ख़ुदा ने अवतरित की है और रसूल की ओर, तो वे कहते हैं : हमारे लिए तो वही काफ़ी है जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। क्या यद्यपि उनके बाप-दादा कुछ भी न जानते रहे हों और न सीधे मार्ग पर रहे हों?''
(क़ुरआन, 47:21)

''जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरति हुआ है, उसपर चलो और उसे छोड़कर दूसरे संरक्षक मित्रों का अनुसरण न करो। तुम लोग नसीहत थोड़े ही मानते हो।''
(क़ुरआन, 7:3)

❑ वे कौन-से काम हैं जिनको करने से मुझे जन्नत मिल सकती है?

''और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार है जो डर रखते हैं। वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—और ख़ुदा को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं। और जिनका हाल यह है कि जब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, तो तत्काल ख़ुदा उन्हें याद आ जाता है और वे अपने गुनाहों की क्षमा

चाहने लगते हैं—और ख़ुदा के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते-बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते। उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का।" (क़ुरआन, 3:133-136)

"जो लोग ख़ुदा के साथ की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और अभिवचन को तोड़ते नहीं, और जो ऐसे हैं कि ख़ुदा ने जिसे जोड़ने का आदेश दिया है उसे जोड़ते हैं और अपने रब से डरते हैं और बुरे हिसाब का उन्हें डर लगा रहता है। और जिन लोगों ने अपने रब की चाह में धैर्य से काम लिया और नमाज़ क़ायम की और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खुले और छिपे ख़र्च किया, और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। वही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत के घर का अच्छा परिणाम है, अर्थात् सदैव रहने के बाग़ हैं जिनमें वे प्रवेश करेंगे और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियाँ और उनकी सन्तानों में से जो नेक होंगे वे भी, और हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास सलाम पहुँचाएँगे। (वे कहेंगे): तुमपर सलाम (सुख-शान्ति) है उसके बदले में जो तुमने धैर्य से काम लिया। अतः क्या ही अच्छा परिणाम है आख़िरत के घर का।" (क़ुरआन, 13:20-24)

"और जो कोई उसके (ख़ुदा के) पास मोमिन होकर आया और जिसने अच्छे कर्म किए होंगे तो ऐसे लोगों के लिए तो ऊँचे दर्जे हैं। अदन के बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। यह बदला है उसका जिसने स्वयं को विकसित किया।" (क़ुरआन, 20:75-76)

"जिन लोगों ने भलाई की उनकी इस दुनिया में भी अच्छी हालत है और आख़िरत का घर तो अच्छा है ही और क्या ही अच्छा घर है डर रखनेवालों का! — सदैव रहने के बाग़ जिनमें वे प्रवेश करेंगे, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनके लिए वहाँ वह सब कुछ संचित होगा, जो वे चाहें। ख़ुदा डर रखनेवालों को ऐसा ही प्रतिदान प्रदान करता है।"

(क़ुरआन, 16:30-31)

"यह (क़ुरआन) एक अनुस्मृति है। और निश्चय ही डर रखनेवालों के लिए अच्छा ठिकाना है। सदैव रहने के बाग़ हैं जिनके द्वार उनके लिए खुले होंगे। उनमें वे तकिया लगाए हुए होंगे वहाँ वे बहुत-से मेवे और पेय मँगवाते होंगे।" (क़ुरआन, 38:49-51)

❑ ख़ुदा मुझे किन बातों के करने का आदेश नहीं देता?

"और उनका हाल यह है कि जब वे लोग कोई अश्लील कर्म करते हैं तो कहते हैं कि : हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीक़े पर पाया है और ख़ुदा ही ने हमें इसका आदेश दिया है। कह दो : ख़ुदा कभी अश्लील बातों का आदेश नहीं दिया करता। क्या ख़ुदा पर थोपकर ऐसी बात कहते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं।" (क़ुरआन, 7:28)

❑ मुझे किसपर भरोसा करना चाहिए?

"और ईमानवालों को तो ख़ुदा ही पर भरोसा करना चाहिए।" (क़ुरआन, 3:122)

❑ मुझे किससे नहीं डरना चाहिए?

"वह तो शैतान है जो अपने मित्रों को डराता है। अतः तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझी से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो।" (क़ुरआन, 3:175)

❑ ख़ुदा मुझसे कैसा व्यवहार चाहता है?

"और याद करो जब इसराईल की सन्तान से हमने वचन लिया : ख़ुदा के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करोगे, और माँ-बाप के साथ और नातेदारों के साथ और अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करोगे, और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।" (क़ुरआन, 2:83)

❑ ख़ुदा मुझे कब सही रास्ता (मार्गदर्शन) नहीं दिखाता?

"ख़ुदा उन लोगों को कैसे मार्ग दिखाएगा, जिन्होंने अपने ईमान के पश्चात् अधर्म और इनकार की नीति अपनाई, जबकि वे स्वयं इस बात की गवाही दे चुके हैं कि यह रसूल सच्चा है और उनके पास स्पष्ट निशानियाँ भी

आ चुकी हैं? ख़ुदा अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाया करता।''
(क़ुरआन, 3:86)

''और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा : 'ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम मुझे क्यों दुख देते हो, हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ ख़ुदा का रसूल हूँ।' फिर जब उन्होंने टेढ़ अपनाई तो ख़ुदा ने भी उनके दिल टेढ़े कर दिए। ख़ुदा अवज्ञाकारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।'' (क़ुरआन, 61:5)

''क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम (काबा) के प्रबंध को उस व्यक्ति के काम के बराबर ठहरा लिया है, जो ख़ुदा और अंतिम दिन पर ईमान लाया और उसने ख़ुदा के मार्ग में संघर्ष किया? अल्लाह की दृष्टि में वे बराबर नहीं। और ख़ुदा अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।'' (क़ुरआन, 9:19)

''(आदर के महीनों का) हटाना तो बस कुफ़्र में एक वृद्धि है, जिससे इंकार करनेवाले गुमराही में पड़ते हैं। किसी वर्ष वे उसे हलाल (वैध) ठहरा लेते हैं और किसी वर्ष उसको हराम ठहरा लेते हैं, ताकि ख़ुदा के आदृत (महीनों) की संख्या पूरी कर लें, और इस प्रकार ख़ुदा के हराम किए हुए को वैध ठहरा लें। उनके अपने बुरे कर्म उनके लिए सुहावने हो गए हैं और ख़ुदा इंकार करनेवाले लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।'' (क़ुरआन, 9:37)

''जान रखो कि विशुद्ध धर्म ख़ुदा ही के लिए है। रहे वे लोग जिन्होंने उससे हटकर दूसरे समर्थक और संरक्षक बना रखे हैं (कहते हैं :) 'हम तो उनकी बन्दगी इसी लिए करते हैं कि वे हमें ख़ुदा का सामीप्य प्राप्त करा दें।' निश्चय ही ख़ुदा उनके बीच इस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे विभेद कर रहे हैं। ख़ुदा उसे मार्ग नहीं दिखाता जो झूठा और बड़ा अकृतज्ञ हो।''
(क़ुरआन, 39:3)

''फ़िरऔन के लोगों में से एक व्यक्ति ने, जो अपने ईमान को छिपा रहा था, कहा : 'क्या तुम एक ऐसे व्यक्ति को इसलिए मार डालोगे कि वह

कहता है कि मेरा रब ख़ुदा है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुले प्रमाण भी लेकर आया है? यदि वह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा। किन्तु यदि वह सच्चा है तो जिस चीज़ की वह तुम्हें धमकी दे रहा है, उससे कुछ न कुछ तो तुमपर पड़कर रहेगा। निश्चय ही ख़ुदा उसको मार्ग नहीं दिखाता तो मर्यादाहीन, बड़ा झूठा हो।" (क़ुरआन, 40:28)

❑ मुझे किन बातों पर ईमान रखना चाहिए?

"रसूल उसपर, जो कुछ उसके रब की ओर से उसकी ओर उतरा, ईमान लाया और ईमानवाले भी, प्रत्येक, ख़ुदा पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाया। (और उनका कहना यह है): 'हम उसके रसूलों में से किसी को दूसरे रसूलों से अलग नहीं करते।' और उसका कहना है : 'हमने सुना और आज्ञाकारी हुए। हमारे रब! हम तेरी क्षमा के इच्छुक हैं और तेरी ही ओर लौटना है।" (क़ुरआन, 2:285)

❑ मुझे किस दिन का डर रखना चाहिए?

"और उस दिन का डर रखो जबकि तुम ख़ुदा की ओर लौटोगे, फिर प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उसने कमाया पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनके साथ कदापि कोई अन्याय न होगा।" (क़ुरआन, 2:281)

❑ मुझे किन बातों में बहस न करनी चाहिए?

"ये तुम लोग हो कि उसके विषय में तो वाद-विवाद कर चुके जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान न था। अब उसके विषय में क्यों वाद-विवाद करते हो, जिसके विषय में तुम्हें कुछ भी ज्ञान नहीं? अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते।" (क़ुरआन, 3:66)

❑ मुझे किन चीज़ों पर सोचना चाहिए?

"जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे ख़ुदा को याद करते हैं और आकाशों और धरती की रचना में सोच-विचार करते हैं। (वे पुकार उठते हैं :) हमारे रब तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, अत: तू हमें आग की यातना से बचा ले।" (क़ुरआन, 3:191)

"कहो कि : धरती में चलो-फिरो और देखो कि उसने किस प्रकार पैदाइश का आरम्भ किया। फिर ख़ुदा पश्चात्वर्ती उठान उठाएगा। निश्चय ही ख़ुदा को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।" (क़ुरआन, 29:20)

"कहो : धरती में चल-फिरकर देखो कि झुठलानेवालों का क्या अंजाम हुआ।" (क़ुरआन, 6:11)

"अत: मनुष्य को चाहिए कि अपने भोजन को देखे।"
(क़ुरआन, 80:24)

❑ मेरे जीवन और मेरी मृत्यु का उद्देश्य क्या है?

"जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।" (क़ुरआन, 67:2)

❑ मुझे दुनिया व आख़िरत में अच्छा जीवन कैसे मिल सकता है?

"जिस किसी नें भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।" (क़ुरआन, 16:97)

❑ मेरा दामन कैसा होना चाहिए?

"अपने दामन को पाक रखो और गन्दगी से दूर ही रहो।"
(क़ुरआन, 74:4-5)

❑ दुनिया की चीज़ें क्या मेरे लिए हैं?

"वही तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन की सारी चीज़ें पैदा कीं, फिर आकाश की ओर रुख़ किया और ठीक तौर पर सात आकाश बनाए और वह हर चीज़ को जानता है।" (क़ुरआन, 2:29)

"कहो : 'ख़ुदा की शोभा को जिसे उसने अपने बन्दों के लिए उत्पन्न किया है और आजीविका की पवित्र, अच्छी चीज़ों को किसने हराम कर दिया?' कह दो : 'ये सांसारिक जीवन में भी ईमानवालों के लिए हैं, क़ियामत

के दिन तो ये केवल उन्हीं के लिए होंगी। इसी प्रकार हम आयतों को उन लोगों के लिए सविस्तार बयान करते हैं, जो जानना चाहें।''

(क़ुरआन, 7:32)

❑ मुझे अपना धन किसे न देना चाहिए?

''और अपने माल, जिसे ख़ुदा ने तुम्हारे लिए जीवन-यापन का साधन बनाया है, बेसमझ लोगों को न दो। उन्हें उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उनसे भली बात कहो।'' (क़ुरआन, 4:5)

❑ मैं किसी अच्छे काम का आरम्भ करता हूँ किन्तु कामयाब नहीं हो पाता, तो क्या मुझे अपने इस प्रयास का बदला मिलेगा?

''मनुष्य के लिए बस वही है जिसके लिए उसने प्रयास किया, और यह कि उसका प्रयास शीघ्र ही देखा जाएगा। फिर उसे पूरा बदला दिया जाएगा।''

(क़ुरआन, 53:39-41)

❑ मुझे किस बात पर हमेशा जमे रहना चाहिए?

''ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा के लिए गवाही देते हुए इंसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान हो या निर्धन (जिसके विरुद्ध तुम्हें गवाही देनी पड़े) ख़ुदा को उनसे (तुमसे कहीं बढ़कर) निकटता का सम्बन्ध है, तो तुम अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो, क्योंकि यदि तुम हेर-फेर करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा को उसकी ख़बर रहेगी।'' (क़ुरआन, 4:135)

❑ मैं अपने लेन-देन के मामलात कैसे करूँ?

''ऐ ईमान लानेवालो! जब किसी निश्चित अवधि के लिए आपस में ऋण (क़र्ज़) का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि कोई लिखनेवाला तुम्हारे बीच न्यायपूर्वक (दस्तावेज़) लिख दे। और लिखनेवाला लिखने से इंकार न करे, जिस प्रकार ख़ुदा ने उसे सिखाया है उसी प्रकार वह दूसरों के लिए लिखने के काम आए और बोलकर वह लिखाए जिसके ज़िम्मे हक़ की अदायगी हो। और उसे ख़ुदा का, जो उसका रब है, डर रखना

चाहिए और उसमें कोई कमी न करनी चाहिए। फिर यदि वह व्यक्ति जिसके ज़िम्मे हक़ की अदायगी हो, कम समझ या कमज़ोर हो, या वह बोलकर न लिखा सकता हो तो उसके संरक्षक को चाहिए कि न्यायपूर्वक बोलकर लिखा दे। और अपने पुरुषों में से दो गवाहों को गवाह बना लो और यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, जिन्हें तुम गवाह के लिए पसन्द करो, गवाह हो जाएँ। (दो स्त्रियाँ इसलिए रखी गई हैं) ताकि यदि एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे। और गवाहों को जब बुलाया जाए तो आने से इंकार न करें। मामला चाहे छोटा हो या बड़ा एक निर्धारित अवधि तक के लिए है, तो उसे लिखने में सुस्ती से काम न लो। यह ख़ुदा की दृष्टि में अधिक न्यायसंगत बात है और इससे गवाही भी अधिक ठीक रहती है। और इससे अधिक संभावना है कि तुम किसी संदेह में नहीं पड़ोगे। हाँ, यदि कोई सौदा नक़्द हो, जिसका लेन-देन तुम आपस में कर रहे हो, तो तुम्हारे उसके न लिखने में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। और जब आपस में क्रय-विक्रय का मामला करो तो उस समय भी गवाह कर लिया करो, और न किसी लिखनेवाले को हानि पहुँचाई जाए और न किसी गवाह को। और यदि ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए अवज्ञा की बात होगी। और ख़ुदा का डर रखो। ख़ुदा तुम्हें शिक्षा दे रहा है। और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। और यदि तुम सफ़र में हो और किसी लिखनेवाले को न पा सको, तो गिरवी रखकर मामला करो। फिर यदि तुममें से एक-दूसरे पर भरोसा करे, तो जिसपर भरोसा किया गया है उसे चाहिए कि वह यह सच कर दिखाए कि वह विश्वासपात्र है और ख़ुदा का, जो उसका रब है, डर रखे। और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाता है तो निश्चय ही उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो ख़ुदा उसे भली-भाँति जानता है।" (क़ुरआन, 2:282-283)

❑ मुझे किन लोगों से दोस्ती करनी चाहिए?

"तुम्हारे मित्र तो केवल ख़ुदा और उसका रसूल और वे ईमानवाले हैं जो विनम्रता के साथ नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं। अब जो कोई ख़ुदा और उसके रसूल और ईमानवालों को अपना मित्र बनाए, तो निश्चय

ही ख़ुदा का गिरोह प्रभावी होकर रहेगा।'' (क़ुरआन, 5:55-56)

❑ मुझे किन लोगों से दूर रहना चाहिए?

''छोड़ो उन लोगों को जिन्होंने अपने धर्म को खेल और तमाशा बना लिया है और उन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा है। और इसके द्वारा उन्हें नसीहत करते रहो कि कहीं ऐसा न हो कि कोई अपनी कमाई के कारण तबाही में पड़ जाए। ख़ुदा से हटकर कोई भी नहीं, जो उसका समर्थक और सिफ़ारिश करनेवाला हो सके और यदि वह छुटकारा पाने के लिए बदले के रूप में हर संभव चीज़ देने लगे, तो भी वह उससे न ली जाए। ऐसे ही लोग हैं, जो अपनी कमाई के कारण तबाही में पड़ गए। उनके लिए पीने को खौलता हुआ पानी है और दुखद यातना भी, क्योंकि वे इंकार करते रहे हैं।''

(क़ुरआन, 6:70)

❑ मैं किसके साथ अच्छा व्यवहार करूँ?

''ख़ुदा की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हो। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसंद नहीं करता, जो इतराता और डींगें मारता हो।'' (क़ुरआन, 4:36)

❑ मैं सही मार्ग पानेवाले लोगों में कैसे शामिल हो सकता हूँ?

''ख़ुदा की मस्जिदों का प्रबन्धक और उसे आबाद करनेवाला वही हो सकता है जो ख़ुदा और अंतिम दिन पर ईमान लाया, नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और ख़ुदा के सिवा किसी से न डरा। अत: ऐसे लोग, आशा है कि सीधा मार्ग पानेवाले होंगे।'' (क़ुरआन, 9:18)

❑ ख़ुदा मेरी परीक्षा कैसे लेता है?

''किन्तु मनुष्य का हाल यह है कि जब उसका रब इस प्रकार उसकी परीक्षा करता है कि उसे प्रतिष्ठा और नेमत प्रदान करता है, तो वह कहता है:

'मेरे रब ने मुझे प्रतिष्ठित किया।' किन्तु जब कभी वह उसकी परीक्षा इस प्रकार करता है कि उसकी रोज़ी नपी-तुली कर देता है, तो वह कहता है : 'मेरे रब ने मेरा अपमान किया।'' (क़ुरआन, 89:15-16)

❑ मुझपर ख़ुदा की दया कब होगी?

''और उस आग से बचो जो इंकार करनेवालों के लिए तैयार की गई है। और ख़ुदा और रसूल के आज्ञाकारी बनो, ताकि तुमपर दया की जाए।''
(क़ुरआन, 3:131-132)

❑ मुझे डर और दुख कब नहीं होगा?

''निस्सन्देह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी, उनके लिए उनका बदला उनके रब के पास है, और उन्हें न कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।''
(क़ुरआन, 2:277)

❑ ख़ुदा से डरनेवाला बनने पर मुझे क्या मिलेगा?

''कहो : 'क्या मैं तुम्हें इससे उत्तम चीज़ का पता दूँ।' जो लोग ख़ुदा का डर रखेंगे उनके लिए उनके रब के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। वहाँ पाक-साफ़ जोड़े होंगे और ख़ुदा की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और ख़ुदा अपने बन्दों पर नज़र रखता है।'' (क़ुरआन, 3:15)

❑ ख़ुदा का प्रिय बन्दा बनने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

''ये लोग धैर्य से काम लेनेवाले, सत्यवान और अत्यन्त आज्ञाकारी हैं, ये (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च करते और रात की अंतिम घड़ियों में क्षमा की प्रार्थनाएँ करते हैं।'' (क़ुरआन, 3:17)

❑ मुझे किससे डरना चाहिए?

''जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी की हुई भलाई और अपनी की हुई बुराई को सामने मौजूद पाएगा, वह कामना करेगा कि काश! उसके और उस दिन के बीच बहुत दूर का फ़ासला होता। और ख़ुदा तुम्हें अपना भय दिलाता

है, और वह अपने बन्दों के लिए अत्यन्त करुणामय है।''

(क़ुरआन, 3:30)

''ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा का डर रखो, जैसाकि उसका डर रखने का हक़ है। और तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम (ख़ुदा के) आज्ञाकारी हो।'' (क़ुरआन, 3:102)

❑ मैं ख़ुदा से मुहब्बत कैसे कर सकता हूँ?

''(ऐ पैग़म्बर) कह दो : यदि तुम ख़ुदा से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, ख़ुदा भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। ख़ुदा बड़ा क्षमाशील और दयावान् है।'' (क़ुरआन, 3:31)

❑ क्या मुझे विभिन्न पैग़म्बरों की शिक्षाओं में अन्तर करना चाहिए?

''कहो : हम तो ख़ुदा पर और उस चीज़ पर ईमान लाए जो हम पर उतरी है, और जो इबराहीम, इ़समाईल, इसहाक़ और याक़ूब और उनकी संतान पर उतरी उसपर भी, और जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान हुई (उसपर भी हम ईमान रखते हैं)। हम उनमें से किसी को उस सम्बन्ध से अलग नहीं करते जो उनके बीच पाया जाता है, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।'' (क़ुरआन, 3:84)

❑ क्या मुझे विभिन्न पैग़म्बरों में अन्तर करना चाहिए?

''कहो : हम ईमान लाए ख़ुदा पर और उस चीज़ पर जो हमारी ओर उतरी और जो इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी संतान की ओर उतरी, और जो मूसा और ईसा को मिली, और जो सभी नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान की गई। हम उनमें से किसी के बीच अन्तर नहीं करते और हम केवल उसी के आज्ञाकारी हैं।''

(क़ुरआन, 2:136)

❑ ख़ुदा मेरी तौबा कब स्वीकार नहीं करता?

''रहे वे लोग जिन्होंने अपने ईमान के पश्चात् इंकार किया और अपने इंकार में बढ़ते ही चले गए, उनकी तौबा कदापि स्वीकार न होगी। वास्तव में

वही पथभ्रष्ट हैं।" (क़ुरआन, 3:90)

❑ मैं ख़ुदा को कब याद करूँ?

"जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे अल्लाह को याद करते हैं और आकाशों और धरती की रचना में सोच-विचार करते हैं। (वे पुकार उठते हैं :) हमारे रब, तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, अतः तू हमें आग की यातना से बचा ले।" (क़ुरआन, 3:191)

❑ ख़ुदा मुझे किन कामों के करने का आदेश देता है?

"अतः तुम मुझे याद रखो, मैं भी तुम्हें याद रखूँगा। और मेरा आभार स्वीकार करते रहना, मेरे प्रति अकृतज्ञता न दिखलाना।" (क़ुरआन, 2:152)

"फिर क्या वे ख़ुदा की ओर नहीं पलटेंगे और उससे क्षमा याचना नहीं करेंगे, जबकि ख़ुदा बड़ा क्षमाशील, दयावान है।" (क़ुरआन, 5:74)

"और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपने श्रृंगार प्रकट न करें, सिवाय उसके जो उनमें खुला रहता है। और अपने सीनों पर अपने दुपट्टे डाले रहें और अपना श्रृंगार किसी पर ज़ाहिर न करें सिवाय अपने पतियों के या अपने बापों के या अपने पतियों के बापों के या अपने बेटों के या अपने पतियों के बेटों के या अपने भाइयों के या अपने भतीजों के या अपने भाँजों के या अपने मेल-जोल की स्त्रियों के या जो उनकी अपनी मिलकियत में हों उनके, या उन अधीनस्थ पुरुषों के जो उस अवस्था को पार कर चुके हों जिसमें स्त्री की ज़रूरत होती है, या उन बच्चों के जो स्त्रियों के परदे की बातों से परिचित न हों। और स्त्रियाँ अपने पाँव धरती पर मारकर न चलें कि अपना जो श्रृंगार छिपा रखा हो, वह मालूम हो जाए। ऐ ईमानवालो! तुम सब मिलकर ख़ुदा से तौबा करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।" (क़ुरआन, 24:31)

"निश्चय ही ख़ुदा न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो।" (क़ुरआन, 16:90)

"ख़ुदा तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को उनके हक़दारों तक पहुँचा दिया करो। और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, तो न्यायपूर्वक फ़ैसला करो। ख़ुदा तुम्हें कितनी अच्छी नसीहत करता है। निस्सन्देह, ख़ुदा सब कुछ सुनता, देखता है।" (क़ुरआन, 4:58)

"ऐ ईमानवालो! ख़ुदा के लिए गवाही देते हुए इंसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान हो या निर्धन (जिसके विरुद्ध तुम्हें गवाही देनी पड़े) ख़ुदा को उनसे (तुमसे कहीं बढ़कर) निकटता का संबंध है, तो तुम अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो, क्योंकि यदि तुम हेर-फेर करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा को उसकी ख़बर है।" (क़ुरआन, 4:135)

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा के लिए ख़ूब उठनेवाले, इंसाफ़ की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इंसाफ़ करना छोड़ दो। इंसाफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। ख़ुदा का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा को उसकी ख़बर है।" (क़ुरआन, 5:8)

"ऐ ईमान लानेवालो! जानते-बूझते तुम ख़ुदा और उसके रसूल के साथ विश्वासघात न करना और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करना।" (क़ुरआन, 8:27)

"और धरती में उसके सुधार के पश्चात् बिगाड़ न पैदा करो। भय और आशा के साथ उसे पुकारो। निश्चय ही, ख़ुदा की दयालुता सत्कर्मी लोगों के निकट है।" (क़ुरआन, 7:56)

"ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है: 'ख़ुदा के मार्ग में निकलो' तो तुम धरती में ढहे जाते हो? क्या तुम आख़िरत की अपेक्षा सांसारिक जीवन पर राज़ी हो गए? सांसारिक जीवन की सुख-सामग्री तो आख़िरत के हिसाब में है कुछ थोड़ी ही!" (क़ुरआन, 9:38)

"कह दो : मेरे रब ने तो न्याय का आदेश दिया है और यह कि इबादत

के प्रत्येक अवसर पर अपना रुख़ ठीक रखो और निरे उसी के भक्त एवं आज्ञाकारी बनकर उसे पुकारो। जैसे उसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, वैसे ही तुम फिर पैदा होगे।'' (क़ुरआन, 7:29)

❑ मेरे लिए क्या खाना जाइज़ है?

''(ऐ पैग़म्बर!) वे तुमसे पूछते हैं कि उनके लिए क्या हलाल है? कह दो : तुम्हारे लिए सारी अच्छी स्वच्छ चीज़ें हलाल हैं और जिन शिकारी जानवरों को तुमने सधे हुए शिकारी जानवर के रूप में सधा रखा हो—जिनको जैसा ख़ुदा ने तुम्हें सिखाया है, सिखाते हो—वे जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़े रखें, उसको खाओ और उसपर ख़ुदा का नाम लो। और ख़ुदा का डर रखो। निश्चय ही ख़ुदा जल्द हिसाब लेनेवाला है।'' (क़ुरआन, 5:4)

❑ मेरे लिए क्या खाना नाजाइज़ है?

''उसने तो केवल तुमपर मुर्दार और ख़ून और सूअर का माँस और जिसपर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है। इसपर भी जो बहुत मजबूर और विवश हो जाए, वह अवज्ञा करनेवाला न हो और सीमा से आगे बढ़नेवाला हो तो उसपर कोई गुनाह नहीं। निस्सन्देह अल्लाह क्षमाशील, दयावान है।'' (क़ुरआन, 3:29)

❑ क्या ख़ुदा मेरी हर बात को जानता है?

''कह दो : यदि तुम अपने दिलों की बात छिपाओ या उसे प्रकट करो, प्रत्येक दशा में ख़ुदा उसे जान लेगा। और वह उसे भी जानता है, जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और ख़ुदा को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।'' (क़ुरआन, 3:29)

❑ मुझे कैसे (धन, ज्ञान, इज़्ज़त आदि) सुख प्राप्त हो सकता है?

''और यह कि मनुष्य के लिए बस वही है जिसके लिए उसने प्रयास किया।'' (क़ुरआन, 53:39)

❑ मेरे लिए बड़ी नेमत या दौलत क्या है?

''वह जिसे चाहता है तत्वदर्शिता प्रदान करता है और जिसे तत्वदर्शिता प्राप्त हुई उसे बड़ी दौलत मिल गई। किन्तु चेतते वही हैं जो बुद्धि और

समझवाले हैं।" (क़ुरआन, 2:269)

☐ मुझे किस बात की तमन्ना न करनी चाहिए?

"और उसकी कामना न करो, जिसमें ख़ुदा ने तुममें किसी को किसी से उच्च रखा है। पुरुषों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है और स्त्रियों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है। ख़ुदा से उसका उदार दान चाहो। निस्संदेह ख़ुदा को हर चीज़ का ज्ञान है।"

(क़ुरआन, 4:32)

☐ मुझे सबसे अधिक किस बात से बचना चाहिए?

"याद करो जब लुक़मान ने अपने बेटे से, उसे नसीहत करते हुए कहा: ऐ मेरे बेटे! ख़ुदा का साझी न ठहराना। निश्चय ही शिर्क (बहुदेववाद) बहुत बड़ा ज़ुल्म है।" (क़ुरआन, 31:13)

"ऐ ईमान लानेवालो! बहुत-से गुमानों से बचो, क्योंकि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे—क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का माँस खाए? वह तो तुम्हें अप्रिय होगा ही।— और ख़ुदा का डर रखो। निश्चय ही ख़ुदा तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।"

(क़ुरआन, 49:12)

☐ मैं अपने माता-पिता से कैसा व्यवहार रखूँ?

"तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें 'उँह' तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टतापूर्वक बात करो। और उनके आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएँ बिछाए रखो और कहो : मेरे रब! जिस प्रकार उन्होंने बालकाल में मुझे पाला है, तू भी उनपर दया कर।"

(क़ुरआन, 17:23-24)

"ख़ुदा की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ

और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। ख़ुदा ऐसे व्यक्ति को पसंद नहीं करता, जो इतराता और डींगें मारता हो।" (क़ुरआन, 4:36)

"और हमने मनुष्य को उसके अपने माँ-बाप के मामले में ताकीद की है—उसकी माँ ने निढाल पर निढाल होकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष उसके दूध छूटने में लगे—कि 'मेरे प्रति कृतज्ञ हो और अपने माँ-बाप के प्रति भी। अंततः मेरी ही ओर आना है।" (क़ुरआन, 31:14)

❑ मैं अपने माता-पिता का किस बात में आज्ञापालन न करूँ?

"और हमने मनुष्य को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है। किन्तु यदि वे तुझपर ज़ोर डालें कि तू किसी ऐसी चीज़ को मेरा साझी ठहराए जिसका तुझे ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मान। मेरी ही ओर तुम सबको पलटकर आना है; फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।" (क़ुरआन, 29:8)

"किन्तु यदि वे (माँ-बाप) तुझपर दबाव डालें कि तू किसी को मेरे साथ साझी ठहराए, जिसका तुझे ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके साथ भले तरीक़े से रहना। किन्तु अनुसरण उस व्यक्ति के मार्ग का करना जो मेरी ओर रुजू हो। फिर तुम सबको मेरी ही ओर पलटना है, फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।" (क़ुरआन, 31:15)

❑ ख़ुदा की दृष्टि में मैं अत्याचारी कब बन जाता हूँ?

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! न पुरुषों का कोई गिरोह दूसरे पुरुषों की हंसी उड़ाए, संभव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, संभव है वे उनसे अच्छी हों, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के पश्चात् अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति बाज़ न आए, तो ऐसे ही व्यक्ति अत्याचारी हैं।" (क़ुरआन, 49:11)

"जो उस विधान के अनुसार फ़ैसला न करें, जिसे ख़ुदा ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं।" (क़ुरआन, 5:45)

❑ जब मुझे किसी ग़लत आदमी से कोई ख़बर मिले तो मुझे क्या करना चाहिए?

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! यदि कोई दुराचारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो उसकी छानबीन कर लिया करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अनजाने में तकलीफ़ और नुक़सान पहुँचा बैठो, फिर अपने किए पर पछताओ।" (क़ुरआन, 49:6)

❑ ख़ुदा की दृष्टि में, मैं किस आधार पर विभिन्न दर्जे पा सकता हूँ?

"उनमें से प्रत्येक के दर्जे अपने किए हुए कर्मों के अनुसार होंगे (ताकि ख़ुदा का वादा पूरा हो) और ताकि वह उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला चुका दे और उनपर कदापि ज़ुल्म न हो।" (क़ुरआन, 46:19)

"सभी के दर्जे उनके कर्मों के अनुसार हैं। और जो कुछ वे करते हैं, उससे तुम्हारा रब अनभिज्ञ नहीं है।" (क़ुरआन, 6:132)

❑ मैं ख़ुदा की प्रसन्नता कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?

"अत: नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को भी। यह अच्छा है उनके लिए जो ख़ुदा की प्रसन्नता के इच्छुक हों और वही सफल हैं।" (क़ुरआन, 30:38)

❑ जब मैं दुआ माँगता हूँ तो क्या ख़ुदा मेरे निकट होता है?

"और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे सम्बन्ध में पूछें, तो मैं तो निकट ही हूँ, पुकारनेवाले की पुकार का उत्तर देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है, तो उन्हें चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझपर ईमान रखें, ताकि वे सीधा मार्ग पा लें।" (क़ुरआन, 2:186)

❑ क्या मेरी दुआएँ स्वीकार की जाती हैं?

"तुम्हारे रब ने कहा है कि तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थनाएँ स्वीकार करूँगा। जो लोग मेरी बन्दगी के मामले में घमण्ड से काम लेते हैं निश्चय ही

वे शीघ्र ही अपमानित होकर जहन्नम में प्रवेश करेंगे।'' (क़ुरआन, 40:60)

❑ कोई व्यक्ति मुझे दुआ दे तो मैं क्या करूँ?

''और तुम्हें जब सलामती की कोई दुआ दी जाए तो तुम सलामती की उससे अच्छी दुआ दो या उसी को लौटा दो। निश्चय ही ख़ुदा हर चीज़ का हिसाब रखता है।'' (क़ुरआन, 4:86)

❑ मुझे ख़ुदा से क्या दुआ माँगनी चाहिए?

''ऐ हमारे रब! हमें इंकार करनेवालों के लिए फ़ितना न बना और ऐ हमारे रब! हमें क्षमा कर दे। निश्चय ही तू प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।'' (क़ुरआन, 60:5)

''और याद करो जब इबराहीम और इसमाईल इस घर की बुनियादें उठा रहे थे, (तो उन्होंने प्रार्थना की): ऐ हमारे रब! हमारी ओर से इसे स्वीकार कर ले, निश्चय ही तू सुनता जानता है। ऐ हमारे रब, हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना और हमारी संतान में से अपना एक आज्ञाकारी समुदाय बना, और हमें हमारे इबादत के तरीक़े बता और हमारी तौबा क़बूल कर। निस्संदेह तू तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है। ऐ हमारे रब! उनमें उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठा जो उन्हें तेरी आयतें सुनाए और उनको किताब और तत्त्वदर्शिता की शिक्षा दे और उन (की आत्मा) को विकसित करे। निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।'' (क़ुरआन, 2:127-129)

''और जब वे जालूत और उसकी सेनाओं के मुक़ाबले पर आए तो कहा : ऐ हमारे रब! हमपर धैर्य उण्डेल दे और हमारे क़दम जमा दे और इंकार करनेवाले लोगों पर हमें विजय प्रदान कर।'' (क़ुरआन, 2:250)

''हमारे रब! यदि हम भूलें या चूक जाएँ तो हमें न पकड़ना। हमारे रब! और हमपर ऐसा बोझ न डाल जैसा तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था। हमारे रब! और हमसे वह बोझ न उठवा, जिसकी हमें शक्ति नहीं। और हमें क्षमा कर और हमें (अपनी कृपा से) ढाँक ले, और हमपर दया कर। तू ही हमारा संरक्षक है, अतएव इंकार करनेवालों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।'' (क़ुरआन, 2:286)

"और उनमें से कोई ऐसा है जो कहता है : हमारे रब! हमें प्रदान कर दुनिया में भी अच्छी दशा और आख़िरत में भी अच्छी दशा, और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा ले।" (क़ुरआन, 2:201)

"प्रशंसा ख़ुदा ही के लिए है जो सारे संसार का रब (प्रभु, पालनकर्त्ता) है। बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है। बदला दिए जाने के दिन का मालिक है। हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं। हमें सीधे मार्ग पर चला। उन लोगों के मार्ग पर जो तेरे कृपापात्र हुए जो न प्रकोप के भागी हुए और न पथभ्रष्ट।" (क़ुरआन, 1:1-7)

"मेरे रब! जिस प्रकार उन्होंने (माँ-बाप) बालकाल में मुझे पाला है, तू भी उनपर दया कर।" (क़ुरआन, 17:24)

"हमारे रब! जब तू हमें सीधे मार्ग पर लगा चुका है तो इसके पश्चात् हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर और हमें अपने पास से दयालुता प्रदान कर। निश्चय ही तू बड़ा दाता है।" (क़ुरआन, 3:8)

"उसने (मूसा ने) कहा : मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर दे और हमें अपनी दयालुता में दाख़िल कर ले। तू तो सबसे बढ़कर दयावान है।" (क़ुरआन, 7:151)

"मूसा ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को हमारे नियत किए हुए समय के लिए चुना। फिर जब उन लोगों को एक भूकम्प ने आ पकड़ा तो उसने कहा : मेरे रब! यदि तू चाहता तो पहले ही इनको और मुझे विनष्ट कर देता। जो कुछ हमारे नादानों ने किया है, क्या उसके कारण तू हमें विनष्ट करेगा? यह तो बस तेरी ओर से एक परीक्षा है। इसके द्वारा तू जिसे चाहे पथभ्रष्ट कर दे और जिसे चाहे मार्ग दिखा दे। तू ही हमारा संरक्षक है। अतः तू हमें क्षमा कर दे और हमपर दया कर, और तू ही सबसे बढ़कर क्षमा करनेवाला है।" (क़ुरआन, 7:155)

"मेरे रब! तूने मुझे राज्य प्रदान किया और मुझे घटनाओं और बातों के निष्कर्ष तक पहुँचना सिखाया। आकाश और धरती के पैदा करनेवाले! दुनिया और आख़िरत में तू ही मेरा संरक्षक मित्र है। तू मुझे इस दशा में उठा कि मैं

(तेरा) आज्ञाकारी हूँ और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला।''
(क़ुरआन, 12:101)

''मेरे रब! मुझे और मेरी सन्तान को नमाज़ क़ायम करनेवाला बना। हमारे रब! और हमारी प्रार्थना स्वीकार कर। हमारे रब! मुझे और मेरे माँ-बाप को और मोमिनों को उस दिन क्षमा कर देना, जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा।'' (क़ुरआन, 14:40-41)

''कहो : ऐ मेरे रब! जिस चीज़ का वादा उनसे किया जा रहा है, वह यदि तू मुझे दिखाए तो मेरे रब! मुझे उन अत्याचारी लोगों में सम्मिलित न करना।'' (क़ुरआन, 23:93-94)

''और कहो : ऐ मेरे रब! मैं शैतान की उकसाहटों से तेरी शरण चाहता हूँ। और मेरे रब! मैं इससे भी तेरी शरण चाहता हूँ कि वे मेरे पास आएँ।''
(क़ुरआन, 23:97-98)

''और कहो : मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और दया कर। तू तो सबसे अच्छा दया करनेवाला है।'' (क़ुरआन, 23:118)

''ऐ हमारे रब! हमें हमारी अपनी पत्नियों और हमारी अपनी संतान से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें डर रखनेवालों का नायक बना दे।''
(क़ुरआन, 25:74)

''ऐ मेरे रब! मुझे निर्णय-शक्ति प्रदान कर और मुझे योग्य लोगों के साथ मिला। और बाद के आनेवालों में मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर। और मुझे नेमत भरी जन्नत के वारिसों में सम्मिलित कर।''
(क़ुरआन, 26:83-85)

''मेरे रब! मुझे संभाले रख कि मैं तेरी उस कृपा पर कृतज्ञता दिखाता रहूँ जो तूने मुझपर और मेरे माँ-बाप पर की है। और यह कि अच्छा कर्म करूँ जो तुझे पसन्द आए और अपनी दयालुता से मुझे अपने अच्छे बन्दों में दाख़िल कर।'' (क़ुरआन, 27:19)

''और अय्यूब पर भी दया दर्शाई। याद करो जबकि उसने अपने रब को

पुकारा कि : मुझे बहुत तकलीफ़ पहुँची है, और तू सबसे बढ़कर दयावान है।" (क़ुरआन, 21:83)

"अन्त में उसने अपने रब को पुकारा कि : मैं दबा हुआ हूँ। अब तू बदला ले।" (क़ुरआन, 54:10)

"ऐ हमारे रब! तू हमारे गुनाहों को और हमारे मामले में जो ज़्यादती हो गई हो, उसे क्षमा कर दे, और हमारे क़दम जमाए रख, और इंकार करनेवाले लोगों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।" (क़ुरआन, 3:147)

"हमारे रब तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, अत: तू हमें आग की यातना से बचा ले। हमारे रब! तूने जिसे आग में डाला, उसे रुसवा कर दिया। और ऐसे ज़ालिमों का कोई सहायक न होगा। हमारे रब! हमने एक पुकारनेवाले को ईमान की ओर बुलाते सुना कि 'अपने रब पर ईमान लाओ।' तो हम ईमान लाए। हमारे रब! तो अब तू हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे और हमें नेक और वफ़ादार लोगों के साथ (दुनिया से) उठा। हमारे रब! जिस चीज़ का वादा तूने अपने रसूलों के द्वारा किया वह हमें प्रदान कर और क़ियामत के दिन हमें रुसवा न करना। निस्सन्देह तू अपने वादे के विरुद्ध जानेवाला नहीं है।" (कुरआन, 3:191-194)

"कहो : मैं शरण लेता हूँ प्रकट करनेवाले रब की, जो भी उसने पैदा किया उसकी बुराई से, और अंधेरे की बुराई से जबकि वह घुस आए, और गाँठों में फूँक मारनेवालों (या फूँक मारनेवालियों) की बुराई से, और ईर्ष्यालु की बुराई से, जब वह ईर्ष्या करे।" (क़ुरआन, 113:1-5)

"कहो : मैं शरण लेता हूँ मनुष्यों के रब की, मनुष्यों के सम्राट की, मनुष्यों के उपास्य की, वसवसा डालनेवाले, खिसक जानेवाले की बुराई से, जो मनुष्यों के सीनों (दिलों) में वसवसा डालता है, जो जिन्नों में से होता है और इंसानों में से भी।" (क़ुरआन, 114:1-6)

" मेरे रब! मुझे ज्ञान में अभिवृद्धि प्रदान कर।" (क़ुरआन, 20-114)

"मेरे रब! मेरा सीना खोल दे। और मेरे काम को मेरे लिए आसान बना

दे। और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे कि वे (लोग) मेरी बात समझ सकें।
(क़ुरआन, 20:25-28)

"ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और मेरे माँ-बाप को भी और हर उस व्यक्ति को भी जो मेरे घर ईमानवाला बनकर दाख़िल हुआ, और (सामान्य) ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को भी (क्षमा कर दे), और ज़ालिमों के विनाश को ही बढ़ा।" (क़ुरआन, 71:28)

"ऐ मेरे रब! मुझे संभाल कि मैं तेरी उस अनुकम्पा के प्रति कृतज्ञता दिखाऊँ, जो तूने मुझपर और मेरे माँ-बाप पर की है। और यह कि मैं ऐसा अच्छा कर्म करूँ जो तुझे प्रिय हो और मेरे लिए मेरी संतति में भलाई रख दे। मैं तेरे आगे तौबा करता हूँ और मैं आज्ञाकारी हूँ।" (क़ुरआन, 46:15)

"ये वे लोग हैं जो कहते हैं : हमारे रब! हम ईमान लाए हैं। अतः हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा।"
(क़ुरआन, 3:16)

❑ मुझे दुश्मनों की साज़िश कब हानि नहीं पहुँचा सकती?

"यदि तुमने धैर्य से काम लिया और (ख़ुदा का) डर रखा, तो उनकी कोई चाल तुम्हें कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। जो कुछ वे (दुश्मन)कर रहे हैं, ख़ुदा ने उसे अपने घेरे में ले रखा है।" (क़ुरआन, 3:120)

❑ मैं प्रभावी कब हो सकता हूँ?

"हताश न हो और दुखी न हो, यदि तुम ईमानवाले हो, तो तुम्हीं प्रभावी रहोगे।" (क़ुरआन, 3:139)

❑ मैं अपने उद्देश्य को कैसे पा सकता हूँ?

"ऐ ईमान लानेवालो! धैर्य से काम लो और (मुक़ाबले में) बढ़-चढ़कर धैर्य दिखाओ और जुटे और डटे रहो और ख़ुदा से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो सको।" (क़ुरआन, 3:200)

❑ ख़ुदा से डर कर मैं नेक बना रहूँ तो मुझे क्या मिलेगा?

"किन्तु जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे उसमें सदैव रहेंगे। यह ख़ुदा की ओर से पहला आतिथ्य-सत्कार होगा और जो कुछ ख़ुदा के पास है, वह नेक और वफ़ादार लोगों के लिए सबसे अच्छा है।" (क़ुरआन, 3:198)

❑ मैं ख़ुदा व रसूल का आज्ञापालन करूँ तो क्या होगा?

"ये ख़ुदा की निश्चित की हुई सीमाएँ हैं। जो कोई ख़ुदा और उसके रसूल के आदेशों का पालन करेगा, उसे ख़ुदा ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वह सदैव रहेगा और यही बड़ी सफलता है।" (क़ुरआन, 4:13)

❑ मैं ख़ुदा और रसूल का आज्ञापलन न करूँ तो क्या होगा?

"परन्तु जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करेगा उसे ख़ुदा आग में डालेगा, जिसमें वह सदैव रहेगा। और उसके लिए अपमानजनक यातना है।" (क़ुरआन, 4:14)

❑ गुनाह के बाद मैं ख़ुदा की ओर कैसे पलट सकता हूँ?

"और जिसने तौबा की और अच्छा कर्म किया, तो निश्चय ही वह ख़ुदा की ओर पलटता है, जैसा कि पलटने का हक़ है।" (क़ुरआन, 25:71)

❑ मेरे गुनाह ख़ुदा कब माफ़ करेगा?

"ऐ ईमान लानेवालो! यदि तुम ख़ुदा का डर रखोगे तो वह तुम्हें एक विशिष्टता प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर करेगा और तुम्हें क्षमा करेगा। ख़ुदा बड़ा अनुग्राहक है।" (क़ुरआन, 8:29)

❑ मेरा जीवन कैसे अच्छा व्यतीत हो सकता है?

"जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग

जो अच्छा कर्म करते रहे, उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।" (क़ुरआन, 16:97)

❑ ख़ुदा मुझे सही मार्ग कब दिखाता है?

"जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं : उसपर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी? कहो : ख़ुदा जिसे चाहता है पथभ्रष्ट कर देता है। अपनी ओर से वह मार्गदर्शन उसी का करता है जो रुजू होता है।"

(क़ुरआन, 13:27)

❑ ख़ुदा का शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बनने का मुझे क्या लाभ होगा?

"जब तुम्हारे रब ने सचेत कर दिया था कि यदि तुम कृतज्ञ हुए तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा, परन्तु यदि तुम अकृतज्ञ सिद्ध हुए तो निश्चय ही मेरी यातना भी अत्यन्त कठोर है।" (क़ुरआन, 14:7)

❑ क़ुरआन मेरे लिए कब मार्गदर्शक बनता है?

"वह किताब यही है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, मार्गदर्शन है डर रखनेवालों के लिए, जो अनदेखे ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं, और जो उसपर ईमान लाते हैं जो तुमपर उतरा और जो तुमसे पहले अवतरित हुआ है और आख़िरत पर वही लोग विश्वास रखते हैं, वही लोग हैं जो अपने रब के सीधे मार्ग पर हैं और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 2:2-5)

❑ मुझे किस चीज़ से डरना और बचना चाहिए?

"डरो उस आग से जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं, जो इनकार करनेवालों के लिए तैयार की गई है।" (क़ुरआन, 2:24)

❑ मैं नुक़सान में कब रहूँगा?

"जो ख़ुदा की प्रतिज्ञा को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग कर देते हैं और जिसे ख़ुदा ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे काट डालते हैं, और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं, वही हैं जो घाटे में हैं।" (क़ुरआन, 2:27)

❑ मुझे जन्नत में जाने के लिए ईमान के अतिरिक्त और क्या करना होगा?

"और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। उनके लिए वहाँ पाक जोड़े होंगे और हम उन्हें घनी छाँव में दाख़िल करेंगे।"

(क़ुरआन, 4:57)

❑ कौन-सा परिणाम मेरे लिए अच्छा है?

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा की आज्ञा का पालन करो और रसूल का कहना मानो और उनका भी कहना मानो जो तुममें अधिकारी लोग हैं। फिर यदि तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा हो जाए, तो उसे तुम ख़ुदा और रसूल की ओर लौटाओ, यदि तुम ख़ुदा और अंतिम दिन पर ईमान रखते हो। यही उत्तम है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।" (क़ुरआन, 4:59)

❑ मेरे लिए वास्तविक मार्गदर्शन कहाँ है?

"कह दो : ख़ुदा का मार्गदर्शन ही वास्तविक मार्गदर्शन है। और यदि उस ज्ञान के पश्चात् जो तुम्हारे पास आ चुका है, तुमने उनकी इच्छाओं का अनुसरण किया, तो ख़ुदा से बचानेवाला न तो तुम्हारा कोई मित्र होगा न सहायक।" (क़ुरआन, 2:120)

❑ क्या लोगों के अच्छे या बुरे कर्मों के बारे में मुझसे पूछ-गछ होगी?

"वह एक गिरोह था जो गुज़र चुका, जो कुछ उसने कमाया वह उसका है, और जो कुछ तुमने कमाया वह तुम्हारा है। और जो कुछ वे करते रहे उसके विषय में तुमसे कोई पूछ-गछ न की जाएगी।" (क़ुरआन, 2:134)

"वह एक गिरोह था जो गुज़र चुका, जो कुछ उसने कमाया वह उसके लिए है और जो कुछ तुमने कमाया वह तुम्हारे लिए है। और तुमसे उसके विषय में न पूछा जाएगा, जो कुछ वे करते रहे हैं।" (क़ुरआन, 2:141)

❑ मुझे किसके रंग में रंगना चाहिए?

"(ऐ पैग़म्बर कहो) ख़ुदा का रंग ग्रहण करो, उसके रंग से अच्छा और

किसका रंग हो सकता है? और हम तो उसी की बन्दगी करते हैं?''
(क़ुरआन, 2:138)

❑ मुझे किस चीज़ की तरफ़ अग्रसरता दिखानी चाहिए?

''प्रत्येक की एक ही दिशा है, वह उसी की ओर मुख किए हुए है, तो तुम भलाइयों में अग्रसरता दिखाओ। जहाँ कहीं भी तुम होगे ख़ुदा तुम सबको एकत्र करेगा। निस्सन्देह ख़ुदा को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।''
(क़ुरआन, 2:148)

❑ क्या ख़ुदा मेरे कुछ कामों को नहीं जानता?

''जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उससे बेख़बर नहीं है।''
(क़ुरआन, 2:149)

''फिर इसके पश्चात् भी तुम्हारे दिल कठोर हो गए, तो वे पत्थरों की तरह हो गए बल्कि उनसे भी अधिक कठोर, क्योंकि कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं, और उनमें से कुछ ऐसे भी होते हैं कि फट जाते हैं तो उनमें से पानी निकलने लगता है, और उनमें से कुछ ऐसे भी होते हैं जो ख़ुदा के भय से गिर जाते हैं। और ख़ुदा, जो कुछ तुम कर रहे हो उससे बेख़बर नहीं है।'' (क़ुरआन, 2:74)

❑ कोई व्यक्ति मुझपर ज़ुल्म करे तो मैं क्या करूँ?

''प्रतिष्ठित महीना बराबर है प्रतिष्ठित महीने के, और समस्त प्रतिष्ठाओं का भी बराबरी का बदला है। अतः कोई तुमपर ज़्यादती करे, तो जैसी ज़्यादती वह तुमपर करे, तुम भी उसी प्रकार उससे ज़्यादती का बदला ले सकते हो। और ख़ुदा का डर रखो और जान लो कि ख़ुदा डर रखनेवालों के साथ है।'' (क़ुरआन, 2:194)

❑ मुझे अपने जीवन में क्या ज़ादेराह (पाथेय) रखना चाहिए?

''हज के महीने जाने-पहचाने और निश्चित हैं, तो जो इनमें से हज करने का निश्चय करे, तो हज में न तो काम-वासना की बातें हो सकती हैं और न अवज्ञा, न लड़ाई-झगड़े की कोई बात। और जो भलाई के काम भी

तुम करोगे ख़ुदा उसे जानता होगा। और (ईश-भय का) पाथेय ले लो, क्योंकि सबसे उत्तम पाथेय ईश-भय है। और ऐ बुद्धि और समझवालो! मेरा डर रखो।" (क़ुरआन, 2:197)

❑ मैं किस पर अपना धन ख़र्च करूँ?

"वे तुमसे पूछते हैं : कितना ख़र्च करें? कहो : (पहले यह समझ लो कि) जो माल भी तुमने ख़र्च किया है, वह तो माँ-बाप, नातेदारों और अनाथों, और मुहताजों और मुसाफ़िरों के लिए ख़र्च हुआ है। और जो भलाई भी तुम करो, निस्सन्देह ख़ुदा उसे भली-भाँति जान लेगा।"

(क़ुरआन, 2:215)

❑ क्या मेरे लिए ऐसी चीज़ें भी हैं जिनको मैं पसन्द करूँ और वे मेरे लिए हानिकारक हों या जिनको मैं नापसन्द करूँ वे मेरे लिए लाभदायक हों?

"बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो। और बहुत सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। जानता ख़ुदा है, और तुम नहीं जानते।"

(क़ुरआन, 2:216)

❑ ख़ुदा मुझे किस ओर बुलाता है?

"ख़ुदा अपनी अनुज्ञा से जन्नत और क्षमा की ओर बुलाता है। और वह अपनी आयतें लोगों के सामने खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वे चेतें।" (क़ुरआन, 2:221)

❑ क्या आख़िरत में मैं अपने स्रष्टा से मिल सकता हूँ?

"अल्लाह से डरते रहो, और भली-भाँति जान लो कि तुम्हें उससे मिलना है, और ईमान लानेवालों को शुभ-सूचना दे दो।" (क़ुरआन, 2:223)

❑ ख़ुदा मेरा रक्षक और मेरा सहायक कब बनता है?

"जो लोग ईमान लाते हैं, ख़ुदा उनका रक्षक और सहायक है। वह उन्हें अंधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाता है। रहे वे लोग जिन्होंने इंकार

किया तो उनके संरक्षक बढ़े हुए सरकश हैं। वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अँधेरों की ओर ले जाते हैं। वही आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं। वे उसी में सदैव रहेंगे।'' (क़ुरआन, 2:257)

❑ मुझे क्यों पैदा किया गया?

''मैंने (ख़ुदा ने) तो जिन्नों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया कि वे मेरी (ख़ुदा की) बन्दगी करें।'' (क़ुरआन, 51:56)

''बड़ा बरकतवाला है वह, जिसके हाथ में सारी बादशाही है और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। — जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।'' (क़ुरआन, 67:1-2)

❑ शैतान मुझे किस चीज़ से डराता है?

''शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और निर्लज्जता के कामों पर उभारता है, जबकि ख़ुदा अपनी क्षमा और उदार कृपा का तुम्हें वचन देता है। ख़ुदा बड़ी समाईवाला, सर्वज्ञ है।'' (क़ुरआन, 2:268)

❑ मुझे अपना धन क्यों ख़र्च करना चाहिए?

''जो कुछ भी माल तुम ख़र्च करोगे, वह तुम्हारे अपने ही भले के लिए होगा और तुम ख़ुदा के (बताए हुए) उद्देश्य के अतिरिक्त किसी और उद्देश्य से ख़र्च न करो। और जो माल भी तुम ख़र्च करोगे, वह पूरा-पूरा तुम्हें चुका दिया जाएगा और तुम्हारा हक़ न मारा जाएगा।'' (क़ुरआन, 2:272)

❑ क्या मैं अपनी इच्छा से किसी को मार्ग पर ला सकता हूँ?

''उन्हें मार्ग पर ला देने का दायित्व तुमपर नहीं है, बल्कि ख़ुदा ही जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है।'' (क़ुरआन, 2:272)

❑ इबादत करने से मुझे क्या लाभ होगा?

''ऐ लोगो! बन्दगी करो अपने रब की जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम (बुरे कर्मों और आख़िरत के अज़ाब से) बच सको।'' (क़ुरआन, 2:21)

❑ मुझे गुनाह पर उभारनेवाली किन चीज़ों से बचना चाहिए?

"और जब उससे कहा जाता है : 'ख़ुदा से डर', तो अहंकार उसे और गुनाह पर जमा देता है। अतः उसके लिए तो जहन्नम ही काफ़ी है, और वह बहुत-ही बुरी शय्या है।" (क़ुरआन, 2:206)

❑ संतान और धन मुझे क्यों दिए गए हैं?

"तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान तो केवल एक आज़माइश हैं, और ख़ुदा ही है जिसके पास बड़ा प्रतिदान है।" (क़ुरआन, 64:15)

❑ ज़ालिम बनने के बाद भी क्या ख़ुदा मेरा मार्गदर्शन करेगा?

"उस व्यक्ति से बढ़कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह की ओर से किसी मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा पर चले? निश्चय ही ख़ुदा ज़ालिम लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।" (क़ुरआन, 28:50)

❑ ख़ुदा मुझसे जंग का ऐलान कब करता है?

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा का डर रखो और जो कुछ ब्याज बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमानवाले हो। फिर यदि तुमने ऐसा न किया तो ख़ुदा और उसके रसूल से युद्ध के लिए ख़बरदार हो जाओ। और यदि तौबा कर लो तो अपना मूलधन लेने का तुम्हें अधिकार है। न तुम अन्याय करो और न तुम्हारे साथ अन्याय किया जाए।" (क़ुरआन, 2:278-279)

❑ क्या मेरी नेकियाँ मेरी बुराइयों को मिटा देंगी?

"और नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्से में। निस्सन्देह नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं। यह याद रखनेवालों के लिए एक अनुस्मरण है।" (क़ुरआन, 11:114)

❑ मैं शैतान से कैसे सुरक्षित रह सकता हूँ?

"अतः जब तुम क़ुरआन पढ़ने लगो तो फिटकारे हुए शैतान से बचने के लिए ख़ुदा की पनाह माँग लिया करो। उसका तो उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।"

(क़ुरआन, 16:98-99)

"और यदि शैतान की ओर से कोई उकसाहट तुम्हें चुभे तो ख़ुदा की शरण माँग लो। निश्चय ही वह सब कुछ सुनता-जानता है।"

(क़ुरआन, 41:36)

"कहो : मैं शरण लेता हूँ मनुष्यों के रब की, मनुष्यों के सम्राट की, मनुष्यों के उपास्य की, वसवसा डालनेवाले, खिसक जानेवाले की बुराई से, जो मनुष्यों के सीनों (दिलों) में वसवसा डालता है, जो जिन्नों में से होता है और इंसानों में से भी।" (क़ुरआन, 114:1-6)

❑ क्या अल्लाह की रहमत मुझे घेरे हुए है?

"अपनी यातना में मैं तो उसी को ग्रस्त करता हूँ जिसे चाहता हूँ, किन्तु मेरी दयालुता से हर चीज़ आच्छादित है। उसे तो मैं उन लोगों के हक़ में लिखूँगा जो डर रखते हैं और ज़कात देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।" (क़ुरआन, 7:156)

❑ क्या मेरे लिए दीन (इस्लाम) पर चलना कठिन है?

"और परस्पर मिलकर जिहाद (जीतोड़ कोशिश) करो ख़ुदा के मार्ग में, जैसा कि जिहाद का हक़ है। उसने तुम्हें चुन लिया है—और धर्म के मामले में तुमपर कोई तंगी और कठिनाई नहीं रखी।" (क़ुरआन, 22:78)

❑ मेरी नेकियाँ कब बरबाद नहीं होंगी?

"और जो लोग किताब को मज़बूती से थामते हैं और जिन्होंने नमाज़ क़ायम कर रखी हैं, तो काम को ठीक रखनेवालों के प्रतिदान को हम कभी अकारथ नहीं करते।" (क़ुरआन, 7:170)

"और धैर्य से काम लो, इसलिए कि ख़ुदा सुकर्मियों का बदला अकारथ नहीं करता।" (क़ुरआन, 11:115)

❑ मुझे मेरे अच्छे और बुरे कामों का कितना बदला दिया जाएगा?

"निस्संदेह ख़ुदा रत्तीभर भी ज़ुल्म नहीं करता और यदि कोई एक नेकी हो तो वह उसे कई गुना बढ़ा देगा और अपनी ओर से बड़ा बदला देगा।"

(क़ुरआन, 4:40)

❑ मुझे किस दीन (धर्म) को मानना चाहिए?

"अत: एक ओर का होकर अपने रुख़ को 'दीन' (धर्म) की ओर जमा दो, ख़ुदा की उस प्रकृति का अनुसरण करो जिसपर उसने लोगों को पैदा किया। ख़ुदा की बनाई हुई संरचना नहीं बदली जा सकती। यही सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।" (क़ुरआन, 30:30)

❑ क्या दीन (धर्म) ख़ुदा की दृष्टि में इस्लाम ही है?

"आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन (धर्म) को पूर्ण कर दिया और तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द किया। (क़ुरआन, 5:3)

❑ क्या जन्नत में जाने के लिए मुझे कठिन इम्तिहान देना होगा?

"क्या तुमने यह समझ रखा है कि जन्नत में (यूँ ही)प्रवेश पा जाओगे, जबकि अभी तुमपर वह सब कुछ नहीं बीता है जो तुमसे पहले के लोगों पर बीत चुका? उनपर तंगियाँ और तकलीफ़ें आईं, और उन्हें हिला मारा गया, यहाँ तक कि (उस समय के) रसूल बोल उठे और उसके साथ के ईमानवाले भी कि ख़ुदा की सहायता कब आएगी? जान लो! ख़ुदा की सहायता निकट है।" (क़ुरआन, 2:214)

❑ क्या ख़ुदा मेरे लिए प्रत्येक बात में आसानी चाहता है?

"रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अन्तर के प्रमाणों के साथ। अत: तुममें जो कोई इस महीने में मौजूद हो उसे चाहिए कि उसके रोज़े रखे और बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर ले। ख़ुदा तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती और कठिनाई नहीं चाहता, (वह तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर रहा है) और चाहता है कि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है, उसपर ख़ुदा की बड़ाई प्रकट करो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।" (क़ुरआन, 2:185)

❑ वह कौन-सा काम है जिसको करने से मैं नेक व परहेज़गार बन सकता हूँ?

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा के लिए ख़ूब उठनेवाले, इंसाफ़ की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इंसाफ़ करना छोड़ दो। इंसाफ़ करो, यही परहेज़गारी से अधिक निकट है। ख़ुदा का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा को उसकी ख़बर है।" (क़ुरआन, 5:8)

❑ मुझसे कोई गुनाह हो जाए तो मुझे क्या करना चाहिए?

"और जिनका हाल यह है कि जब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, तो तत्काल ख़ुदा उन्हें याद आ जाता है और वे अपने गुनाहों की क्षमा चाहने लगते हैं—और ख़ुदा के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते-बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते। उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का।" (क़ुरआन, 3:135-136)

❑ वे कौन से काम हैं जिन्हें करने से दुनिया व आख़िरत में मुझे अज़ाब होगा?

"निस्सन्देह जो लोग शरीफ़ पाकदामन, भोली-भाली बेख़बर ईमानवाली स्त्रियों पर तोहमत लगाते हैं उनपर दुनिया व आख़िरत में फिटकार है। और उनके लिए एक बड़ी यातना है।" (क़ुरआन, 24:23)

❑ क्या मुझे अच्छे कामों के अतिरिक्त बुरे कामों में भी लोगों की सहायता करनी चाहिए?

"हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और हक़ मारने और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग न करो। ख़ुदा का डर रखो, निश्चय ही ख़ुदा बड़ा कठोर दण्ड देनवाला है।"

(क़ुरआन, 5:2)

❑ मुझे किस व्यक्ति का कहना न मानना चाहिए?

"ऐसे व्यक्ति की बात न मानना जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल पाया है और वह अपनी इच्छा और वासना के पीछे लगा हुआ है और उसका मामला हद से आगे बढ़ गया है।" (क़ुरआन, 18:28)

❑ मेरी क़ौम की दशा क्यों नहीं बदलती?

"किसी क़ौम के लोगों को जो कुछ प्राप्त होता है ख़ुदा उसे बदलता नहीं, जब तक कि वे स्वयं अपने आपको न बदल डालें। और जब ख़ुदा किसी क़ौम का अनिष्ट चाहता है तो फिर वह उससे टल नहीं सकता, और उससे हटकर उनका कोई समर्थक और संरक्षक भी नहीं।" (क़ुरआन, 13:11)

❑ क्या आख़िरत की तैयारी के साथ-साथ मैं दुनिया में भी अच्छा जीवन गुज़ारने की कोशिश कर सकता हूँ?

"जो कुछ ख़ुदा ने तुझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर, जैसा कि ख़ुदा ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत चाह। निश्चय ही ख़ुदा बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 28:77)

❑ क्या मुझे कंजूसी करनी चाहिए?

"जो लोग उस चीज़ में कंजूसी से काम लेते हैं, जो ख़ुदा ने अपनी उदार कृपा से उन्हें प्रदान की है, वे यह न समझें कि यह उनके हित में अच्छा है, बल्कि यह उनके लिए बुरा है। जिस चीज़ में उन्होंने कंजूसी से काम लिया होगा, वही आगे क़ियामत के दिन उनके गले का तौक़ बन जाएगा। और ये आकाश और धरती अंत में ख़ुदा ही के लिए रह जाएँगे। तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।" (क़ुरआन, 3:180)

❑ मैं शैतान का कहना मानूँ तो क्या होगा?

"उनपर शैतान ने पूरी तरह अपना प्रभाव जमा लिया। अतः उसने ख़ुदा की याद को उनसे भुला दिया। वे शैतान की पार्टीवाले हैं। सावधान रहो शैतान की पार्टीवाले ही घाटे में रहनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 58:19)

❑ मुझे ख़ुदा कैसे आज़माता है?

"हर जीव को मौत का मज़ा चखना है और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर तुम सबकी परीक्षा करते हैं। अन्ततः तुम्हें हमारी ही ओर पलट कर आना है।" (क़ुरआन, 21:35)

❑ मेरे लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) क्या हैं?

"निस्सन्देह तुम्हारे लिए ख़ुदा के रसूल में एक उत्तम आदर्श है अर्थात् उस व्यक्ति के लिए जो ख़ुदा और अंतिम दिन की आशा रखता हो और ख़ुदा को अधिक याद करे।" (क़ुरआन, 33:21)

"ऐ नबी! हमने तुमको साक्षी और शुभ सूचना देनेवाला और सचेत करनेवाला बनाकर भेजा है।" (क़ुरआन, 33:45)

❑ मुझे जन्नत पाने की शुभ सूचना कब मिल सकती है?

"जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जब भी उनमें से कोई फल उन्हें रोज़ी के रूप में मिलेगा, तो वे कहेंगे : यह तो वही है जो पहले हमें मिला था, और उन्हें मिलता-जुलता ही (फल) मिलेगा, उनके लिए वहाँ पाक-साफ़ पत्नियाँ होंगी, और वे वहाँ सदैव रहेंगे।"

(क़ुरआन, 2:25)

❑ क्या ख़ुदा मेरी हर चीज़ का हिसाब लेनेवाला है?

"और तुम्हें जब सलामती की कोई दुआ दी जाए, तो तुम सलामती की उससे अच्छी दुआ दो या उसी को लौटा दो। निश्चय ही, ख़ुदा हर चीज़ का हिसाब रखता है।" (क़ुरआन, 4:86)

❑ मुझे किस बात से बेपरवाह न होना चाहिए?

"अपने रब को अपने मन में प्रातः और संध्या के समयों में विनम्रतापूर्वक, डरते हुए और हल्की आवाज़ के साथ याद किया करो। और उन लोगों में से न हो जाओ जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।" (क़ुरआन, 7:205)

❑ वे कौन-से काम हैं जो मुझे जन्नत में ले जा सकते हैं?

"सफल हो गए ईमानवाले, जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता अपनाते हैं, और जो व्यर्थ बातों से पहलू बचाते हैं, और जो ज़कात अदा करते हैं, और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं—सिवाय इस सूरत के कि अपनी पत्नियों या लौण्डियों के पास जाएँ कि इसपर वे निन्दनीय नहीं हैं। परन्तु जो कोई इसके अतिरिक्त कुछ और चाहे तो ऐसे ही लोग सीमोल्लंघन करनेवाले हैं।— और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं, और जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं, वही वारिस होनेवाले हैं। जो फ़िरदौस (जन्नत) की विरासत पाएँगे। वे उसमें सदैव रहेंगे।"

(क़ुरआन, 23:1-11)

❑ जिस दीन (धर्म) पर चलने को ख़ुदा मुझे कहता है क्या वह कोई नया दीन है?

"उसने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया जिसकी ताकीद उसने नूह को की थी। और वह (जीवन्त आदेश) जिसकी प्रकाशना हमने तुम्हारी ओर की है और वह जिसकी ताकीद हमने इबराहीम और मूसा और ईसा को की थी यह है कि 'धर्म को क़ायम करो और उसके विषय में अलग-अलग न हो जाओ।' बहुदेववादियों को वह चीज़ बहुत अप्रिय है, जिसकी ओर तुम उन्हें बुलाते हो। ख़ुदा जिसे चाहता है अपनी ओर छाँट लेता है और वह अपनी ओर का मार्ग उसी को दिखाता है जो उसकी ओर रुजू करता है।"

(क़ुरआन, 42:13)

❑ क्या कोई ऐसा भी काम है जिसे करने से आख़िरत में ख़ुदा मुझे बिलकुल माफ़ न करे?

"ख़ुदा इसको क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी ठहराया जाए। किन्तु इससे नीचे के दर्जे के अपराध को जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा और जिस किसी ने ख़ुदा का साझी ठहराया, तो उसने एक बहुत बड़ा झूठ घड़ लिया।"

(क़ुरआन, 4:48)

"तुम्हारी ओर और जो लोग तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर प्रकाशना की जा चुकी है कि 'यदि तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया-धरा अनिवार्यत: अकारथ जाएगा और तुम अवश्य ही घाटे में पड़नेवालों में से हो जाओगे।" (क़ुरआन, 39:65)

❑ मुझे कैसी नेकी करनी चाहिए?

"नेकी केवल यह नहीं है कि तुम अपने मुँह पूरब और पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि नेकी तो उसकी नेकी है जो ख़ुदा, अन्तिम दिन, फ़रिश्तों, किताब और नबियों पर ईमान लाया और माल, उसके प्रति प्रेम के बावजूद, नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, मुसाफ़िरों और माँगनेवालों को दिया और गर्दनें छुड़ाने में भी, और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और अपने वचन को ऐसे लोग पूरा करनेवाले हैं जब वचन दें, और तंगी और विशेष रूप से शारीरिक कष्टों में और लड़ाई के समय में जमनेवाले हैं, ऐसे ही लोग हैं जो सच्चे सिद्ध हुए और वही लोग डर रखनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 2:177)

❑ मुझे जन्नत में जाने के लिए ईमान लाने व इबादत करने के अतिरिक्त और किस प्रकार की तैयारी करनी चाहिए?

"और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार है जो डर रखते हैं। वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—और ख़ुदा को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं। और जिनका हाल यह है कि जब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, तो तत्काल ख़ुदा उन्हें याद आ जाता है और वे अपने गुनाहों की क्षमा चाहने लगते हैं—और ख़ुदा के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते-बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते। उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का।" (क़ुरआन, 3:133-136)

❑ मेरा कर्ज़दार अगर मेरा क़र्ज़ वापस न करे, तो मैं क्या करूँ?

''और यदि कोई तंगी में हो तो हाथ खुलने तक मुहलत देनी होगी, और सदक़ा कर दो, (अर्थात् मूलधन भी न लो) तो यह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है, यदि तुम जान सको।'' (क़ुरआन, 2:280)

❑ क्या दावत खाकर मुझे और अधिक रुकना चाहिए?

''ऐ ईमान लानेवालो! नबी के घरों में प्रवेश न करो, सिवाय इसके कि कभी तुम्हें खाने पर आने की अनुमति दी जाए। वह भी इस तरह कि उसकी (खाना पकने की) तैयारी की प्रतीक्षा में न रहो। अलबत्ता जब तुम्हें बुलाया जाए तो अन्दर जाओ, और जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ, बातों में लगे न रहो। निश्चय ही तुम्हारी यह हरकत नबी को तकलीफ़ देती है। किन्तु उन्हें तुमसे लज्जा आती है। किन्तु ख़ुदा सच्ची बात कहने से लज्जा नहीं करता।'' (क़ुरआन, 33:53)

❑ ख़ुदा मेरा काम कब बनने नहीं देता?

''फिर जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा : तुम जो कुछ लाए हो जादू है। ख़ुदा अभी उसे मलियामेट किए देता है। निस्सन्देह ख़ुदा बिगाड़ पैदा करनेवालों के कर्म को फलीभूत नहीं होने देता।'' (क़ुरआन, 10:81)

❑ किसी की बुरी बात के जवाब में मुझे क्या करना चाहिए?

''बुराई को उस ढंग से दूर करो, जो सबसे उत्तम हो। हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ बातें वे बनाते हैं।'' (क़ुरआन, 23:96)

❑ क्या जन्नत में, मैं अपने रिश्तेदारों से मिल सकता हूँ?

''और जिन लोगों ने अपने रब की प्रसन्नता की चाह में धैर्य से काम लिया और नमाज़ क़ायम की और जो हमने उन्हें दिया है, उसमें से खुले और छिपे ख़र्च किया, और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। वही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत के घर का अच्छा परिणाम है, अर्थात सदैव रहने के बाग़ हैं जिनमें वे प्रवेश करेंगे और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियों और उनकी संतानों में से जो नेक होंगे वे भी, और हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके

पास पहुँचेंगे।" (क़ुरआन, 13:22-23)

❑ मुझे हानि और लाभ कब पहुँचता है?

"तुम्हें जो भी भलाई प्राप्त होती है, वह ख़ुदा की ओर से है और जो बुरी हालत तुम्हें पेश आ जाती है तो वह तुम्हारे अपने ही कारण पेश आती है।" (क़ुरआन, 4:79)

❑ ख़ुदा मुझे जो चीज़ देता है उसे मैं क्या समझूँ?

"अत: जब मनुष्य को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारने लगता है, फिर जब हमारी ओर से उसपर कोई अनुकम्पा होती है तो कहता है: 'यह तो मुझे ज्ञान के कारण प्राप्त हुआ है।' नहीं, बल्कि यह तो एक परीक्षा है, किन्तु उसमें से अधिकतर जानते नहीं।" (क़ुरआन, 39:49)

❑ मुझे ख़ुदा से क्या माँगते रहना चाहिए?

"ख़ुदा से उसका उदार दान चाहो। निस्सन्देह ख़ुदा को हर चीज़ का ज्ञान है।" (क़ुरआन, 4:32)

❑ मुझे अपनी निगाहों का कैसा इस्तेमाल करना चाहिए?

"ईमानवाले पुरुषों से कह दो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यही उनके लिए अच्छी बात है। ख़ुदा को उसकी पूरी ख़बर रहती है, जो कुछ वे किया करते हैं। और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपने श्रृंगार प्रकट न करें, सिवाय उसके जो उसमें खुला रहता है।"

(क़ुरआन, 24:30-31)

❑ मैं ख़ुदा की दृष्टि में कैसे इज़्ज़तवाला बन सकता हूँ?

"ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में ख़ुदा के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे

अधिक डर रखता है। निश्चय ही ख़ुदा सब कुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है।" (क़ुरआन, 49:13)

❑ अधिक अच्छा बदला मुझे कब मिल सकता है?

"मुस्लिम पुरुष और मुस्लिम स्त्रियाँ, ईमानवाले पुरुष और ईमानवाली स्त्रियाँ, निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाले पुरुष और निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाली स्त्रियाँ, सत्यवादी पुरुष और सत्यवादी स्त्रियाँ, धैर्यवान पुरुष और धैर्य रखनेवाली स्त्रियाँ, विनम्रता दिखानेवाले पुरुष और विनम्रता दिखानेवाली स्त्रियाँ, सदक़ा (दान) देनेवाले पुरुष और दान देनेवाली स्त्रियाँ, रोज़ा रखनेवाले पुरुष और रोज़ा रखनेवाली स्त्रियाँ, अपने गुप्तांगों की रक्षा करनेवाले पुरुष और रक्षा करनेवाली स्त्रियाँ और ख़ुदा को अधिक याद करनेवाले पुरुष और याद करनेवाली स्त्रियाँ—इनके लिए ख़ुदा ने क्षमा और बड़ा प्रतिदान तैयार कर रखा है।" (क़ुरआन, 33:35)

❑ मेरा वास्तविक मित्र कौन है?

"रहे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें , वे सब परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं। भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं। नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं और ख़ुदा और उसके रसूल का आज्ञापालन करते हैं। ये वे लोग हैं, जिनपर शीघ्र ही ख़ुदा दया करेगा। निस्सन्देह ख़ुदा प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।" (क़ुरआन, 9:71)

❑ मैं अपने घरवालों को किस चीज़ का हुक्म दूँ?

"और अपने लोगों को नमाज़ का आदेश करो और स्वयं भी उसपर जमे रहो। हम तुमसे कोई रोज़ी नहीं माँगते। रोज़ी हम ही तुम्हें देते हैं, और अच्छा परिणाम तो धर्मपरायणता ही के लिए निश्चित है।"

(क़ुरआन, 20:132)

❑ मैं कितने समय तक अपने बच्चों को उसकी माँ का दूध पिलवा सकता हूँ?

"और जो कोई पूरी अवधि तक (बच्चे को) दूध पिलवाना चाहे, तो

माएँ अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलाएँ। और वह जिसका बच्चा है, सामान्य नियम के अनुसार उनके खाने और उनके कपड़े का ज़िम्मेदार है। किसी पर बस उसकी अपनी समाई भर ही ज़िम्मेदारी है, न तो कोई माँ अपने बच्चे के कारण (बच्चे के बाप को) नुक़्सान पहुँचाए और न बाप अपने बच्चे के कारण (बच्चे की माँ को) नुक़्सान पहुँचाए। और इसी प्रकार की ज़िम्मेदारी उसके वारिस पर भी आती है। फिर यदि दोनों पारस्परिक स्वेच्छा और परामर्श से दूध छुड़ाना चाहें तो उनपर कोई गुनाह नहीं। और यदि तुम अपनी संतान को किसी अन्य स्त्री से दूध पिलवाना चाहो तो इसमें भी तुम पर कोई गुनाह नहीं, जबकि तुमने जो कुछ बदले में देने का वादा किया हो, सामान्य नियम के अनुसार उसे चुका दो। और ख़ुदा का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उसे देख रहा है।''

(क़ुरआन, 2:233)

❑ मुझे अपने ख़ानदान की विधवाओं का कितने समय बाद दूसरा निकाह करवाना चाहिए?

''और तुममें से जो लोग मर जाएँ और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो वे पत्नियाँ अपने-आपको चार महीने और दस दिन तक रोके रखें। फिर जब वे अपनी निर्धारित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो सामान्य नियम के अनुसार वे अपने लिए जो कुछ करें, उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं। जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उसकी ख़बर रखता है।'' (क़ुरआन, 2:234)

❑ मुझे किस बात से सावधान रहना चाहिए?

''ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हारे माल तुम्हें ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल न कर दें और न तुम्हारी संतान ही। जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहनेवाले हैं।''

(क़ुरआन, 63:9)

❑ मैं कौन-सा काम न करूँ?

''अत: जो अनाथ हो उसे मत दबाना, और जो माँगता हो उसे न झिड़कना।''

(क़ुरआन, 93:9-10)

❑ मेरे लिए ख़ुदा की याद का सबसे अच्छा तरीक़ा क्या है?

"निस्संदेह मैं ही ख़ुदा हूँ। मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तू मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर।" (क़ुरआन, 20:14)

❑ मैं अपने रब को कैसे पुकारूँ?

"अपने रब को गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके पुकारो। निश्चय ही वह हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता। और धरती में उसके सुधार के पश्चात् बिगाड़ न पैदा करो। भय और आशा के साथ उसे पुकारो। निश्चय ही, ख़ुदा की दयालुता सत्कर्मी लोगों के निकट है।"

(क़ुरआन, 7:55-56)

❑ मैं ख़ुदा से कैसे क़रीब हो सकता हूँ?

"कदापि नहीं उसकी (अधर्मी की) बात न मानो और सजदे करते रहो और (प्रभु से) क़रीब होते रहो।" (क़ुरआन, 96:19)

❑ मैं अपने अतिरिक्त ख़ास तौर पर और किसे जहन्नम से बचाने की कोशिश करूँ?

"ऐ ईमान लानेवालो! अपने आपको और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, जिसपर कठोर स्वभाव के ऐसे बलशाली फ़रिश्ते नियुक्त होंगे जो ख़ुदा की अवज्ञा उसमें नहीं करेंगे जो आदेश भी वह उन्हें देगा, और वे वही करेंगे जिसका उन्हें आदेश दिया जाएगा।" (क़ुरआन, 66:6)

❑ मेरे दिल को आराम और चैन कैसे मिल सकता है?

"ऐसे ही लोग हैं जो ईमान लाए और जिनके दिलों को ख़ुदा के स्मरण से आराम और चैन मिलता है। सुन लो, अल्लाह के स्मरण से ही दिलों को संतोष प्राप्त हुआ करता है।" (क़ुरआन, 13:28)

❑ मेरे हज और क़ुरबानी में ख़ुदा क्या देखता है?

"न उनके मांस ख़ुदा को पहुँचते हैं और न उनके रक्त। किन्तु उसे तुम्हारा तक़वा (धर्मपरायणता) पहुँचता है। इस प्रकार उसने उन्हें तुम्हारे

लिए वशीभूत किया है, ताकि तुम ख़ुदा की बड़ाई बयान करो, इसपर कि उसने तुम्हारा मार्गदर्शन किया और सुकर्मियों को शुभ सूचना दे दो।''

(क़ुरआन, 22:37)

❑ मैं जो कुछ ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च करता हूँ, क्या मुझे उसका बदला मिलेगा?

''कह दो : 'मेरा रब ही है जो अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। और जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।'' (क़ुरआन, 34:39)

''ख़ुदा ने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया और इसलिए कि प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाए, और उनपर ज़ुल्म न किया जाएगा।'' (क़ुरआन, 45:22)

''जो कुछ भी माल तुम (भले कामों में) ख़र्च करोगे, वह तुम्हारे अपने ही भले के लिए होगा और तुम ख़ुदा के (बताए हुए) उद्देश्य के सिवा किसी और उद्देश्य से ख़र्च न करो और जो माल भी तुम (भले कामों में) ख़र्च करोगे, वह पूरा का पूरा तुम्हें चुका दिया जाएगा और तुम्हारा हक़ न मारा जाएगा।'' (क़ुरआन, 3:85)

❑ ख़ुदा ने मेरे लिए कौन-सा धर्म पसन्द किया है?

''जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। और आख़िरत में वह घाटा उठानेवालों में से होगा।'' (क़ुरआन, 3:85)

''दीन (धर्म) तो ख़ुदा की दृष्टि में इस्लाम ही है। जिन्हें किताब दी गई थी, उन्होंने तो इसमें इसके पश्चात् विभेद किया कि ज्ञान उनके पास आ चुका था। ऐसा उन्होंने परस्पर दुराग्रह के कारण किया। जो ख़ुदा की आयतों का इंकार करेगा तो ख़ुदा भी जल्द हिसाब लेनेवाला है।'' (क़ुरआन, 3:19)

❑ मैं नेकी कैसे कर सकता हूँ?

"तुम नेकी और वफ़ादारी के दर्जे को नहीं पहुँच सकते, जब तक कि उन चीज़ों को (ख़ुदा के मार्ग में) ख़र्च न करो, जो तुम्हें प्रिय हैं। और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे, निश्चय ही ख़ुदा को उसका ज्ञान होगा।"

(क़ुरआन, 3:92)

❑ मुझ पर हज कब फ़र्ज़ होता है?

"उसमें स्पष्ट निशानियाँ हैं, वह इबराहीम का स्थल है। और जिसने उसमें प्रवेश किया, वह निश्चिन्त हो गया। लोगों पर ख़ुदा का हक़ है कि जिसको वहाँ तक पहुँचने का सामर्थ्य प्राप्त हो, वह इस घर का हज़ करे, और जिसने इनकार किया तो (इस इनकार से ख़ुदा का कुछ नहीं बिगड़ता), ख़ुदा तो सारे संसार से निरपेक्ष है।" (क़ुरआन, 3:97)

❑ मैं सीधे व सच्चे रास्ते पर कब हो सकता हूँ?

"अब तुम इनकार कैसे कर सकते हो, जबकि तुम्हें ख़ुदा की आयतें पढ़कर सुनाई जा रही हैं और उसका रसूल तुम्हारे बीच मौजूद है? जो कोई ख़ुदा को मज़बूती से पकड़ ले वह सीधे रास्ते पर आ गया।"

(क़ुरआन, 3:101)

❑ मुझे बहुत अच्छा बदला कब मिलेगा?

"ख़ुदा ईमानवालों को इस दशा में नहीं रहने देगा, जिसमें तुम हो। यह तो उस समय तक की बात है जब तक कि वह अपवित्र को पवित्र से पृथक नहीं कर देता। और ख़ुदा ऐसा नहीं है कि वह तुम्हें परोक्ष की सूचना दे दे। किन्तु ख़ुदा इस काम के लिए जिसको चाहता है चुन लेता है, और वे उसके रसूल होते हैं। अतः ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और यदि तुम ईमान लाओगे और (ख़ुदा का) डर रखोगे तो तुमको बड़ा प्रतिदान मिलेगा।"

(क़ुरआन, 3:179)

❑ मुझे कैसा नहीं होना चाहिए?

"तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जो विभेद में पड़ गए, और इसके पश्चात् कि उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी थीं, वे विभेद में पड़ गए।

ये वही लोग हैं, जिनके लिए बड़ी (घोर) यातना है।" (क़ुरआन, 3:105)

❑ मैं कामयाब लोगों में कैसे शामिल हो सकता हूँ?

"और तुम्हें एक ऐसे समुदाय का रूप धारण कर लेना चाहिए जो नेकी की ओर बुलाए और भलाई का आदेश दे और बुराई से रोके। यही सफलता प्राप्त करनेवाले लोग हैं।" (क़ुरआन, 3:104)

❑ मैं अपना राज़दार किसे बनाऊँ?

"ऐ ईमान लानेवालो! अपनों को छोड़कर दूसरों को अपना अंतरंग मित्र न बनाओ, वे तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में कोई कमी नहीं करते। जितनी भी तुम कठिनाई में पड़ो, वही उनको प्रिय है। उनका द्वेष तो उनके मुँह से व्यक्त हो चुका है और जो कुछ उनके सीने छिपाए हुए हैं, वह तो इससे भी बढ़कर है। यदि तुम बुद्धि से काम लो, तो हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर बयान कर दी हैं।" (क़ुरआन, 3:118)

❑ ख़ुदा मेरी तौबा कब स्वीकार करता है?

"उन्हीं लोगों की तौबा क़बूल करना ख़ुदा के ज़िम्मे है जो भावनाओं में बह कर नादानी से कोई बुराई कर बैठें, फिर जल्द ही तौबा कर लें, ऐसे ही लोग हैं जिनकी तौबा ख़ुदा क़बूल करता है। ख़ुदा सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है।" (क़ुरआन, 4:17)

❑ ख़ुदा मेरी तौबा कब स्वीकार नहीं करता?

"और ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो बुरे काम किए चले जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है तो कहने लगता है: 'अब मैं तौबा करता हूँ।' और इसी प्रकार तौबा उसकी भी नहीं है, जो मरते दम तक इंकार करनेवाले ही रहें। ऐसे लोगों के लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।" (क़ुरआन, 4:18)

❑ जो चीज़ मुझे नापसन्द है क्या वह हमेशा मेरे लिए हानिकारक होती है?

"ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हारे लिए वैध नहीं कि स्त्रियों के माल के

ज़बरदस्ती वारिस बन बैठो, और न यह वैध है कि उन्हें इसलिए रोको और तंग करो कि जो कुछ तुमने उन्हें दिया है, उनमें से कुछ ले उड़ो। परन्तु यदि वे खुले रूप में अशिष्ट कर्म कर बैठें तो दूसरी बात है। और उनके साथ भले तरीक़े से रहो-सहो। फिर यदि वे तुम्हें पसन्द न हों, तो संभव है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो और ख़ुदा उसमें बहुत कुछ भलाई रख दे।''

(क़ुरआन, 4:19)

❑ मेरे गुनाह कैसे दूर हो सकते हैं?

''यदि तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहो, जिनसे तुम्हें रोका जा रहा है, तो हम तुम्हारी बुराइयों को तुमसे दूर कर देंगे और तुम्हें प्रतिष्ठित स्थान में प्रवेश कराएँगे।'' (क़ुरआन, 4:31)

❑ ख़ुदा मेरे लिए क्या चाहता है?

''ख़ुदा चाहता है कि तुमपर स्पष्ट कर दे और तुम्हें उन लोगों के तरीक़ों पर चलाए जो तुमसे पहले हुए हैं और तुमपर दया दृष्टि करे। ख़ुदा तो सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है। और ख़ुदा चाहता है कि तुमपर दया दृष्टि करे, किन्तु जो लोग अपनी तुच्छ इच्छाओं का पालन करते हैं, वे चाहते हैं कि तुम राह से हटकर बहुत दूर जा पड़ो। ख़ुदा चाहता है कि तुमपर से बोझ हलका कर दे, क्योंकि इंसान निर्बल पैदा किया गया है।''

(क़ुरआन, 4:26-28)

❑ मेरे लिए किसकी मदद काफ़ी होनी चाहिए?

''ख़ुदा तुम्हारे शत्रुओं को भली-भाँति जानता है। ख़ुदा एक संरक्षक के रूप में काफ़ी है और ख़ुदा एक सहायक के रूप में भी काफ़ी है।''

(क़ुरआन, 4:45)

❑ ईमान के साथ मैं अच्छे कार्य भी करूँ तो क्या होगा?

''और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। उनके लिए वहाँ पाक जोड़े होंगे और हम उन्हें घनी छाँव में दाख़िल करेंगे।''

(क़ुरआन, 4:57)

❑ मेरे पास अमानत रखवाई जाए तो मुझे क्या करना चाहिए?

"और यदि तुम सफ़र में हो और किसी लिखनेवाले को न पा सको, तो गिरवी रखकर मामला करो। फिर यदि तुममें से एक-दूसरे पर भरोसा करे, तो जिसपर भरोसा किया गया है उसे चाहिए कि वह यह सच कर दिखाए कि वह विश्वासपात्र है और ख़ुदा का, जो उसका रब है, डर रखे। और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाता है तो निश्चय ही उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो ख़ुदा उसे भली-भाँति जानता है।" (क़ुरआन, 2:283)

❑ वह कौन-सा काम है जिसके करने से मेरे दिल में बिगाड़ पैदा होता है?

"फिर परिणाम यह हुआ कि उसने उनके दिलों में उस दिन तक के लिए कपटाचार डाल दिया, जब वे उससे मिलेंगे, इसलिए कि उन्होंने ख़ुदा से जो प्रतिज्ञा की थी उसे भंग कर दिया और इसलिए भी कि वे झूठ बोलते रहे।"

(क़ुरआन, 9:77)

❑ मैं सबसे अधिक मुहब्बत किस से करूँ?

"कुछ लोग ऐसे भी हैं जो ख़ुदा से हटकर दूसरों को उसके समकक्ष ठहराते हैं, उनसे ऐसा प्रेम करते हैं जैसा अल्लाह से प्रेम करना चाहिए। और कुछ ईमानवाले हैं उन्हें सबसे बढ़कर ख़ुदा से प्रेम होता है।"

(क़ुरआन, 2:165)

❑ मैं ख़ुदा की दृष्टि में सफल हो रहा हूँ, इस बात की मेरे लिए क्या निशानी है?

"जो अपने मन के लोभ और कृपणता से बचा लिए जाएँ ऐसे लोग सफल हैं।" (क़ुरआन, 59:9)

"अत: जहाँ तक तुम्हारे बस में हो ख़ुदा का डर रखो और सुनो और आज्ञापालन करो और ख़र्च करो अपनी भलाई के लिए। और जो अपने मन के लोभ एवं कृपणता से सुरक्षित रहा तो ऐसे ही लोग सफल हैं।"

(क़ुरआन, 64:16)

❑ मेरा सबसे बुरा साथी कौन है?

"वे जो अपने माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं, न ख़ुदा पर ईमान रखते हैं, न अंतिम दिन पर, और जिस किसी का साथी शैतान हुआ, तो वह बहुत ही बुरा साथी है।" (क़ुरआन, 4:38)

❑ मुझे ख़ुदा को कैसे पुकारना चाहिए?

"उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं कि वे अपने रब को भय और लालसा के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। फिर कोई प्राणी नहीं जानता आँखों की जो ठंडक उसके लिए छिपा रखी गई है उसके बदले में देने के ध्येय से जो वे करते रहे होंगे।"

(क़ुरआन, 32:16-17)

❑ मेरे लिए जीवन की परिभाषा क्या है?

"जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करें कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्त्वशली, बड़ा क्षमाशील है।" (क़ुरआन, 67:2)

❑ मुझे ख़ुदा से कैसे मदद माँगनी चाहिए?

"ऐ ईमान लानेवालो! धैर्य और नमाज़ से मदद प्राप्त करो। निस्सन्देह ख़ुदा उन लोगों के साथ है जो धैर्य और दृढ़ता से काम लेते हैं।"

(क़ुरआन, 2:153)

❑ मेरा सबसे बड़ा वास्तविक शत्रु कौन है?

"ऐ लोगो! धरती में जो हलाल और अच्छी-सुथरी चीज़ें हैं उन्हें खाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला शत्रु है।"

(क़ुरआन, 2:168)

"ऐ ईमान लानेवालो! तुम सब इस्लाम (आज्ञापालन) में दाख़िल हो जाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। वह तो तुम्हारा खुला शत्रु है।"

(क़ुरआन, 2:208)

❑ मैं ख़ुदा से कैसे वफ़ादारी दिखा सकता हूँ?

"वफ़ादारी और नेकी केवल यह नहीं है कि तुम अपने मुँह पूरब और पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि वफ़ादारी तो उसकी वफ़ादारी है जो ख़ुदा, अन्तिम दिन, फ़रिश्तों, किताब और नबियों पर ईमान लाया और माल, उसके प्रति प्रेम के बावजूद, नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, मुसाफ़िरों और माँगनेवालों को दिया और गर्दनें छुड़ाने में भी, और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और अपने वचन को ऐसे लोग पूरा करनेवाले हैं जब वचन दें, और तंगी और विशेष रूप से शारीरिक कष्टों में और लड़ाई के समय में जमनेवाले हैं, ऐसे ही लोग हैं जो सच्चे सिद्ध हुए और वही लोग डर रखनेवाले हैं।"

(क़ुरआन, 2:177)

❑ मुझपर रोज़े रखना क्यों फ़र्ज़ किया गया है?

"ऐ ईमान लानेवालो! तुमपर रोज़े अनिवार्य किए गए, जिस प्रकार तुमसे पहले के लोगों पर किए गए थे, ताकि तुम डर रखनेवाले बन जाओ।"

(क़ुरआन, 2:183)

❑ मेरा स्रष्टा मेरे लिए क्या चाहता है?

"ख़ुदा तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती और कठिनाई नहीं चाहता।" (क़ुरआन, 2:185)

❑ ख़ुदा की निगाह में मैं ज़ालिम कब बनता हूँ?

"जो कोई ख़ुदा की सीमाओं का उल्लंघन करे तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं।" (क़ुरआन, 2:229)

❑ मुझे क्या याद रखना चाहिए?

और ख़ुदा की आयतों को परिहास का विषय न बनाओ, और ख़ुदा की कृपा जो तुमपर हुई है उसे याद रखो और उस किताब और तत्त्वदर्शिता (हिकमत) को याद रखो जो उसने तुमपर उतारी है, जिसके द्वारा वह तुम्हें नसीहत करता है। और ख़ुदा का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि ख़ुदा हर चीज़ को जाननेवाला है।" (क़ुरआन, 2:231)

❑ क्या ख़ुदा मेरे सभी कामों को देख रहा है?

"ख़ुदा का डर रखो और भली-भाँति जान लो कि जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उसे देख रहा है।" (क़ुरआन, 2:233)

"जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।"
(क़ुरआन, 2:234)

"जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे मन की बात जानता है। अत: उससे सावधान रहो और यह भी जान लो कि ख़ुदा अत्यन्त क्षमा करनेवाला, सहनशील है।" (क़ुरआन, 2:235)

"तुम नर्मी से काम लो तो यह परहेज़गारी से ज़्यादा क़रीब है और तुम एक-दूसरे को हक़ से बढ़कर देना न भूलो। निश्चय ही ख़ुदा उसे देख रहा है, जो कुछ तुम करते हो।" (क़ुरआन, 2:237)

"और वे तुमसे अनाथों के विषय में पूछते हैं। कहो : 'उनके सुधार की जो रीति भी अपनाई जाए अच्छी है। और यदि तुम उन्हें अपने साथ सम्मिलित कर लो तो वे तुम्हारे भाई-बन्धु ही हैं। और ख़ुदा बिगाड़ पैदा करनेवाले को बनाव पैदा करनेवाले से अलग पहचानता है। और यदि ख़ुदा चाहता तो तुमको ज़हमत (कठिनाई) में डाल देता। निस्सन्देह ख़ुदा प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।" (क़ुरआन, 2:220)

❑ ख़ुदा मेरा साथ कब देता है?

"कितनी ही बार एक छोटी-सी टुकड़ी ने ख़ुदा की अनुज्ञा से एक बड़े गिरोह पर विजय पाई है। ख़ुदा तो जमनेवालों के साथ है।"
(क़ुरआन, 2:249)

"अब ख़ुदा ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया और उसे मालूम हुआ कि तुममें कुछ कमज़ोरी है। तो यदि तुम्हारे सौ आदमी जमे रहनेवाले होंगे, तो वे दो सौ पर प्रभावी रहेंगे और यदि तुममें ऐसे हज़ार होंगे तो ख़ुदा के हुक्म से वे दो हज़ार पर प्रभावी रहेंगे। ख़ुदा तो उन्हीं लोगों के साथ है जो जमे रहते हैं।"
(क़ुरआन, 8:66)

"ऐ ईमान लानेवालो! धैर्य और नमाज़ से मदद प्राप्त करो। निस्सन्देह ख़ुदा उन लोगों के साथ है जो धैर्य और दृढ़ता से काम लेते हैं।"

(क़ुरआन, 2:153)

❑ धन के सम्बन्ध में, मेरा व्यवहार कैसा होना चाहिए?

"ऐ ईमान लानेवालो! हमने जो कुछ तुम्हें प्रदान किया है उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा और न कोई मित्रता होगी और न कोई सिफ़ारिश। ज़ालिम वही हैं, जिन्होंने इंकार की नीति अपनाई।" (क़ुरआन, 2:254)

❑ क्या मैं ज़बरदस्ती लोगों को इस्लाम की ओर बुला सकता हूँ?

"धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात नासमझी की बात से अलग होकर स्पष्ट हो गई है। तो अब जो कोई बढ़े हुए सरकश को ठुकरा दे और ख़ुदा पर ईमान लाए, उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं। ख़ुदा सब कुछ सुनने, जाननेवाला है।" (क़ुरआन, 2:256)

❑ ईमान लाने पर ख़ुदा मेरे साथ क्या करता है?

"जो लोग ईमान लाते हैं, ख़ुदा उनका रक्षक और सहायक है। वह उन्हें अंधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाता है।" (क़ुरआन, 2:257)

❑ अगर मैं ख़ुदा के हुक्मों का इंकार करूँ तो क्या होगा?

"और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारे हुक्मों को झुठलाया, वही आग में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।" (क़ुरआन, 2:39)

❑ मुझे किस दिन से डरना चाहिए?

"और डरो उस दिन से जब न कोई किसी की ओर से कुछ तावान भरेगा और न किसी की ओर से कोई सिफ़ारिश ही क़बूल की जाएगी और न किसी की ओर से कोई फ़िद्या (अर्थदण्ड) लिया जाएगा और न वे सहायता ही पा सकेंगे।"

(क़ुरआन, 2:48)

"और उस दिन से डरो, जब कोई न किसी के काम आएगा, न किसी की ओर से अर्थदण्ड स्वीकार किया जाएगा, और न कोई सिफ़ारिश ही उसे

लाभ पहुँचा सकेगी, और न उनको कोई सहायता ही पहुँच सकेगी।''

(क़ुरआन, 2:123)

❑ मेरा भय और उदासी कैसे दूर होगी?

''निस्संदेह, ईमानवाले और जो यहूदी हुए और ईसाई और साबिई, जो भी ख़ुदा और अन्तिम दिन पर ईमान लाया और अच्छा कर्म किया तो ऐसे लोगों का उनके अपने रब के पास (अच्छा) बदला है, उनको न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।'' (क़ुरआन, 2:62)

❑ मैं ख़ुदा के कुछ आदेशों को मानूँ और कुछ को न मानूँ तो क्या होगा?

''क्या तुम किताब के एक हिस्से को मानते हो और एक को नहीं मानते? फिर तुममें जो ऐसा करें उनका बदला इसके सिवा और क्या हो सकता है कि सांसारिक जीवन में अपमानित हो? और क़ियामत के दिन ऐसे लोगों को कठोर से कठोर यातना की ओर फेर दिया जाएगा। ख़ुदा उससे बेख़बर नहीं है जो तुम कर रहे हो।'' (क़ुरआन, 2:85)

❑ क्या मैं अपने लाभ और अपनी हानि का स्वयं ज़िम्मेदार हूँ?

''जो कोई सीधा मार्ग अपनाए तो उसने अपने ही लिए सीधा मार्ग अपनाया और जो पथभ्रष्ट हुआ, तो वह अपने ही बुरे के लिए भटका। और कोई भी बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और हम लोगों को यातना नहीं देते जब तक कोई रसूल न भेज दें।'' (क़ुरआन, 17:15)

❑ अच्छे काम में ख़र्च किए गए अपने धन का क्या मुझे बदला मिलेगा?

''जो कुछ भी तुमने (अच्छे कर्मों में) ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।'' (क़ुरआन, 34:39)

❑ ख़ुदा का दोस्त बनकर मुझे क्या लाभ होगा?

''सुन लो, ख़ुदा के मित्रों को न तो कोई डर है और न वे शोकाकुल ही होंगे।'' (क़ुरआन, 10:62)

❑ ख़ुदा की नेमतें (स्वास्थ्य, धन, ज्ञान आदि) मुझे और अधिक कैसे मिल सकती हैं?

"'जब तुम्हारे रब ने सचेत कर दिया था कि 'यदि तुम कृतज्ञ हुए तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा, परन्तु यदि तुम अकृतज्ञ सिद्ध हुए तो निश्चय ही मेरी यातना भी अत्यन्त कठोर है।" (क़ुरआन, 14:7)

❑ जब कोई मेरे साथ बुराई और ज़ुल्म करे तो मुझे क्या करना चाहिए?

"बुराई का बदला वैसी ही बुराई है किन्तु जो क्षमा कर दे और सुधार करे तो उसका बदला ख़ुदा के ज़िम्मे है। निश्चय ही वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। और जो कोई अपने ऊपर ज़ुल्म होने के पश्चात् बदला ले ले, तो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं। इलज़ाम तो केवल उनपर आता है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और धरती में नाहक़ ज़्यादती करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दुखद यातना है। किन्तु जिसने धैर्य से काम लिया और क्षमा कर दिया तो निश्चय ही वह उन कामों में से है जो (सफलता के लिए) आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।"

(क़ुरआन, 42:40-43)

❑ ख़ुदा मेरे दिल का मार्गदर्शन कब करता है?

"ख़ुदा की अनुज्ञा के बिना कोई भी मुसीबत नहीं आती। जो ख़ुदा पर ईमान ले आए ख़ुदा उसके दिल को मार्ग दिखाता है, और ख़ुदा हर चीज़ को भली-भाँति जानता है।" (क़ुरआन, 64:11)

❑ मुझे किस बात पर ध्यान देते रहना चाहिए?

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा का डर रखो। और प्रत्येक व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और ख़ुदा का डर रखो। जो कुछ भी तुम करते हो निश्चय ही ख़ुदा उसकी पूरी ख़बर रखता है। और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने ख़ुदा को भुला दिया। तो उसने भी ऐसा किया कि वे स्वयं अपने आपको भूल बैठे। वही अवज्ञाकारी हैं।"

(क़ुरआन, 59:18-19)

❑ ख़ुदा के आदेशों को मानने पर मुझे क्या लाभ होगा?

"हमने कहा : तुम सब यहाँ से उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से कोई मार्गदर्शन पहुँचे, तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण किया, तो ऐसे लोगों को न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।"

(क़ुरआन, 2:38)

❑ मेरा अंजाम कब अच्छा होगा?

"और अपने लोगों क़ो नमाज़ का आदेश करो और स्वयं भी उसपर जमे रहो। हम तुमसे कोई रोज़ी नहीं माँगते। रोज़ी हम ही देते हैं, और अच्छा परिणाम तो धर्मपरायणता ही के लिए निश्चित है।" (क़ुरआन, 20:132)

❑ अच्छे कामों में, मैं अधिक धन ख़र्च करूँ तो, क्या ख़ुदा मुझे और अधिक धन देगा?

"मेरा रब ही है जो अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। और जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।" (क़ुरआन, 34:39)

❑ मेरे गुनाह कैसे दूर हो सकते हैं?

"यदि तुम खुले रूप में सदक़े (दान) दो तो यह भी अच्छा है और यदि उनको छिपाकर मुहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। और यह तुम्हारे कितने ही गुनाहों को मिटा देगा। और ख़ुदा को उसकी पूरी ख़बर है जो कुछ तुम करते हो।" (क़ुरआन, 2:271)

❑ मुझे बुरे कामों से क्या चीज़ रोक सकती है?

"उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गई है, और नमाज़ का आयोजन करो। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है । और ख़ुदा का याद करना तो बहुत बड़ी चीज़ है। ख़ुदा जानता है जो कुछ तुम रचते और बनाते हो।" (क़ुरआन, 29:45)

❑ आख़िरत का घर (जन्नत) मुझे कैसे मिल सकता है?

"आख़िरत का घर हम उन लोगों के लिए ख़ास कर देंगे जो न तो धरती में अपनी बड़ाई चाहते हैं और न बिगाड़। परिणाम तो अन्ततः डर रखनेवालों के पक्ष में है।" (क़ुरआन, 28:83)

❑ क्या मैं ख़ुदा के साथ किसी दूसरे को अपनी मदद के लिए पुकार सकता हूँ?

"और ख़ुदा के साथ किसी और इष्ट-पूज्य को न पुकारना। उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं। हर चीज़ नाशवान है सिवाय उसके स्वरूप के। फ़ैसला और आदेश का अधिकार उसी को प्राप्त है और उसी की ओर तुम सबको लौटकर जाना है।" (क़ुरआन, 28:88)

❑ क्या अच्छे या बुरे काम करने का मुझपर कोई प्रभाव पड़ता है?

"ख़ुदा किसी जीव पर बस उसकी सामर्थ्य और समाई के अनुसार ही दायित्व का भार डालता है। उसका है जो उसने कमाया और उसी पर उसका वबाल (आपदा) भी है जो उसने किया।" (क़ुरआन, 2:286)

❑ वह कौन-सा काम है जिसको भूल जाने से मैं स्वयं को भूल जाता हूँ?

"और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने ख़ुदा को भुला दिया। तो उसने भी ऐसा किया कि वे स्वयं अपने आपको भूल बैठे। वही अवज्ञाकारी हैं।" (क़ुरआन, 59:19)

❑ आख़िरत में मेरी कामयाबी से क्या मुराद है?

"आगवाले और बाग़वाले (जहन्नमवाले और जन्नतवाले) कभी समान नहीं हो सकते। बाग़वाले ही सफल हैं।" (क़ुरआन, 59:20)

❑ अगर मैं ख़ुदा के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करूँ तो क्या वह दुनिया व आख़िरत (परलोक) में मेरी सहायता करेगा?

"निश्चय ही हम अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए अवश्य सहायता करते हैं, सांसारिक जीवन में भी और उस दिन भी, जबकि

गवाह खड़े होंगे।" (क़ुरआन, 40:51)

❑ अगर मैं इस्लाम से पलट जाऊँ तो क्या होगा?

"ऐ ईमान लानेवालो! तुममें से जो कोई अपने धर्म से फिरेगा तो ख़ुदा जल्द ही ऐसे लोगों को लाएगा जिनसे उसे प्रेम होगा और जो उससे प्रेम करेंगे। वे ईमानवालों के प्रति नरम और अविश्वासियों के प्रति कठोर होंगे। अल्लाह की राह में जी-तोड़ कोशिश करेंगे और किसी भर्त्सना करनेवाले की भर्त्सना से न डरेंगे। यह ख़ुदा का उदार अनुग्रह है, जिसे चाहता है प्रदान करता है। ख़ुदा बड़ी समाईवाला सर्वज्ञ है।" (क़ुरआन, 5:54)

❑ इस जीवन में मुझे जो कुछ मिलता है, क्या आख़िरत में उन सब का हिसाब देना होगा?

"फिर निश्चय ही उस दिन तुमसे इन नेमतों के बारे में पूछा जाएगा।" (क़ुरआन, 102:8)

❑ मुझे अपनी संतान और धन में विशेष तौर पर किस चीज़ से होशियार रहना चाहिए?

"ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हारे माल तुम्हें ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल न कर दें और न तुम्हारी संतान ही। जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 63:9)

❑ मुझे गुस्सा आए तो मैं क्या करूँ?

"वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में ख़र्च (दान) करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं—और ख़ुदा को भी ऐसे लोग प्रिय हैं, जो अच्छे से अच्छा कर्म करते हैं।" (क़ुरआन, 3:134)

❑ क्या आख़िरत में मेरा कोई सहायक होगा?

"ऐ ईमान लानेवालो! हमने जो कुछ तुम्हें प्रदान किया है उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा और न कोई मित्रता होगी और न कोई सिफ़ारिश। ज़ालिम वही हैं, जिन्होंने इंकार

की नीति अपनाई है।'' (क़ुरआन, 2:254)

❑ मेरा विनाश कब हो सकता है?

''तबाही है हर कचोके लगानेवाले, ऐब निकालनेवाले के लिए, जो माल इकट्ठा करता और उसे गिनता रहा। समझता है कि उसके माल ने उसे अमर कर दिया। कदापि नहीं, वह चूर-चूर कर देनेवाली में फेंक दिया जाएगा, और तुम्हें क्या मालूम कि वह चूर-चूर कर देनेवाली क्या है? वह ख़ुदा की दहकाई हुई आग है, जो झाँक लेती है दिलों को। वह उनपर ढाँककर बन्द कर दी गई होगी, लम्बे-लम्बे स्तम्भों में।'' (क़ुरआन, 104:1-9)

❑ क्या मेरी रोज़ी (जीविका) ख़ुदा के ज़िम्मे है?

''धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी ख़ुदा के ज़िम्मे है। वह जानता है जहाँ उसे ठहरना है और जहाँ उसे सौंपा जाना है। सब कुछ एक स्पष्ट किताब में मौजूद है।'' (क़ुरआन, 11:6)

''और आकाश में ही तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है। अतः सौगन्ध है आकाश और धरती के रब की। निश्चय ही वह सत्य बात है ऐसे ही जैसे तुम बोलते हो।''

(क़ुरआन, 51:22-23)

❑ मुझे किस तरह व्यापार करना चाहिए?

''उसने आकाश को ऊँचा किया और संतुलन स्थापित किया—कि तुम भी तुला में सीमा का उल्लंघन न करो। न्याय के साथ ठीक-ठीक तौलो और तौल में कमी न करो।'' (क़ुरआन, 55:7-9)

''इंसाफ़ के साथ नाप और तौल को पूरा रखो। और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो और धरती में बिगाड़ पैदा करनेवाले बनकर अपने मुँह को कलुषित न करो। यदि तुम मोमिन हो तो जो ख़ुदा के पास शेष रहता है वही तुम्हारे लिए उत्तम है। मैं तुम्हारे ऊपर कोई नियुक्त रखवाला नहीं हूँ।''

(क़ुरआन, 11:85-86)

''और जब नापकर दो तो, नाप पूरी रखो। और ठीक तराज़ू से तौलो,

यही उत्तम और परिणाम की दृष्टि से भी अधिक अच्छा है।"

(क़ुरआन, 17:35)

"तबाही है घटानेवालों के लिए, जो नापकर लोगों पर नज़र जमाए हुए लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं, किन्तु जब उन्हें नापकर या तौलकर देते हैं तो घटाकर देते हैं।" (क़ुरआन, 83:1-3)

❑ मैं दान कैसे दिया करूँ?

"एक भली बात कहनी और क्षमा से काम लेना उस सदक़े से अच्छा है, जिसके पीछे दुख हो। और ख़ुदा अत्यन्त निस्पृह (बेनियाज़), सहनशील है। ऐ ईमानवालो! अपने सदक़ों को एहसान जताकर और दुख देकर उस व्यक्ति की तरह नष्ट न करो जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल ख़र्च करता है और ख़ुदा और अंतिम दिन पर ईमान नहीं रखता तो उसकी हालत उस चट्टान जैसी है जिसपर कुछ मिट्टी पड़ी हुई थी, फिर उसपर ज़ोर की वर्षा हुई और उसे साफ़ चट्टान की दशा में छोड़ गई। ऐसे लोग अपनी कमाई कुछ भी प्राप्त नहीं करते। और ख़ुदा इंकार की नीति अपनानेवालों को मार्ग नहीं दिखाता।"

(क़ुरआन, 2:263-264)

"ऐ ईमान लानेवालो! अपनी कमाई की पाक और अच्छी चीज़ों में से ख़र्च करो और उन चीज़ों में से भी जो हमने धरती में से तुम्हारे लिए निकाली है। और देने के लिए उसके ख़राब हिस्से (के देने) का इरादा न करो, जबकि तुम स्वयं उसे कभी न लोगे। यह और बात है कि उसको लेने में देखा-अनदेखी कर जाओ। और जान लो कि ख़ुदा निस्पृह, प्रशंसनीय है।"

(क़ुरआन, 2:263-267)

"यदि तुम खुले रूप में सदक़े दो तो यह भी अच्छा है और यदि उनको छिपाकर मुहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। और यह तुम्हारे कितने ही गुनाहों को मिटा देगा। और ख़ुदा को उसकी पूरी ख़बर है जो कुछ तुम करते हो।" (क़ुरआन, 2:271)

"जो लोग अपने माल रात-दिन छिपे और खुले ख़र्च करें, उनका बदला तो उनके रब के पास है, और न उन्हें कोई भय है और न वे शोकाकुल

होंगे।'' (क़ुरआन, 2:274)

❑ मेरे वादे कैसे होने चाहिएँ?

''क्यों नहीं, जो कोई अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा और डर रखेगा, तो ख़ुदा भी डर रखनेवालों से प्रेम करता है।'' (क़ुरआन, 3:76)

''ख़ुदा के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करो, जबकि तुमने प्रतिज्ञा की हो। और अपनी क़समों को उन्हें सुदृढ़ करने के पश्चात् मत तोड़ो, जबकि तुम अपने ऊपर ख़ुदा को अपना ज़ामिन बना चुके हो। निश्चय ही ख़ुदा जानता है जो कुछ तुम करते हो।'' (क़ुरआन, 16:91)

''ऐ ईमान लानेवालो! प्रतिबंधों (प्रतिज्ञाओं, समझौतों आदि) का पूर्ण रूप से पालन करो।'' (क़ुरआन, 5:1)

❑ क्या मेरे वादों के बारे में मुझसे पूछा जाएगा?

''और अनाथ के माल को हाथ मत लगाओ सिवाय उत्तम रीति के, यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाए, और प्रतिज्ञा पूरी करो। प्रतिज्ञा के विषय में अवश्य पूछा जाएगा।'' (क़ुरआन, 17:34)

❑ किन क़समों पर मेरी पकड़ होगी और किन पर नहीं?

''तुम्हारी उन क़समों पर ख़ुदा तुम्हें नहीं पकड़ता जो यूँ ही असावधानी में ज़बान से निकल जाती हैं। परन्तु जो तुमने पक्की क़समें खाई हों, उनपर वह तुम्हें पकड़ेगा। तो इसका प्रायश्चित दस मुहताजों को औसत दर्जे का वह खाना खिला देना है जो तुम अपने बाल-बच्चों को खिलाते हो, या फिर उन्हें कपड़े पहनाना या एक ग़ुलाम आज़ाद करना होगा। और जिसे इसकी सामर्थ्य न हो, तो उसे तीन दिन के रोज़े रखने होंगे। यह तुम्हारी क़समों का प्रायश्चित है, जबकि तुम क़सम खा बैठो। तुम अपनी क़समों की हिफ़ाज़त किया करो। इस प्रकार ख़ुदा अपनी आयतें तुम्हारे सामने खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।'' (क़ुरआन, 5:89)

❑ ग़ैर-मुस्लिमों से किए गए अपने वादे को क्या मैं तोड़ सकता हूँ?

''सिवाय उन मुशरिकों के जिनसे तुमने संधि-समझौते किए, फिर उन्होंने

तुम्हारे साथ अपने वचन को पूर्ण करने में कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता ही की, तो उनके साथ उनकी संधि को उन लोगों के निर्धारित समय तक पूरा करो। निश्चय ही ख़ुदा को डर रखनेवाले प्रिय हैं।''

(क़ुरआन, 9:4)

❑ मुझे किस बात की क़सम खानी चाहिए?

''तुममें जो बड़ाईवाले और सामर्थ्यवान हैं, वे नातेदारों, मुहताजों और ख़ुदा की राह में घरबार छोड़नेवालों को देने से बाज़ रहने की क़सम न खा बैठें। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और उनसे दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि ख़ुदा तुम्हें क्षमा करे? ख़ुदा बहुत क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।''

(क़ुरआन, 24:22)

❑ मुझे धन, ज्ञान और आदर आदि अत्यधिक कैसे मिल सकते हैं?

''तुम्हारे रब ने सचेत-कर दिया था कि यदि तुम कृतज्ञ हुए तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा, परन्तु यदि तुम अकृतज्ञ सिद्ध हुए तो निश्चय ही मेरी यातना भी अत्यन्त कठोर है।''

(क़ुरआन, 14:7)

❑ क्या इस जीवन में मिली चीज़ों का मुझे आख़िरत में हिसाब देना होगा?

''फिर निश्चय ही उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछा जाएगा।''

(क़ुरआन, 102:8)

❑ मैं सही मार्ग पर कैसे रह सकता हूँ?

''और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे सम्बन्ध में पूछें, तो मैं तो निकट ही हूँ, पुकारनेवाले की पुकार का उत्तर देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है, तो उन्हें चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझपर ईमान रखें, ताकि वे सीधा मार्ग पा लें।''

(क़ुरआन, 2:186)

❑ मेरे लिए ख़ुदा की निशानियाँ कहाँ हैं?

''और धरती में विश्वास करनेवालों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं, और स्वयं तुम्हारे अपने आप में भी। तो क्या तुम देखते नहीं?''

(क़ुरआन, 51:20-21)

❑ मेरा वास्तविक घर कौन-सा है?

"और यह सांसारिक जीवन तो केवल दिल का बहलावा और खेल है, निस्संदेह पश्चात्वर्ती घर (का जीवन) ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होता कि वे जानते।" (क़ुरआन, 29:64)

❑ अल्लाह मेरा इम्तिहान कैसे लेता है?

"और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुहारी सन्तान परीक्षा-सामग्री हैं और यह कि ख़ुदा के पास बड़ा प्रतिदान है।" (क़ुरआन, 8:28)

"तुम्हारे माल और तुम्हारी सन्तान तो केवल आज़माइश हैं, और ख़ुदा ही है जिसके पास बड़ा प्रतिदान है।" (क़ुरआन, 64:15)

"और हम अवश्य ही कुछ भय से, और कुछ भूख से, और कुछ जान-माल और पैदावार की कमी से तुम्हारी परीक्षा लेंगे। और धैर्य से काम लेनेवालों को शुभ-सूचना दे दो।" (क़ुरआन, 2:155)

❑ मुझे किन लोगों से ईर्ष्या न करनी चाहिए?

"जो कुछ सुख-सामग्री हमने उनमें से विभिन्न प्रकार के लोगों को दी है, तुम उसपर अपनी आँखें न पसारो और न उनपर दुखी हो।"

(क़ुरआन, 15:88)

❑ मेरे सभी अच्छे काम बेकार कब हो सकते हैं?

"जिन लोगों ने इसके पश्चात् कि मार्ग उनपर स्पष्ट हो चुका था, इंकार किया और ख़ुदा के मार्ग से रोका और रसूल का विरोध किया, वे ख़ुदा को कदापि कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, बल्कि वही उनका सब किया-कराया उनकी जान को लागू कर देगा।" (क़ुरआन, 47:32)

❑ मुझे वास्तविक हानि कब हो सकती है?

"क्या हम तुम्हें उन लोगों की ख़बर दें, जो अपने कर्मों की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठानेवाले हैं? ये वे लोग हैं जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में अकारथ गया और वे यही समझते हैं कि वे बहुत अच्छा कर्म कर रहे हैं। यही

वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों का और उससे मिलन का इंकार किया। अत: उनके कर्म जान को लागू हुए, तो हम क़ियामत के दिन उन्हें कोई वज़न न देंगे। उनका बदला वही जहन्नम है, इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र की नीति अपनाई और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया। निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके आतिथ्य के लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे।'' (क़ुरआन, 18:103-107)

❑ मुझे अपने शत्रु के साथ कैसा बर्ताव रखना चाहिए?

''ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा के लिए ख़ूब उठनेवाले, इंसाफ़ की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इंसाफ़ करना छोड़ दो। इंसाफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। ख़ुदा का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा को उसकी ख़बर है।'' (क़ुरआन, 5:8)

❑ मुझपर औरतों का कितना हक़ है?

''और उन पत्नियों के सामान्य नियम के अनुसार वैसे ही अधिकार हैं, जैसी उनपर ज़िम्मेदारियाँ डाली गई हैं। और पतियों को उनपर एक दर्जा प्राप्त है। ख़ुदा अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।'' (क़ुरआन, 2:228)

❑ ख़ुदा ने मुझसे किस चीज़ का वादा किया है?

''मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से ख़ुदा ने ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे और सदाबहार बाग़ों में पवित्र निवास गृहों का (भी वादा है) और ख़ुदा की प्रसन्नता और रज़ामन्दी का, जो सबसे बढ़कर है। यही सबसे बड़ी सफलता है।'' (क़ुरआन, 9:72)

❑ मैं किसी चीज़ के पाने या खोने पर क्या न करूँ?

''जो मुसीबत भी धरती में आती है और तुम्हारे अपने ऊपर, वह अनिवार्यत: एक किताब में अंकित है, इससे पहले कि हम उसे अस्तित्व में लाएँ—निश्चय ही यह ख़ुदा के लिए आसान है—(यह बात तुम्हें इसलिए बता दी गई) ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे

और न उसपर फूल जाओ जो उसने तुम्हें प्रदान की हो। ख़ुदा किसी इतरानेवाले, बड़ाई जतानेवाले को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 57:22-23)

❑ मैं स्वयं को और अपने घरवालों को विशेष तौर पर किस चीज़ से बचाऊँ?

"ऐ ईमान लानेवालो! अपने आपको और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, जिसपर कठोर स्वभाव के ऐसे बलशाली फ़रिश्ते नियुक्त होंगे जो ख़ुदा की अवज्ञा उसमें नहीं करेंगे जो आदेश भी वह उन्हें देगा, और वे वही करेंगे जिसका उन्हें आदेश दिया जाएगा।" (क़ुरआन, 66:6)

❑ मैं किस चीज़ की चिन्ता करूँ?

"ऐ ईमान लानेवालो! तुमपर अपनी चिन्ता अनिवार्य है, जब तुम रास्ते पर हो, तो जो कोई भटक जाए वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ख़ुदा की ओर तुम सबको लौट जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे होगे।" (क़ुरआन, 5:105)

❑ जब मुझसे कोई गुनाह हो जाए तो मैं ख़ुदा से कैसी आशा रखूँ?

"कह दो : ऐ मेरे बन्दो, जिन्होंने अपने आपपर ज़्यादती की है, ख़ुदा की दयालुता से निराश न हों। निस्संदेह ख़ुदा सारे गुनाहों को क्षमा कर देता है। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है। रुजू हो अपने रब की ओर और उसके आज्ञाकारी बन जाओ, इससे पहले कि तुम पर यातना आ जाए। फिर तुम्हारी सहायता न की जाएगी।" (क़ुरआन, 39:53)

❑ दुनिया में बहुत-से लोग धन के आधार पर मुझसे बढ़कर या मुझसे कमतर क्यों हैं?

"क्या वे तुम्हारे रब की दयालुता को बाँटते हैं? सांसारिक जीवन में उनके जीवन-यापन के साधन हमने उनके बीच बाँटे हैं और हमने उनमें से कुछ लोगों को दूसरे लोगों से श्रेणियों की दृष्टि से उच्च रखा है, ताकि उनमें से वे एक-दूसरे से काम लें। और तुम्हारे रब की दयालुता उससे कहीं उत्तम है जिसे

वे समेट रहे हैं।'' (क़ुरआन, 43:32)

❑ मैं सही रास्ते पर कब होता हूँ?

''अलिफ़० लाम० मीम०। वह किताब यही है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, मार्गदर्शन है डर रखनेवालों के लिए, जो अनदेखे ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उनमें से ख़र्च करते हैं, और जो उस पर ईमान लाते हैं जो तुम पर उतरा और जो तुमसे पहले अवतरित हुआ है और आख़िरत पर वही लोग विश्वास रखते हैं, वही लोग हैं जो अपने रब के सीधे मार्ग पर हैं और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।''

(क़ुरआन, 2:1-5)

''अलिफ़० लाम० मीम०। (जो आयतें उतर रही हैं) वे तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण किताब की आयतें हैं; मार्गदर्शन और दयालुता उत्तमकारों के लिए; जो नमाज़ का आयोजन करते हैं और ज़कात देते हैं और आख़िरत पर विश्वास रखते हैं। वही लोग रब की ओर से सही मार्ग पर हैं और वही सफल हैं।'' (क़ुरआन, 31:1-5)

❑ ख़ुदा मेरी तौबा कब क़बूल करता है?

''उन्हीं लोगों की तौबा क़बूल करना ख़ुदा के ज़िम्मे है जो भावनाओं में बहकर नादानी से कोई बुराई कर बैठें, फिर जल्द ही तौबा कर लें, ऐसे ही लोग हैं जिनकी तौबा ख़ुदा क़बूल करता है। ख़ुदा सब कुछ जाननेवाला तत्त्वदर्शी है।'' (क़ुरआन, 4:17)

''फिर जो व्यक्ति अत्याचार करने के पश्चात् पलट आए और अपने को सुधार ले, तो निश्चय ही वह ख़ुदा की कृपा का पात्र होगा। निस्संदेह, ख़ुदा बड़ा क्षमाशील, दयावान है।'' (क़ुरआन, 5:39)

❑ ख़ुदा मेरी तौबा कब क़बूल नहीं करता ?

''और ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो बुरे काम किए चले जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है तो कहने लगता है: अब मैं तौबा करता हूँ और इसी प्रकार तौबा उसकी भी नहीं है, जो मरते

दम तक इंकार करनेवाले ही रहें। ऐसे लोगों के लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।''
(क़ुरआन, 4:18)

❑ ख़ुदा और रसूल के आदेशों को सुनकर मुझे क्या कहना चाहिए?

''मोमिनों की बात तो बस यह होती है कि जब ख़ुदा और उसके रसूल की ओर बुलाए जाएँ, ताकि वह (रसूल) उनके बीच फ़ैसला करे, तो वे कहें: 'हमने सुना और आज्ञापालन किया।' और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।''
(क़ुरआन, 24:51)

❑ ख़ुदा का आज्ञापालन करने पर मुझे क्या मिलेगा?

''ये ख़ुदा की निश्चित की हुई सीमाएँ हैं। जो कोई ख़ुदा और उसके रसूल के आदेशों का पालन करेगा, उसे ख़ुदा ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वह सदैव रहेगा और यही बड़ी सफलता है।''
(क़ुरआन, 4:13)

''जो ख़ुदा और रसूल की आज्ञा का पालन करता है, तो ऐसे ही लोग उन लोगों के साथ हैं जिनपर ख़ुदा की कृपादृष्टि रही है— वे नबी, सिद्दीक़, शहीद और अच्छे लोग हैं। और वे कितने अच्छे साथी हैं।''
(क़ुरआन, 4:69)

❑ आख़िरत में सफलता पाने के लिए मुझे कितनी कोशिश करनी चाहिए?

''और जो आख़िरत चाहता हो उसके लिए ऐसा प्रयास भी करे जैसा कि उसके लिए प्रयास करना चाहिए और वह हो मोमिन, तो ऐसे ही लोग हैं जिनके प्रयास की क़द्र की जाएगी।''
(क़ुरआन, 17:19)

❑ क़ुरआन पढ़ते समय मुझे क्या करना चाहिए?

''अत: जब तुम क़ुरआन पढ़ने लगो तो फिटकारे हुए शैतान से बचने के लिए ख़ुदा की पनाह माँग लिया करो। उसका तो उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।''
(क़ुरआन, 16:98-99)

❑ मेरे प्रयास कब बरबाद न होंगे?

"फिर जो अच्छे कर्म करेगा, शर्त यह कि वह मोमिन हो, तो उसके प्रयास की उपेक्षा न होगी। हम तो उसके लिए उसे लिख रहे हैं।"

(क़ुरआन, 21:94)

❑ इस जीवन रूपी इम्तिहान में मेरा व्यवहार कैसा होना चाहिए?

"तुम्हारे माल और तुम्हारे प्राण में तुम्हारी परीक्षा होकर रहेगी और तुम्हें उन लोगों से, जिन्हें तुमसे पहले किताब प्रदान की गई थी और उन लोगों से, जिन्होंने 'शिर्क' किया, बहुत-सी कष्टप्रद बातें सुननी पड़ेंगी। परन्तु यदि तुम जमे रहे और (ख़ुदा का) डर रखा, तो यह उन कर्मों में से है जो आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।" (क़ुरआन, 3:186)

❑ मुझे दोगुना सवाब कब मिलता है?

"ये वे लोग हैं जिन्हें उनका प्रतिदान दोगुना कर दिया जाएगा, क्योंकि वे जमे रहे और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ रोज़ी हमने उन्हें दी है, उसमें से ख़र्च (दान) करते हैं।" (क़ुरआन, 28:54)

❑ मैं किन कामों पर ख़ुशख़बरी सुनने का हक़दार हो सकता हूँ?

"उसी के आज्ञाकारी बनकर रहो और विनम्रता अपनानेवालों को शुभ सूचना दे दो। ये वे लोग हैं कि जब ख़ुदा को याद किया जाता है तो उनके दिल दहल जाते हैं और जो मुसीबत उन पर आती है उस पर धैर्य से काम लेते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।" (क़ुरआन, 22:34-35)

❑ मुझे किससे नहीं डरना चाहिए?

"तुम लोगों से न डरो, बल्कि मुझ ही से डरो और मेरी आयतों के बदले थोड़ा मूल्य प्राप्त करने का मामला न करना। जो लोग उस विधान के अनुसार फ़ैसला न करें, जिसे ख़ुदा ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग विधर्मी हैं।"

(क़ुरआन, 5:44)

"वह तो शैतान है जो अपने मित्रों को डराता है। अतः तुम उनसे न डरो,

बल्कि मुझी से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो।'' (क़ुरआन, 3:175)

❑ मैं सही रास्ता कैसे पा सकता हूँ?

''ख़ुदा का आज्ञापालन करो और उसके रसूल का कहा मानो। परन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो उसपर तो बस वही ज़िम्मेदारी है जिसका बोझ उसपर डाला गया है, और तुम उसके ज़िम्मेदार हो जिसका बोझ तुमपर डाला गया है। और यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे तो मार्ग पा लोगे। और रसूल पर तो बस साफ़-साफ़ (संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है।''

(क़ुरआन, 24:54)

❑ मुझे बुरा ख़याल आए तो मैं क्या करूँ?

''जो डर रखते हैं, उन्हें जब शैतान की ओर से कोई ख़याल छू जाता है, तो वे चौंक उठते हैं। फिर वे साफ़ देखने लगते हैं। और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींच लिए जाते हैं, फिर वे कोई कमी नहीं करते।''

(क़ुरआन, 7:201-202)

❑ मुझे किस पर भरोसा करना चाहिए?

''(तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो ख़ुदा की ओर से ही बड़ी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो ये सब तुम्हारे पास से छँट जाते। अत: उन्हें क्षमा कर दो और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो। और मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो। फिर जब तुम्हारे संकल्प किसी सम्मति पर सुदृढ़ हो जाएँ तो ख़ुदा पर भरोसा करो। निस्संदेह ख़ुदा को वे लोग प्रिय हैं जो उसपर भरोसा करते हैं।'' (क़ुरआन, 3:159.)

''उनके रसूलों ने उनसे कहा : हम तो वास्तव में बस तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, किन्तु ख़ुदा अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है एहसान करता है और यह हमारा काम नहीं कि तुम्हारे सामने कोई प्रमाण ले आएँ। यह तो बस ख़ुदा के आदेश के पश्चात ही संभव है; और ख़ुदा ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए। आख़िर हमें क्या हुआ है कि हम ख़ुदा पर भरोसा न करें, जबकि उसने हमें हमारे मार्ग दिखाए हैं? तुम हमें जो तकलीफ़ पहुँचा रहे

हो उसके मुक़ाबले में हम धैर्य से काम लेंगे। भरोसा करनेवालों को तो ख़ुदा ही पर भरोसा करना चाहिए।" (क़ुरआन, 14:11-12)

"अतएव हमने तुम्हें एक ऐसे समुदाय में भेजा है जिससे पहले कितने ही समुदाय गुज़र चुके हैं, ताकि हमने तुम्हारी ओर जो प्रकाशना की है, उसे उनको सुना दो, यद्यपि वे रहमान (दयावान प्रभु) के साथ इनकार की नीति अपनाए हुए हैं। कह दो : वही मेरा पालनहार प्रभु है। उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मुझे पलटकर जाना है।"
(क़ुरआन, 13:30)

"और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जिसका उसे गुमान भी न होगा। जो ख़ुदा पर भरोसा करे तो वह उसके लिए काफ़ी है। निश्चय ही ख़ुदा अपना काम पूरा करके रहता है। ख़ुदा ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा नियत कर रखा है।"
(क़ुरआन, 65:3)

"ख़ुदा ही का है जो कुछ आकाशों और धरती में छिपा है, और हर मामला उसी की ओर पलटता है। अतः उसी की बन्दगी करो और उसी पर भरोसा रखो। जो कुछ तुम करते हो, उससे तुम्हारा रब बेख़बर नहीं है।"
(क़ुरआन, 11:123)

"उसने यह भी कहा : ऐ मेरे बेटो! एक द्वार से प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना, यद्यपि मैं ख़ुदा के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता। आदेश तो बस ख़ुदा ही का चलता है। उसी पर मैंने भरोसा किया और भरोसा करनेवालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।"
(क़ुरआन, 12:67)

"और वे दावा तो आज्ञापालन का करते हैं, परन्तु जब तुम्हारे पास से हटते हैं तो उनमें एक गिरोह अपने कथन के विपरीत रात में षड्यंत्र करता है। जो कुछ वे षड्यंत्र करते हैं, अल्लाह उसे लिख रहा है। तो तुम उनसे रुख़ फेर लो और ख़ुदा पर भरोसा रखो, और ख़ुदा का कार्यसाधक होना काफ़ी है।"
(क़ुरआन, 4:81)

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा के उस अनुग्रह को याद करो जो उसने तुमपर

किया है, जबकि कुछ लोगों ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाने का निश्चय कर लिया था तो उसने उनके हाथ तुमसे रोक दिए। ख़ुदा का डर रखो, और ईमानवालों को ख़ुदा ही पर भरोसा करना चाहिए।'' (क़ुरआन, 5:11)

''यदि तुम उनसे पूछो कि आकाशों और धरती को किसने पैदा किया?' तो वे अवश्य कहेंगे : 'ख़ुदा ने।' कहो : 'तुम्हारा क्या विचार है? यदि ख़ुदा मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचानी चाहे तो क्या ख़ुदा से हटकर जिनको तुम पुकारते हो वे उसकी पहुँचाई हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं? या वह मुझपर कोई दयालुता दर्शानी चाहे तो क्या वे उसकी दयालुता को रोक सकते हैं?' कह दो: 'मेरे लिए ख़ुदा काफ़ी है। भरोसा करनेवाले उसी पर भरोसा करते हैं।''

(क़ुरआन, 39:38)

❑ मेरे दिल की बेचैनी कैसे दूर हो सकती है?

''ऐसे ही लोग हैं जो ईमान लाए और जिनके दिलों को ख़ुदा के स्मरण से आराम और चैन मिलता है। सुन लो, ख़ुदा के स्मरण से दिलों को संतोष प्राप्त हुआ करता है।'' (क़ुरआन, 13:28)

❑ मेरा बुरा साथी कौन है?

''वे जो स्वयं कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी पर उभारते हैं और ख़ुदा ने अपने उदार दान से जो कुछ उन्हें दे रखा होता है, उसे छिपाते हैं, तो हमने अकृतज्ञ लोगों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है। वे जो अपने माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं, न ख़ुदा पर ईमान रखते हैं, न अंतिम दिन पर, और जिस किसी का साथी शैतान हुआ, तो वह बहुत बुरा साथी है।'' (क़ुरआन, 4:37-38)

❑ क्या कोई बुरा काम करके मैं ख़ुदा से बच सकता हूँ?

''उन लोगों ने, जो बुरे कर्म करते हैं, यह समझ रखा है कि वे हमारे क़ाबू से बाहर निकल जाएँगे? बहुत बुरा है जो फ़ैसला वे कर रहे हैं।''

(क़ुरआन, 29:4)

❑ क्या मैं अपने ऊपर किए गए अन्याय का बदला ले सकता हूँ?

"भलाई और बुराई समान नहीं हैं। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच वैर पड़ा हुआ था, जैसे वह कोई घनिष्ट मित्र है।"

(क़ुरआन, 41:34)

"और जो ऐसे हैं कि जब उनपर ज़्यादती होती है तो वे प्रतिशोध लेते हैं। बुराई का बदला वैसी ही बुराई है किन्तु जो क्षमा कर दे और सुधार करे तो उसका बदला ख़ुदा के ज़िम्मे है। निश्चय ही वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। और जो कोई अपने ऊपर ज़ुल्म होने के पश्चात बदला ले ले, तो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं। इलज़ाम तो केवल उनपर आता है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और धरती में नाहक़ ज़्यादती करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दुखद यातना है। किन्तु जिसने धैर्य से काम लिया और क्षमा कर दिया तो निश्चय ही वह उन कामों में से है जो (सफलता के लिए) आवश्यक ठहरा दिए गए हैं।"

(क़ुरआन, 42:39-43)

"और यदि तुम बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हें कष्ट पहुँचा हो, किन्तु यदि तुम सब्र करो तो निश्चय ही यह सब सब्र करनेवालों के लिए ज़्यादा अच्छा है।" (क़ुरआन, 16:126)

❑ अगर कोई मेरे साथ बुराई करे और मैं उसे माफ़ कर दूँ तो मुझे क्या मिलेगा?

"ये वे लोग हैं जिन्हें उनका प्रतिदान दुगुना दिया जाएगा, क्योंकि वे जमे रहे और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ रोज़ी हमने उन्हें दी है, उसमें से ख़र्च करते हैं।" (क़ुरआन, 28:54)

"और जिन लोगों ने अपने रब की प्रसन्नता की चाह में धैर्य से काम लिया और नमाज़ क़ायम की और जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसमें से खुले और छिपे ख़र्च किया, और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। वही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत के घर का अच्छा परिणाम है।"

(क़ुरआन, 13:22)

❑ मैं लोगों को ख़ुदा के दीन की तरफ़ कैसे बुलाऊँ?

"अपने रब के मार्ग की ओर तत्त्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो। तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और वह उन्हें भी भली-भाँति जानता है जो मार्ग पर हैं।" (क़ुरआन, 16:125)

❑ मुझे क्या चीज़ छोड़नी चाहिए?

"और उसे न खाओ जिसपर ख़ुदा का नाम न लिया गया हो। निश्चय ही वह तो आज्ञा का उल्लंघन है। शैतान तो अपने मित्रों के दिलों में डालते हैं कि वे तुमसे झगड़ें। यदि तुमने उनकी बात मान ली तो निश्चय ही तुम बहुदेववादी होगे।" (क़ुरआन, 6:121)

❑ अगर मैं ख़ुदा का आज्ञापालन न करूँ तो क्या होगा?

"परन्तु जो ख़ुदा और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करेगा उसे ख़ुदा आग में डालेगा, जिसमें वह सदैव रहेगा। और उसके लिए अपमानजनक यातना है।" (क़ुरआन, 4:14)

❑ जब मुझे ग़ुस्सा आए तो मुझे क्या करना चाहिए?

"(ख़ुदा के प्यारे बन्दे वे हैं) जो बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं और जब उन्हें (किसी पर) क्रोध आता है तो वे क्षमा कर देते हैं।" (क़ुरआन, 42:37)

❑ मुझे किन चीज़ों से ख़ुदा की शरण लेनी चाहिए?

"कहो : मैं शरण लेता हूँ प्रकट करनेवाले रब की, जो कुछ भी उसने पैदा किया उसकी बुराई से, और अंधेरे की बुराई से जबकि वह घुस आए, और गाँठों में फूँक मारनेवालों (या फूँक मारनेवालियों) की बुराई से, और ईर्ष्यालु की बुराई से, जब वह ईर्ष्या करे।" (क़ुरआन, 113:1-5)

"कहो : मैं शरण लेता हूँ मनुष्यों के रब की, मनुष्यों के सम्राट की, मनुष्यों के उपास्य की, वसवसा डालनेवाले, खिसक जानेवाले की बुराई से, जो मनुष्यों के सीनों (दिलों) में वसवसा डालता है, जो जिन्नों में से भी होता

है और मनुष्यों में से भी।'' (क़ुरआन, 114:1-6)

❑ मुझे किस का कहना न मानना चाहिए?

''अतः तुम झुठलानेवालों का कहना न मानना। वे चाहते हैं कि तुम ढीले पड़ो, इस कारण वे चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं। तुम किसी भी ऐसे व्यक्ति की बात न मानना जो बहुत क़समें खानेवाला, हीन है, कचोके लगाता, चुग़लियाँ खाता फिरता है, भलाई से रोकता है, सीमा का उल्लंघन करनेवाला, हक़ मारनेवाला है, क्रूर है, फिर अधम भी।''

(क़ुरआन, 68:8-13)

❑ क्या मुझे अच्छे या बुरे कार्य करने के असीमित अवसर प्राप्त होंगे?

''हमने तुम्हें जो कुछ दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुममें से किसी की मृत्यु हो जाए और उस समय वह कहने लगे : ऐ मेरे रब! तूने मुझे कुछ थोड़े समय तक और मुहलत क्यों न दी कि मैं सदक़ा (दान) करता (मुझे मुहलत दे कि मैं सदक़ा करूँ) और अच्छे लोगों में शामिल हो जाऊँ।''

(क़ुरआन, 63:10)

❑ क्या मेरे गुनाहों का बोझ कोई दूसरा व्यक्ति उठा सकता है?

''कहो : जो अपराध हमने किए, उसकी पूछ तुमसे न होगी और न उसकी पूछ हमसे होगी जो तुम कर रहे हो।'' (क़ुरआन, 34:25)

''कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। और यदि कोई बोझ से दबा हुआ व्यक्ति अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से कुछ भी न उठाया जाएगा, यद्यपि वह निकट का सम्बन्धी ही क्यों न हो। तुम तो केवल सावधान कर रहे हो। जो परोक्ष में रहते हुए अपने रब से डरते हैं और नमाज़ के पाबन्द हो चुके हैं (उनकी आत्मा का विकास हो गया)। और जिसने स्वयं को विकसित किया वह अपने ही भले के लिए अपने आपको विकसित करेगा। और पलटकर जाना तो ख़ुदा ही की ओर है।''

(क़ुरआन, 35:18)

❑ क्या किसी व्यक्ति के गुनाह का प्रभाव मुझपर पड़ सकता है?

"जिस किसी ने अच्छा कर्म किया तो अपने ही लिए और जिस किसी ने बुराई की तो उसका वबाल भी उसी पर पड़ेगा। वास्तव में तुम्हारा रब अपने बन्दों पर तनिक भी ज़ुल्म नहीं करता।" (क़ुरआन, 41:46)

"निश्चय ही हमने लोगों के लिए हक़ के साथ तुमपर किताब अवतरित की है। अत: जिसने सीधा मार्ग ग्रहण किया तो अपने ही लिए, और जो भटका, तो वह भटककर अपने ही को हानि पहुँचाता है। तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं हो।" (क़ुरआन, 39:41)

"जो कोई अच्छा कर्म करता है तो अपने ही लिए करेगा और जो कोई बुरा कर्म करता है तो उसका वबाल उसी पर होगा। फिर तुम अपने रब की ओर लौटाए जाओगे।" (क़ुरआन, 45:15)

❑ क्या जन्नत में मेरी सभी इच्छाएँ पूरी हो सकती हैं?

"हम सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे सहचर मित्र हैं और आख़िरत में भी। और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब कुछ है, जिसकी इच्छा तुम्हारे जी को होगी। और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा, जिसकी तुम माँग करोगे।" (क़ुरआन, 41:31)

❑ मुझे अपने जीवन में किसे नमूना बनाना चाहिए?

"निस्संदेह तुम्हारे लिए ख़ुदा के रसूल में एक उत्तम आदर्श है अर्थात् उस व्यक्ति के लिए जो ख़ुदा और अंतिम दिन की आशा रखता हो और ख़ुदा को अधिक याद करे।" (क़ुरआन, 33:21)

❑ ख़ुदा की दृष्टि में मेरी कामयाबी से क्या मतलब है?

"प्रत्येक जीव मृत्यु का मज़ा चखनेवाला है, और तुम्हें तो क़ियामत के दिन पूरा-पूरा बदला दे दिया जाएगा। अत: जिसे आग (जहन्नम) से हटाकर जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, वह सफल रहा। रहा सांसारिक जीवन, तो वह माया-सामग्री के सिवा कुछ भी नहीं।" (क़ुरआन, 3:185)

❑ क्या मेरा ख़ुदा से कोई सौदा हुआ है?

"निस्संदेह ख़ुदा ने ईमानवालों से उनके प्राण और उनके माल इसके बदले में ख़रीद लिए हैं कि उनके लिए जन्नत है।" (क़ुरआन, 9:111)

❑ मेरे कार्य सही कैसे हो सकते हैं?

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा का डर रखो और बात कहो ठीक सधी हुई। वह तुम्हारे कर्मों को सँवार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा।" (क़ुरआन, 33:70-71)

❑ मेरे लिए सबसे बड़ी कामयाबी क्या है?

"मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से ख़ुदा ने ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे और सदाबहार बाग़ों में पवित्र गृहों का (भी वादा है) और ख़ुदा की प्रसन्नता और रज़ामन्दी का, जो सबसे बढ़कर है। यही सबसे बड़ी सफलता है।" (क़ुरआन, 9:72)

❑ ख़ुदा से डरने पर आख़िरत में मुझे क्या लाभ होगा?

"जो कोई ख़ुदा का डर रखेगा उसके लिए वह (परेशानी से) निकलने की राह पैदा कर देगा। और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जिसका उसे गुमान भी न होगा। जो ख़ुदा पर भरोसा करे तो वह उसके लिए काफ़ी है। निश्चय ही ख़ुदा अपना काम पूरा करके रहता है। ख़ुदा ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा नियत कर रखा है।" (क़ुरआन, 65:2-3)

"निस्संदेह डर रखनेवाले निश्चिन्तता की जगह होंगे, बाग़ों और स्रोतों में बारीक और गाढ़े रेशम के वस्त्र पहने हुए, एक दूसरे के आम्‍ने-सामने उपस्थित होंगे। ऐसा ही उनके साथ मामला होगा। और हम साफ़ गोरी, बड़ी आँखोंवाली स्त्रियों से उनका विवाह कर देंगे। वे वहाँ निश्चिन्तता के साथ हर प्रकार के स्वादिष्ट फल मँगवाते होंगे। वहाँ वे मृत्यु का मज़ा कभी न चखेंगे। बस पहली मृत्यु जो हुई, सो हुई। और उसने उन्हें भड़कती हुई आग की यातना से बचा लिया। यह सब तुम्हारे रब के विशेष उदार अनुग्रह के कारण होगा, वही बड़ी सफलता है।" (क़ुरआन, 44:51-57)

"और जो कोई ख़ुदा और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे और ख़ुदा से डरे और उसकी सीमाओं का ख़याल रखे, तो ऐसे ही लोग सफल हैं।" 'कुरआन, 24:52)

"और बद्र में (बद्र की लड़ाई में) ख़ुदा तुम्हारी सहायता कर भी चुका था, जबकि तुम बहुत कमज़ोर हालत में थे। अतः ख़ुदा ही का डर रखो, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।" (क़ुरआन, 3:123)

❑ ईमान लाने के अतिरिक्त मुझे और क्या करना चाहिए?

"अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें उनका रब अपनी दयालुता में दाख़िल करेगा, यही स्पष्ट सफलता है।"

(क़ुरआन, 45:30)

"निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वही है बड़ी सफलता।"

(क़ुरआन, 85:11)

❑ ईमान लाने के बाद भी क्या ख़ुदा मेरा इम्तिहान लेगा?

"क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे इतना कह देने मात्र से छोड़ दिए जाएँगे कि 'हम ईमान लाए' और उनकी परीक्षा न की जाएगी? हालाँकि हम उन लोगों की परीक्षा कर चुके हैं जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं। अल्लाह तो उन लोगों को मालूम करके रहेगा, जो सच्चे हैं। और वह झूठों को भी मालूम करके रहेगा।" (क़ुरआन, 29:2-3)

❑ मुझे किस चीज़ को पाने के लिए बहुत अधिक कोशिश करनी चाहिए?

"और ख़ुदा और रसूल के आज्ञाकारी बनो, ताकि तुमपर दया की जाए। और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार है जो डर रखते हैं। वे लोग जो ख़ुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में ख़र्च करते रहते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को माफ़ करते हैं— और ख़ुदा को भी ऐसे

लोग प्रिय हैं, जो अच्छा कर्म करते हैं। और जिनका हाल यह है कि ज़ब वे कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, तो तत्काल ख़ुदा उन्हें याद आ जाता है और वे अपने गुनाहों की क्षमा चाहने लगते हैं— और ख़ुदा के अतिरिक्त कौन है, जो गुनाहों को क्षमा कर सके? और जानते-बूझते वे अपने किए पर अड़े नहीं रहते। उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का।''

(क़ुरआन, 3:132-136)

❑ वे कौन से काम हैं जिन्हें करने से मैं ख़ुदा के विशेष बन्दों (उपासकों) में शामिल हो सकता हूँ?

''रहमान के (प्रिय) बन्दे वही हैं जो धरती पर नम्रतापूर्वक चलते हैं और जब जाहिल उनके मुँह आएँ तो कह देते हैं : तुमको सलाम। जो अपने रब के आगे सजदे में और खड़े रातें गुज़ारते हैं। जो कहते हैं कि : ऐ हमारे रब! जहन्नम की यातना को हमसे हटा दे। निश्चय ही उसकी यातना चिमटकर रहनेवाली है। निश्चय ही वह जगह ठहरने की दृष्टि से भी बुरी है और स्थान की दृष्टि से भी। जो ख़र्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और न ही तंगी से काम लेते हैं बल्कि वे इनके बीच मध्य मार्ग पर रहते हैं। जो ख़ुदा के साथ किसी दूसरे इष्ट-पूज्य को नहीं पुकारते और न नाहक़ किसी जीव को जिस (के क़त्ल) को ख़ुदा ने हराम किया है, क़त्ल करते हैं। और न व्यभिचार करते हैं— जो कोई यह काम करे वह गुनाह के वबाल से दो-चार होगा। क़ियामत के दिन उसकी यातना बढ़ती चली जाएगी। और वह उसी में अपमानित होकर स्थायी रूप से पड़ा रहेगा। सिवाय उसके जो पलट आया और ईमान लाया और अच्छा कर्म किया तो ऐसे लोगों की बुराइयों को ख़ुदा भलाइयों से बदल देगा। और ख़ुदा है भी अत्यन्त क्षमाशील दयावान। और जिसने तौबा की और अच्छा कर्म किया तो निश्चय ही वह ख़ुदा की ओर पलटता है, जैसा कि पलटने का हक़ है। जो किसी झूठ और असत्य में सम्मिलित नहीं होते और जब किसी व्यर्थ के कामों के पास से गुज़रते हैं, तो सज्जनतापूर्वक गुज़र जाते हैं, जो ऐसे हैं कि जब उनके रब की आयतों के द्वारा उन्हें याददिहानी कराई

जाती है तो उन (आयतों) पर वे अंधे और बहरे होकर नहीं गिरते। और जो कहते हैं : ऐ हमारे रब! हमें हमारी अपनी पत्नियों और हमारी अपनी संतान से आंखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें डर रखनेवालों का नायक बना दे। यही वे लोग हैं जिन्हें, इसके बदले में कि वे जमे रहे, उच्च भवन प्राप्त होगा, तथा ज़िन्दाबाद और सलाम से उनका वहाँ स्वागत होगा। वहाँ वे सदैव रहेंगे। बहुत ही अच्छी है वह ठहरने की जगह और स्थान। कह दो : मेरे रब को तुम्हारी कोई परवाह नहीं अगर (उसको) न पुकारो। अब जबकि तुम झुठला चुके हो, तो शीघ्र ही वह चीज़ चिमट जानेवाली होगी।" (क़ुरआन, 25:63-77)

❑ अनजाने में की गई ग़लती पर क्या मुझे गुनाह होगा?

"उन्हें उनके बापों का बेटा कह कर पुकारो। ख़ुदा के यहाँ यही अधिक न्यायसंगत बात है। और यदि तुम उनके बापों को न जानते हो, तो धर्म में वे तुम्हारे भाई तो हैं ही और तुम्हारे सहचर भी। इस सिलसिले में तुमसे जो ग़लती हुई हो उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं, किन्तु जिसका संकल्प तुम्हारे दिलों ने कर लिया, उसकी बात और है। वास्तव में ख़ुदा अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।" (क़ुरआन, 33:5)

❑ मुझे किस काम में लोगों से होड़ (Competition) करनी चाहिए?

"प्रत्येक की एक ही दिशा है, वह उसी की ओर मुख किए हुए है, तो तुम भलाइयों में अग्रसरता दिखाओ। जहाँ कहीं भी तुम होगे ख़ुदा तुम सबको एकत्र करेगा। निस्संदेह ख़ुदा को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।"

(क़ुरआन, 2:148)

❑ क्या मुझे ख़ुदा की रहमत से निराश होना चाहिए?

"ऐ मेरे बेटो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की टोह लगाओ और ख़ुदा की सदयता से निराश न हो। ख़ुदा की सदयता से तो केवल कुफ़्र करनेवाले निराश होते हैं।" (क़ुरआन, 12:87)

"उन्होंने कहा : हम तुम्हें सच्ची शुभ सूचना दे रहे हैं, तो तुम निराश न हो। उसने कहा : अपने रब की दयालुता से पथभ्रष्टों के सिवा और कौन निराश होगा?" (क़ुरआन, 15:55-56)

❑ कौन-सी चीज़ मुझे ख़ुदा की याद से रोक सकती है?

"ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हारे माल तुम्हें ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल न कर दें और न तुम्हारी संतान ही। जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 63:9)

❑ मुझे किस काम में विशेष तौर पर सुस्ती न करनी चाहिए?

"जा तू और तेरा भाई मेरी निशानियों के साथ, और मेरी याद में ढीले मत पड़ना।" (कुरआन, 20:42)

❑ मैं ख़ुदा को याद न करूँ तो क्या होगा?

"और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन संकीर्ण होगा और क़ियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएँगे। वह कहेगा : ऐ मेरे रब! तूने मुझे अंधा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखोंवाला था? वह (ख़ुदा) कहेगा : इसी प्रकार (तू संसार में अंधा रहा था)। तेरे पास मेरी आयतें आई थीं, तो तूने उन्हें भुला दिया था। उसी प्रकार आज तुझे भुलाया जा रहा है।"

(क़ुरआन, 20:124-126)

❑ ख़ुदा मुझे कब याद करेगा?

"अतः तुम मुझे याद रखो, मैं भी तुम्हें याद रखूँगा। और मेरा आभार स्वीकार करते रहना, मेरे प्रति अकृतज्ञता न दिखलाना।"

(क़ुरआन, 2:152)

❑ मैं ग़लत कामों से कैसे बच सकता हूँ?

"उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गई है, और नमाज़ का आयोजन करो। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है। और अल्लाह का याद करना तो बहुत बड़ी चीज़ है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम रचते और बनाते हो।" (क़ुआन, 29:45)

❑ क्या मैं अपनी पत्नी को मह्र देने से बच सकता हूँ?

"और स्त्रियों को उनके मह्र ख़ुशी से अदा करो। हाँ, यदि वे अपनी ख़ुशी से उसमें से तुम्हारे लिए छोड़ दें तो उसे तुम अच्छा और पाक समझकर

खाओ।" (क़ुरआन, 4:4)

❑ **मैं ख़ुदा से कैसे दोस्ती कर सकता हूँ?**

"कह दो : यदि तुम ख़ुदा से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, ख़ुदा भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। ख़ुदा बड़ा क्षमाशील, दयावान है।" (क़ुरआन, 3:31)

❑ **क्या ख़ुदा मुझे देख रहा है?**

"अत: शीघ्र ही तुम याद करोगे, जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूँ। मैं तो अपना मामला ख़ुदा को सौंपता हूँ। निस्संदेह ख़ुदा की दृष्टि सब बन्दों पर है।" (क़ुरआन, 40:44)

❑ **मेरे लिए ख़ुदा से क्षमा माँगने का सबसे उत्तम समय कौन-सा है?**

"और वही प्रात: की घड़ियों में क्षमा की प्रार्थना करते थे।" (क़ुरआन, 51:18)

❑ **नादानी में मुझसे कोई बुरा काम हो जाए तो मैं क्या करूँ?**

"और जब तुम्हारे पास वे लोग आएँ, जो हमारी आयतों को मानते हैं, तो कहो : सलाम हो तुमपर! तुम्हारे रब ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि तुम में से जो कोई नासमझी से कोई बुराई कर बैठे, फिर उसके पश्चात् पलट आए और अपना सुधार कर ले तो यह है कि वह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।" (क़ुरआन, 6:54)

❑ **मेरे जीवन में तंगी (विभिन्न चीज़ों में कमी) क्यों होती है?**

"और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन संकीर्ण होगा और क़ियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएँगे।" (क़ुरआन, 20:124)

❑ **मैं लोगों से कैसा व्यवहार न करूँ?**

"और लोगों से अपना रुख़ न फेर और न धरती में इतराकर चल। निश्चय ही ख़ुदा किसी अहंकारी, डींग मारनेवाले को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, 31:18)

❑ मुझे किसके साथ रहना चाहिए?

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा का डर रखो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ।" (क़ुरआन, 9:119)

❑ ख़ुदा मेरे इम्तिहान से क्या चाहता है?

"क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे इतना कह देने मात्र से छोड़ दिए जाएँगे कि 'हम ईमान लाए' और उनकी परीक्षा न की जाएगी? हालाँकि हम उन लोगों की परीक्षा कर चुके हैं जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं। ख़ुदा तो उन लोगों को मालूम करके रहेगा, जो सच्चे हैं। और वह झूठों को भी मालूम करके रहेगा।" (क़ुरआन, 29:2-3)

❑ मेरा इम्तिहान विशेष तौर पर किन चीज़ों में होता है?

"और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान परीक्षा-सामग्री हैं और यह कि ख़ुदा के पास बड़ा प्रतिदान है।" (क़ुरआन, 8:28)

❑ क्या मुझे स्वयं को नेक कहना चाहिए?

"वे लोग जो बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचते हैं, यह और बात है कि संयोगवश कोई छोटी बुराई उनसे हो जाए। निश्चय ही तुम्हारा रब क्षमाशीलता में बड़ा व्यापक है। वह तुम्हें उस समय से भली-भाँति जानता है, जबकि उसने तुम्हें धरती से पैदा किया और जबकि तुम अपनी माँओं के पेटों में भ्रूण अवस्था में थे। अत: अपने मन की पवित्रता और निखार का दावा न करो। वह उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है, जिसने डर रखा।"

(क़ुरआन, 53:32)

❑ दुनिया में मेरा जीवन कैसे अच्छा गुज़र सकता है?

"जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे, उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे।" (क़ुरआन, 16:97)

❑ क्या मुझे लोगों का मज़ाक़ (परिहास) उड़ाना चाहिए?

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! न पुरुषों का कोई गिरोह दूसरे पुरुषों की हंसी उड़ाए, संभव है वे उनसे अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, संभव है वे उनसे अच्छी हों, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के पश्चात् अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति बाज़ न आए, तो ऐसे ही व्यक्ति ज़ालिम हैं।" (क़ुरआन, 49:11)

❑ क्या मैं किसी की ग़ीबत (पीठ पीछे निन्दा) कर सकता हूँ?

"ऐ ईमान लानेवालो! बहुत-से गुमानों से बचो, क्योंकि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में पड़ो और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे—क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का मांस खाए? वह तो तुम्हें अप्रिय होगा ही।— और ख़ुदा का डर रखो। निश्चय ही ख़ुदा तौबा क़बूल करनावाला, अत्यन्त दयावान है।"

(क़ुरआन, 49:12)

❑ मुझे किस काम से बचना चाहिए?

"कह दो : आओ, मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे रब ने तुम्हारे ऊपर क्या पाबन्दियाँ लगाई हैं : यह कि किसी चीज़ को उसका साझीदार न ठहराओ और माँ-बाप के साथ सद्व्यवहार करो और निर्धनता के कारण अपनी संतान की हत्या न करो, हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और अश्लील बातों के निकट न जाओ, चाहे वे खुली हुई हों या छुपी हुई हों। और किसी जीव की, जिसे ख़ुदा ने आदरणीय ठहराया है, हत्या न करो। यह और बात है कि न्याय के लिए ऐसा करना पड़े। ये बातें हैं, जिनकी ताकीद उसने तुम्हें की है, शायद कि तुम बुद्धि से काम लो।" (क़ुरआन, 6:151)

❑ मुझे गुप्त परामर्श किस काम में करना चाहिए और किस में नहीं?

"ऐ ईमान लानेवालो! जब तुम आपस में गुप्त वार्ता करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की अवज्ञा की गुप्त वार्ता न करो, बल्कि नेकी और

परहेज़गारी के विषय में आपस में एकान्त वार्ता करो। और ख़ुदा का डर रखो, जिसके पास तुम इकट्ठे होगे।" (क़ुरआन, 58:9)

❑ क्या कभी मुझे शक भी करना चाहिए?

"ऐ ईमान लानेवालो! बहुत-से गुमानों से बचो, क्योंकि कतिपय गुमान गुनाह होते हैं।" (क़ुरआन, 49:12)

❑ बुरे काम मेरे सामने हों तो मुझे क्या करना चाहिए?

"जो किसी झूठ और असत्य में सम्मिलित नहीं होते और जब किसी व्यर्थ के कामों के पास से गुज़रते हैं, तो सज्जनतापूर्वक गुज़र जाते हैं।" (क़ुरआन, 25:72)

❑ मुझे क्या काम करना चाहिए?

"उठो और सावधान करने में लग जाओ। और अपने रब की बड़ाई ही करो। अपने दामन को पाक रखो और गन्दगी से दूर ही रहो। अपनी कोशिशों को अधिक समझकर उसके क्रम को भंग न करो और अपने रब के लिए धैर्य ही से काम लो।" (क़ुरआन, 74:2-7)

❑ जब ख़ुदा की बातों का मज़ाक़ (परिहास) बनाया जा रहा हो तो मुझे क्या करना चाहिए?

"वह 'किताब' में तुमपर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि ख़ुदा की आयतों का इनकार किया जा रहा है और उनका उपहास किया जा रहा है, तो जब तक वे किसी दूसरी बात में न लग जाएँ, उनके साथ न बैठो, अन्यथा तुम भी उन्हीं जैसे होगे। निश्चय ही ख़ुदा कपटाचारियों और इनकार करनेवालों—सबको जहन्नम में एकत्र करनेवाला है।" (क़ुरआन, 4:140)

❑ मुझे कैसे नसीहत व बहस करनी चाहिए?

"अपने रब के मार्ग की ओर तत्त्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो। तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और वह उन्हें भी भली-भाँति जानता है जो मार्ग पर हैं।" (क़ुरआन, 16:125)

❑ मुझे अपने और दूसरों के घर में कैसे प्रवेश करना चाहिए?

"ऐ ईमान लानेवालो! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में प्रवेश न करो, जब तक कि रज़ामंदी हासिल न कर लो और उन घरवालों को सलाम न कर लो। यही तुम्हारे लिए उत्तम है, कदाचित तुम ध्यान रखो। फिर यदि उनमें किसी को न पाओ, तो उनमें प्रवेश न करो जब तक कि तुम्हें अनुमति प्राप्त न हो। और यदि तुमसे कहा जाए कि वापस हो जाओ तो वापस हो जाओ, यही तुम्हारे लिए अधिक अच्छी बात है। ख़ुदा भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम करते हो।" (क़ुरआन, 24:27-28)

❑ जब मैं किसी काम को करने का संकल्प करूँ तो मुझे क्या कहना चाहिए?

"बल्कि ख़ुदा की इच्छा ही लागू होती है। और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद कर लो और कहो : आशा है कि मेरा रब इससे भी क़रीब सही बात की ओर मार्गदर्शन कर दे।" (क़ुरआन, 18:24)

❑ मुझे अपने धन को कैसे ख़र्च करना चाहिए?

"जो ख़र्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और न ही तंगी से काम लेते हैं, बल्कि वे इनके बीच मध्य मार्ग अपनाते हैं।" (क़ुरआन, 25:67)

"और नातेदारों को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को भी—और फ़िज़ूलख़र्ची न करो।" (क़ुरआन, 17:26)

❑ जब मैं किसी की सहायता न कर सकूँ तो क्या करूँ?

"किन्तु यदि तुम्हें अपने रब की दयालुता की खोज में, जिसकी तुम आशा रखते हो, उनसे कतराना भी पड़े, तो इस दशा में तुम उनसे नर्म बातें करो।" (क़ुरआन, 17:28)

❑ मुझे किसका साथ देना चाहिए और किसका साथ न देना चाहिए?

"हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और हक़ मारने और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग न करो। ख़ुदा का डर रखो, निश्चय ही ख़ुदा बड़ा कठोर दण्ड देनेवाला है।"

(क़ुरआन, 5:2)

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा का डर रखो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ।" (क़ुरआन, 9:119)

❑ मैं जन्नत कब पा सकता हूँ?

"रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए वही जन्नतवाले हैं, वे सदैव उसी में रहेंगे।" (क़ुरआन, 2:82)

❑ लोगों का झगड़ा कैसे निबटाऊँ?

"निस्संदेह हमने यह किताब हक़ के साथ उतारी है, ताकि ख़ुदा ने जो कुछ तुम्हें दिखाया है उसके अनुसार लोगों के बीच फ़ैसला करो। और तुम विश्वासघाती लोगों की ओर से झगड़नेवाले न बनो।" (क़ुरआन, 4:105)

"निश्चय ही ख़ुदा न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो।" (क़ुरआन, 16:90)

"यदि मोमिनों में से दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि उनमें से एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे, तो जो गिरोह ज़्यादती कर रहा हो उससे लड़ो, यहाँ तक कि वह ख़ुदा के आदेश की ओर पलट आए। फिर यदि वह पलट आए तो उनके बीच न्याय के साथ सुलह करा दो, और इंसाफ़ करो। निश्चय ही ख़ुदा इंसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है। मोमिन तो भाई-भाई हैं, अतः अपने दो भाइयों के बीच सुलह करा दो और ख़ुदा का डर रखो, ताकि तुमपर दया की जाए।" (क़ुरआन, 49:9-10)

❑ समाज में विभिन्न ख़ानदानों के होने को मैं क्या समझूँ?

"ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में ख़ुदा के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही ख़ुदा सब कुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है।" (क़ुरआन, 49:13)

❑ दूसरों की चीज़ों के बारे में मेरा व्यवहार कैसा हो?

"ऐ ईमान लानेवालो! जानते-बूझते तुम ख़ुदा और उसके रसूल के साथ विश्वासघात न करना और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करना।"

(क़ुरआन, 8:27)

"ख़ुदा तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को उनके हक़दारों तक पहुँचा दिया करो। और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, तो न्यायपूर्वक फ़ैसला करो। ख़ुदा तुम्हें कितनी अच्छी नसीहत करता है। निस्संदेह, ख़ुदा सब कुछ सुनता-देखता है।" (क़ुरआन, 4:58)

"ऐ ईमान लानेवालो! आपस में एक-दूसरे के माल ग़लत तरीक़े से न खाओ— यह और बात है कि तुम्हारी आपस की रज़ामन्दी से कोई सौदा हो— और न अपनों की हत्या करो। निस्संदेह ख़ुदा तुमपर बहुत दयावान है।" (क़ुरआन, 4:29)

❑ मुझे किस बात पर ख़ुश होना चाहिए?

"कह दो : यह ख़ुदा के अनुग्रह और उसकी दया से है, अतः इसपर उन्हें प्रसन्न होना चाहिए। यह उन सब चीज़ों से उत्तम है, जिनको वे इकट्ठा करने में लगे हुए हैं।" (क़ुरआन, 10:58)

❑ क़ुरआन की मेरे लिए क्या हैसियत है?

"यह लोगों के लिए सूझ के प्रकाशों का पुंज है, और मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।" (क़ुरआन, 45:20)

❑ क्या मेरे लिए क़ुरआन को समझना कठिन है?

"और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करनेवाला?" (क़ुरआन, 54:17)

❑ मेरे दिल में नर्मी कैसे आ सकती है?

"क्या उन लोगों के लिए, जो ईमान लाए, अभी वह समय नहीं आया कि उनके दिल ख़ुदा की याद के लिए और जो सत्य अवतरित हुआ है उसके

लिए झुक जाएँ? और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन्हें किताब दी गई थी, फिर उनपर दीर्घ समय बीत गया। अन्ततः उनके दिल कठोर हो गए और उनमें से अधिकांश अवज्ञाकारी ही रहे।'' (क़ुरआन, 57:16)

❑ मुझे नमाज़ क्यों पढ़नी चाहिए?

''उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गई है और नमाज़ का आयोजन करो। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है। और ख़ुदा का याद करना तो बहुत बड़ी चीज़ है। ख़ुदा जानता है जो कुछ तुम रचते और बनाते हो।'' (क़ुरआन, 29:45)

❑ माँगनेवालों से मेरा व्यवहार कैसा हो?

''और जो माँगता हो उसे न झिड़कना।'' (क़ुरआन, 93:10)

❑ जो कुछ मैं ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च करता हूँ उसका क्या होगा?

''निश्चय ही जो सदक़ा देनेवाले पुरुष और सदक़ा देनेवाली स्त्रियाँ हैं और उन्होंने ख़ुदा को अच्छा ऋण दिया, उसे उनके लिए कई गुना कर दिया जाएगा। और उनके लिए सम्मानित प्रतिदान है।'' (क़ुरआन, 57:18)

''यदि तुम ख़ुदा को अच्छा ऋण दो तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा। ख़ुदा बड़ा गुणग्राहक और सहनशील है।'' (क़ुरआन, 64:17)

❑ मुझे ख़ुदा के रास्ते में कितना ख़र्च करना चाहिए?

''और वे तुमसे पूछते हैं, कितना ख़र्च करें? कहो : जो आवश्यकता से अधिक हो।'' (क़ुरआन, 2:219)

❑ मुझे ख़ुदा के रास्ते में कहाँ ख़र्च करना चाहिए?

''वे पूछते हैं : 'कितना ख़र्च करें?' कहो : (पहले यह समझ लो कि) जो माल भी तुमने ख़र्च किया है, वह तो माँ-बाप, नातेदारों और अनाथों, और मुहताजों और मुसाफ़िरों के लिए ख़र्च हुआ है। और जो भलाई भी तुम करो, निस्संदेह ख़ुदा उसे भली-भाँति जान लेगा।'' (क़ुरआन, 2:216)

❑ क्या आख़िरत में मेरे शारीरिक अंगों का भी हिसाब लिया जाएगा?

"निस्संदेह कान और आँख और दिल इनमें से प्रत्येक के विषय में पूछा जाएगा।" (क़ुरआन, 17:36)

❑ क्या मैं बिना ज्ञान के कार्यवाई कर सकता हूँ?

"और जिस चीज़ का तुम्हें ज्ञान न हो उसके पीछे न लगो।" (क़ुरआन, 17:36)

"ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! यदि कोई अवज्ञाकारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो उसकी छानबीन कर लिया करो। कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अनजाने में तकलीफ़ और नुक़सान पहुँचा बैठो, फिर अपने किए पर पछताओ।" (क़ुरआन, 49:6)

❑ क्या मैं रिश्वत ले सकता हूँ?

"और आपस में तुम एक-दूसरे के माल को अवैध रूप से न खाओ, और न उन्हें हाकिमों के आगे ले जाओ कि (हक़ मारकर) लोगों के कुछ माल जानते-बूझते हड़प सको।" (क़ुरआन, 2:188)

❑ मुझे किस काम के लिए सिफ़ारिश करनी चाहिए और किस काम के लिए नहीं?

"जो कोई अच्छी सिफ़ारिश करेगा, उसे उसके कारण प्रतिदान मिलेगा और जो बुरी सिफ़ारिश करेगा तो उसके कारण उसका बोझ उसपर पड़कर रहेगा। ख़ुदा को तो हर चीज़ पर क़ाबू हासिल है।" (क़ुरआन, 4:85)

❑ जुआ और शराब को मैं क्या समझूँ?

"तुमसे शराब और जुए के विषय में पूछते हैं। कहो : उन दोनों चीज़ों से बड़ा गुनाह है, यद्यपि लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, परन्तु उनका गुनाह उनके फ़ायदे से कहीं बढ़कर है। और वे तुमसे पूछते हैं कितना ख़र्च करें? कहो : जो आवश्यकता से अधिक हो। इस प्रकार ख़ुदा दुनिया और आख़िरत के विषय में तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि तुम सोच-विचार करो।" (क़ुरआन, 2:219)

"ऐ ईमान लानेवालो! ये शराब और जुआ और देवस्थान और पाँसे तो गंदे शैतानी काम हैं। अतः तुम इनसे अलग रहो, ताकि तुम सफल रहो। शैतान तो बस यही चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता और द्वेष पैदा कर दे और तुम्हें ख़ुदा की याद से और नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम बाज़ न आओगे?" (क़ुरआन, 5:90-91)

❑ मुझे किस तरह गवाही देनी चाहिए?

"ऐ ईमान लानेवालो! ख़ुदा के लिए गवाही देते हुए इंसाफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान हो या निर्धन (जिसके विरुद्ध तुम्हें गवाही देनी पड़े) ख़ुदा को उनसे (तुमसे कहीं बढ़कर) निकटता का संबंध है, तो तुम अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो, क्योंकि यदि तुम हेर-फेर करोगे या कतराओगे, तो जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा को उसकी ख़बर रहेगी।"
(क़ुरआन, 4:135)

"और सत्य में असत्य का घाल-मेल न करो और जानते-बूझते सत्य को छिपाओ मत।" (क़ुरआन, 2:42)

"और यदि तुम सफ़र में हो और किसी लिखनेवाले को न पा सको, तो गिरवी रखकर मामला करो। फिर यदि तुममें से एक-दूसरे पर भरोसा करे, तो जिसपर भरोसा किया गया है उसे चाहिए कि वह यह सच कर दिखाए कि वह विश्वासपात्र है और ख़ुदा का, जो उसका रब है, डर रखे। और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाता है तो निश्चय ही उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो ख़ुदा उसे भली-भाँति जानता है।" (क़ुरआन, 2:283)

❑ मैं अपने क़र्ज़दार से कैसा व्यवहार रखूँ?

"और यदि कोई तंगी में हो तो हाथ खुलने तक मोहलत देनी होगी, और सदक़ा कर दो, (अर्थात् मूलधन भी न लो) तो यह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है, यदि तुम जान सको।" (क़ुरआन, 2:280)

❑ ख़ुदा का मुझपर सबसे बड़ा एहसान क्या है?

"वे तुमपर एहसान जताते हैं कि उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। कह दो : मुझपर अपने इस्लाम का एहसान न रखो, बल्कि यदि तुम सच्चे हो तो ख़ुदा ही तुमपर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें ईमान की राह दिखाई।"

(क़ुरआन, 49:17)

❑ अगर मैं सभी पैग़म्बरों को न मानूँ तो क्या होगा?

"जो लोग ख़ुदा और उसके रसूलों का इनकार करते हैं और चाहते हैं कि ख़ुदा और उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें, और कहते हैं कि 'हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते' और इस तरह वे चाहते हैं कि बीच की कोई राह अपनाएँ; वही लोग पक्के इनकार करनेवाले हैं और हमने इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।"

(क़ुरआन, 4:150-151)

❑ वे कौन-से काम हैं जिनके करने से मैं मुनाफ़िक़ बन सकता हूँ?

"मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से रोकते हैं और हाथों को बन्द किए रहते हैं। वे ख़ुदा को भूल बैठे तो उसने भी उन्हें भुला दिया। निश्चय ही मुनाफ़िक़ अवज्ञाकारी हैं।" (क़ुरआन, 9:67)

❑ दीन (इस्लाम) की बातें बताने में मुझे किस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए?

"धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात नासमझी की बात से अलग होकर स्पष्ट हो गई है। तो अब जो कोई बढ़े हुए सरकश को ठुकरा दे और ख़ुदा पर ईमान लाए, उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं। ख़ुदा सब कुछ सुनने, जाननेवाला है।" (क़ुरआन, 2:256)

❑ दूसरे धर्मों के माननेवालों के उपास्यों को क्या मुझे बुरा कहना चाहिए?

"ख़ुदा को छोड़कर जिन्हें ये पुकारते हैं, तुम लोग उनके प्रति अपशब्द

का प्रयोग न करो।" (क़ुरआन, 6:109)

❑ ख़ुदा मेरा साथी कब बनता है?

"वे ख़ुदा के मुक़ाबले में तुम्हारे कदापि कुछ काम नहीं आ सकते। निश्चय ही ज़ालिम लोग एक-दूसरे के साथी हैं और डर रखनेवालों का साथी ख़ुदा है।" (क़ुरआन, 45:19)

❑ ख़ुदा मेरा सहायक कब बनता है?

"निश्चय ही ख़ुदा उनके साथ है जो डर रखते हैं और जो उत्तमकार हैं।" (क़ुरआन, 16:128)

❑ यतीम (अनाथ) के साथ मेरा व्यवहार कैसा हो?

"अतः जो अनाथ हो उसे मत दबाना।" (क़ुरआन, 93:9)

"जो लोग अनाथों के माल अन्याय के साथ खाते हैं, वास्तव में वे अपने पेट आग से भरते हैं, और वे अवश्य भड़कती हुई आग में पड़ेंगे।" (क़ुरआन, 4:10)

❑ मेरा शत्रु कौन है?

"ऐ ईमान लानेवालो! तुम सब इस्लाम में दाख़िल हो जाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। वह तो तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।" (क़ुरआन, 2:182)

❑ क्या मुझे अच्छा या बुरा कोई काम करने की सम्पूर्ण आज़ादी है?

"जो लोग हमारी आयतों में कुटिलता की नीति अपनाते हैं वे हमसे छिपे हुए नहीं हैं, तो क्या जो व्यक्ति आग में डाला जाए वह अच्छा है या वह जो क़ियामत के दिन निश्चिन्त होकर आएगा? जो चाहो कर लो, तुम जो कुछ करते हो वह तो उसे देख ही रहा है।" (क़ुरआन, 41:40)

—: समाप्त :—